नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1

संकलन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Book Title: Nigeria Ki Lok Kathayen-1 (Folktales of Nigeria-1)
Cover Page picture : Nigerian Art
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifoktales@gmail.com
Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of Nigeria

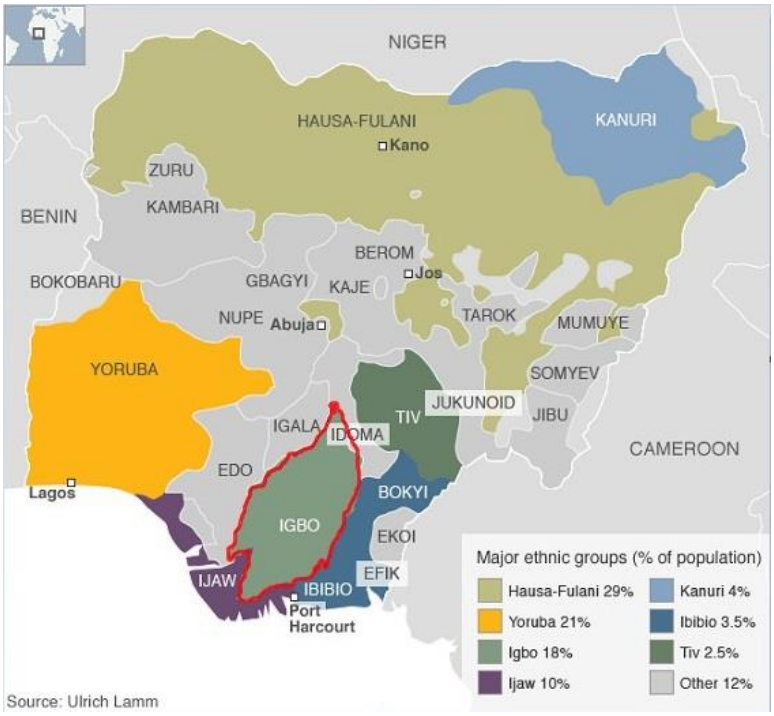

विंडसर, कैनेडा
2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1 7

1 एक उदास राजा और उसका उदास राज्य 9

2 खोया हुआ वारिस 14

3 लैचकी राजकुमार 19

4 बॉसुरी 32

5 जादुई काशीफल 41

6 लड़की, मेंढक और सरदार का बेटा 48

7 जुयिन गाटान फ़ारा 56

8 कुत्ता और शेर 64

9 मास्टर आदमी 66

10 चिन्ये 77

11 किसान का बेटा शिकारी 84

12 तीन भाई और खीर का बर्तन 90

13 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों 94

14 कीग्बो कीग्बा और आत्माऐं 98

15 चिड़िया ने इयावो का बच्चा चुराया 103

16 दो बहिनें और एक बूढ़ा 109

17 ओलोमुरोरो ने बच्चों को कैसे कमजोर किया 115

18 सूप की चुरायी हुई खुशबू 119

19 एक आदमी और उसकी कीमती गाय 123

20 टिड्डा और मेंढक 129

21 एक टैडपोल की दुखभरी कहानी 133

22 अक्लमन्द कुत्ता 137

23 बाज़ कभी चोरी क्यों नहीं करता 146

24 एक बैल और मक्खी 153

25 चीता और साही 156

26 मुर्गी और बाज़ 160
27 हाथी और मुर्गा 163
28 अजनबी और यात्री 168
29 बलि को स्वर्ग भेजना 174
30 ईगा चिड़िया और उसके बच्चे 177

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुॅचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहॅा तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1

नाइजीरिया देश अफ्रीका महाद्वीप के पश्चिम की ओर उसके दक्षिणी तट पर स्थित है। नाइजीरिया दुनियॉ का सातवॉ सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है और अफ्रीका का सबसे ज़्यादा जनसंख्या वाला देश है। यहॉ पेट्रोल बहुत होता है और यही इनकी आमदनी का मुख्य जरिया है।

यद्यपि नाइजीरिया में बहुत सारी जनजातियॉ हैं पर वहॉ की तीन जनजातियॉ सबसे ज़्यादा मशहूर हैं – योरुबा, फुलानी या हौसा और ईबो। यहॉ **500** से भी ज़्यादा भाषाऍ बोली और समझी जाती हैं पर योरुबा हौसा और ईबो भाषाऐं सबसे ज़्यादा बोली और समझी जाती हैं। पर टूटी फूटी अंग्रेजी बहुत सारे लोग बोलते और समझते हैं। इनकी अपनी कोई लिपि नहीं है ये अपनी भाषाऐं लिखने के लिये रोमन लिपि का इस्तेमाल करते हैं।

यहॉ की जनसॅख्या में ईसाई और मुसलमान करीब करीब आधे आधे हैं। नाइजीरिया में खाना बहुत तीखा बनता है और वहॉ के लोग अधिकतर पाम का तेल और मूॅगफली का तेल खाते है। ये लोग बीयर भी बहुत पीते हैं। यहॉ की स्टार बीयर बहुत अच्छी होती है और यह दूसरे देशों तक में भी बहुत मशहूर है। ये लोग फुटबाल और बास्केट बाल खूब खेलते हैं।

अफ्रीका के **54** देशों में से केवल पॉच देशों की ही लोक कथाऐं ज़्यादा मिलती हैं – नाइजीरिया, तनज़ानिया, दक्षिण अफ्रीका, और इथियोपिया। इसलिये इन देशों की लोक कथाऐं इन देशों के नाम से अलग से ही दी गयी हैं। इन सब देशों की अपनी अपनी लोक कथाऍ है और अपनी अपनी दंत कथाऐं हैं।

योरुबा दंत कथाओं के अनुसार दुनियॉ का पहला आदमी नाइजीरिया के एक शहर इले–इफे में पैदा हुआ था इसलिये दुनियॉ यहीं से शुरू होती है और यहॉ की सभ्यता दुनियॉ की हर सभ्यता से पुरानी है। उधर इथियोपिया में करीब साढ़े तीन मिलियन साल पुराना एक ढॉचा ऐसा मिला है जिससे ऐसा लगता कि दुनियॉ का सबसे पुराना आदमी यहीं था। मिश्र के पिरामिडों को कौन नहीं जानता कि वहॉ की सभ्यता कितनी पुरानी है।

इस महाद्वीप से हमने **550** से भी अधिक लोक कथाऐं इकट्ठी की हैं। वे सभी लोक कथाऐं कुछ "अफ्रीका की लोक कथाऐं", कुछ व्यक्तिगत देशों के, और कुछ व्यक्तिगत विषयों के अन्तर्गत दी जाती हैं। जैसे अफ्रीका के देशों में पश्चिमी अफ्रीका के खरगोश, इजापा कछुए और अनन्सी मकड़े की लोक कथाऐं बहुत सारी हैं और बहुत मशहूर हैं इसलिये उनको उनके नाम से ही प्रकाशित किया गया है। वे यहॉ शामिल नहीं की गयीं है।

यहॉ नाइजीरिया देश की लोक कथाओं का पहला संकलन प्रकाशित किया जा रहा है। आशा है कि ये लोक कथाऐं तुम सबको बहुत पसन्द आयेंगी और नाइजीरिया की संस्कृति और सभ्यता के बारे में कुछ जानकारी देंगी।

1 एक उदास राजा और उसका उदास राज्य[1]

एक समय की बात है कि एक दूर देश में एक राजा राज करता था। उस राजा के पत्नियॉ तो बहुत सारी थीं परन्तु उनसे उसके बच्चा कोई नहीं था। जब वह दूसरे देशों के राजाओं को देखता, जिनके कई बच्चे थे तो वह इस दुख से और भी अधिक उदास हो जाता कि उसके कोई बच्चा नहीं है।

एक दिन एक दूसरे राज्य से एक जादूगर उस राजा के राज्य में घूमने आया। उसने देखा कि उस राज्य के सभी लोग उदास हैं। बाजार खाली पड़े हैं। कहीं कोई हलचल और शोर शराबा नहीं है। एक आदमी उधर से गुजर रहा था वह भी उदास था।

जादूगर उस आदमी के पास गया और उससे राज्य की उदासी की वजह पूछी तो उस आदमी ने बताया कि सारे राज्य की उदासी की वजह केवल उनके राजा की उदासी है।

यह सुन कर जादूगर ने राजा से मिलने का निश्चय किया और राजमहल की तरफ चल दिया। राजमहल पहुॅचने पर जादूगर ने वहॉ भी चारों तरफ खामोशी और उदासी छायी पायी। वह जगह उस को इतनी ज़्यादा खामोश और उदास लगी कि वह कुछ डर सा गया।

[1] A Sad King and His Sad Kingdom – a folktale from Nigeria, Western Africa.

राजा के सामने आ कर उसने बड़े आदर से उसकी उदासी की वजह पूछी। राजा ने जवाब दिया — "मेरे पास जमीन जायदाद, धन दौलत, पत्नियॉ सभी कुछ है पर मेरे बच्चा कोई नहीं है जिसको मैं अपने मरने के बाद यह सब कुछ सौंप कर जा सकूॅ।"

जादूगर मुस्कुराया और बोला — "राजा साहब यह तो कोई समस्या न हुई। आप अपनी पत्नियों को बुलाइये।"

राजा ने अपनी सारी पत्नियों को वहॉ बुला लिया। जादूगर ने अपने जादू के थैले में से कुछ दवा सी निकाली और उसको एक बड़े बर्तन में पानी में डाला और राजा की सब पत्नियों से उसमें से थोड़ा थोड़ा पीने के लिये कहा। पत्नियों ने ऐसा ही किया।

फिर जादूगर ने राजा से कहा कि वह उनको अपने अपने घर भेज दें और तभी वापस लायें जब उनके बच्चे हो जायें। यह सुन कर राजा बहुत प्रसन्न हुआ और उसने जादूगर को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और बहुत सारी भेंटें दे कर विदा किया।

अगले दिन राजा की सारी पत्नियॉ खुशी खुशी बढ़िया बढ़िया कपड़े पहन कर अपना अपना सामान टोकरियों में बॉध कर महल के सामने खड़ीं थीं। पर उनमें से एक पत्नी कुछ अलग सी और दुखी सी खड़ी थी। उसके कपड़े भी पुराने थे और उसका सामान भी एक फटे से थैले में रखा था।

वह राजा की सबसे छोटी पत्नी थी। और वह किसी को फूटी ऑख नहीं भाती थी। जब सबसे बड़ी पत्नी को सुन्दर कपड़े बॉटने

को दिये गये तो उसने जलन के कारण सबसे छोटी पत्नी को उन कपड़ों में से कुछ भी नहीं दिया।

सभी पत्नियों को अपने अपने घर जाना था और उसकी कोई भी पत्नी उसके अपने राज्य की नहीं थी इसलिये सभी पत्नियॉ अपने मायके जाने में बहुत खुश थीं पर सबसे छोटी पत्नी का कोई घर ही नहीं था। वह बेचारी कहॉ जाये।

राजा ने अपनी सब पत्नियों को विदा किया और सब अपने अपने घर चलीं गयीं। सबसे छोटी पत्नी का कोई घर नहीं था सो वह एक जंगल में चली गयी। कुछ महीनों के बाद वहॉ एक गुफा में उसने एक बेटे को जन्म दिया।

बेटे को अपनी पीठ पर बॉध कर वह राजा के महल की तरफ चल दी।

रास्ते में एक नाला पड़ता था। उस नाले के आस पास उसे कुछ लोग दिखायी दिये। पास से देखने पर पता चला कि वे तो राजा की बड़ी पत्नियॉ थीं। वह जब उनके और पास आयी तब तो वह डर ही गयी क्योंकि उन सबकी कमर पर बच्चों की बजाय लकड़ी, पत्थर, लोहा आदि बॅधे हुए थे।

उसने अपने बच्चे को अपनी पीठ से उतारा और नाले में स्नान करने चली गयी। जब राजा की बड़ी पत्नियों ने छोटी पत्नी के बेटे को देखा तो वे जल भुन कर खाक हो गयीं।

उन्होंने उस बच्चे को उठाया और उसको नाले में डुबो दिया और फिर वे अपने लकड़ी, पत्थर और लोहे के टुकड़ों को कमर पर बॉधे राजा के महल में पहुॅचीं।

मगर सबसे छोटी पत्नी के पास तो कुछ भी नहीं था क्योंकि उसके बच्चे को तो राजा की दूसरी पत्नियों ने मार डाला था। जब राजा ने अपनी पत्नियों की लायी हुई चीज़ों को देखा तो वह दुख के गहरे सागर में डूब गया।

कुछ समय बाद ही एक ताड़ी[2] निकालने वाला उस नाले पर पानी भरने आया तो वहॉ उसने किसी के चिल्लाने की आवाज सुनी। उसने इधर उधर देखा पर उसे कोई दिखायी नहीं दिया। ध्यान से सुनने पर उसे लगा कि आवाज तो नाले के अन्दर से आ रही थी।

उसने सुना — "मैं यहॉ की जल परी हूॅ। आप सब सुनें। अगर कोई इस बच्चे को सात दिनों के अन्दर अन्दर लेने नहीं आया तो मैं इसको मछली में बदल दूॅगी।"

ताड़ी वाला राजा के पास भागा भागा गया। उसने राजा को सारी कहानी बतायी तो राजा भी नाले के पास भागा भागा आया और वहॉ जल परी को कुछ भेंटें चढ़ाने के बाद उस बच्चे को उससे ले लिया। अब जब बच्चा मिल गया था तो उसकी मॉ को ढूॅढना जरूरी था।

[2] Translated for the words "Palm wine" which is made of palm tree juice.

राजा ने मुनादी पिटवा दी कि राज्य की हर स्त्री अपना सबसे अच्छा पकवान बना कर आज से सातवें दिन बाजार के चौराहे पर लायेगी।

सो सातवें दिन सभी स्त्रियॉ अपना अपना सबसे अच्छा पकवान बना कर लायीं और गॉव के चौराहे पर ला कर रख दिया। राजा ने बच्चे को छोड़ दिया और उससे हर स्त्री के पास से गुजरने को कहा।

जब बच्चा जा रहा था तो किसी ने उसको पुचकारा, किसी ने उसका हाथ पकड़ा, किसी ने उसे अपनी ओर खींचा, परन्तु वह सबको छोड़ता हुआ एक और ही स्त्री की तरफ चल दिया जो एक कूड़े के ढेर के पास बैठी थी। यह राजा की सबसे छोटी पत्नी थी।

राजा ने जब अपनी सबसे छोटी पत्नी को देखा तो वह बहुत खुश हुआ। सो यह लड़का तो उसका अपना ही बेटा निकला।

उसने अपनी सब पत्नियों को भगा दिया और अब वह अपने खुश राज्य में खुशी खुशी अपनी सबसे छोटी पत्नी के साथ रहने लगा।

2 खोया हुआ वारिस[3]

बहुत पुरानी बात है जब अफ्रीका के नाइजीरिया देश में एक राजा राज करता था। उसके तीन पत्नियॉ थीं पर उनमें से किसी के कोई बच्चा नहीं था। उसको एक बेटे की जरूरत थी जो उसके बाद उसका राज काज देख सके।

वह इसके लिये बहुत परेशान था सो उसने एक इफा पुजारी[4] को बुलाया और उसको अपनी परेशानी बतायी। साथ में यह भी कहा कि अब समय कम था सो उसे जो कुछ करना है वह वह जल्दी करे।

इफा पुजारी अपना तख्ता और अपनी कौड़ियॉ[5] ले कर आया जिससे उसको राजा की समस्या का हल ढूँढना था। उसने अपनी कौड़ियों की सहायता से राजा को बताया कि उसके एक लड़का होगा पर किस पत्नी से होगा यह उसने नहीं बताया।

उसने यह भी कहा कि वह एक काढ़ा तैयार करेगा जिसको पीने से उसकी तीनों पत्नियों को बच्चे की आशा हो जायेगी। थोड़ी

[3] The Lost Heir – a folktale from Nigeria, West Africa. Taken from the Web Site : http://allfolktales.com/wafrica/lost_heir.php

[4] Ifa Priest – a kind of Priest among the Ifa Tribe

[5] Cowrie shells. See their picture above.

देर बाद वह एक काढ़ा लिये लौटा जिसको राजा की तीनों पत्नियों को पीना था।

राजा की दोनों बड़ी पत्नियॉ राजा की सबसे छोटी पत्नी से बहुत जलती थीं और उसके साथ बहुत बुरा बर्ताव करती थीं सो उन्होंने काढ़े का वह बर्तन केवल अपने लिये रख लिया।

उन्होंने सोचा कि यदि छोटी पत्नी उस काढ़े को नहीं पियेगी तो उसको बेटा नहीं होगा। दोनों बड़ी पत्नियों ने काढ़ा बॉट कर पी लिया और खाली बर्तन साफ करने के लिये रख दिया।

जब छोटी पत्नी ने काढ़े का बर्तन खाली देखा तो वह बहुत दुखी हुई और यह सोच कर रोने लगी कि उसने तो मॉ बनने का मौका ही खो दिया।

फिर यह सोच कर कि शायद कुछ हो जाये वह काढ़े वाले बर्तन में से जो कुछ थोड़ा बहुत काढ़ा उसमें चिपका हुआ था उसी को चाटने लगी। उसने वह बर्तन चाट चाट कर साफ कर दिया।

बहुत जल्दी ही राजा की तीनों पत्नियों को बच्चे की आशा हो गयी। समय आने पर राजा की दोनों बड़ी पत्नियों ने दो लड़कियों को जन्म दिया। अब उन दोनों का ध्यान राजा की छोटी पत्नी पर लग गया कि हो सकता है कि वही लड़के को जन्म दे।

जब उसको बच्चा होने वाला था तो दोनों बड़ी पत्नियॉ उसके पास ही थीं। छोटी पत्नी ने एक लड़के को जन्म दिया। यह देखते ही दोनों बड़ी पत्नियों ने उस लड़के को तो वहॉ से हटा लिया और

एक पत्थर ला कर रख दिया। फिर दोनों ने शोर मचा दिया कि राजा की छोटी पत्नी ने तो एक पत्थर को जन्म दिया है।

राजा ने जब यह सुना तो उसने छोटी पत्नी को अपने घर से बाहर निकाल दिया। वह बेचारी गॉव के बाहर जा कर रहने लगी।

इस बीच में उन दोनों ने लड़के को एक सूती कपड़े में लपेटा और जंगल में एक पेड़ के नीचे छोड़ दिया। एक दवा बनाने वाला जंगल में दवा बनाने के लिये पत्ते जड़ें आदि इकट्ठा कर रहा था। उसने इस लड़के देखा तो उसको उठा कर अपने घर ले गया और अपने बेटे की तरह से पालने पोसने लगा।

कई साल बाद राजा मर गया बिना किसी वारिस के। अब राजा किसे बनाया जाये? क्योंकि कोई ऐसा आदमी दिखायी नहीं देता था जिसको वे राजा बना सकें।

सो इफा पुजारी को फिर से बुलाया गया। इफा पुजारी ने फिर से अपनी कौड़ियॉ फेंक कर बताया कि राजा का वारिस तो पैदा हो चुका है और एक घने जंगल में एक दवा बनाने वाले के घर में मौजूद है।

सो कुछ आदमी उस बच्चे को लाने के लिये उस दवा बनाने वाले आदमी के पास गये और उस बच्चे को वहॉ से ले आये और उसको राजा बनाने के लिये सोचने लगे पर उस बच्चे के जन्म के बारे में तो कुछ पता ही नहीं था कि वह किसका बेटा था।

इफा पुजारी ने फिर बताया कि उसकी मॉ भी उसी गॉव में रहती थी। पर वह थी कौन? गॉव की हर औरत यह सोचती कि वह उस होने वाले राजा की मॉ है पर ऐसा तो मुमकिन नहीं था कि हर औरत उस बच्चे की मॉ हो सकती।

इफा पुजारी ने फिर एक तरकीब सुझायी कि गॉव की हर औरत मॉस बना कर गॉव के चौराहे पर लायेगी। होने वाला राजा उन सब बर्तनों में से मॉस को चखेगा और उसी से वह अपनी मॉ को पहचानेगा।

यह सुन कर सब औरतों ने अपने अपने घर में सबसे ज़्यादा बढ़िया तरीके से मॉस पकाना शुरू कर दिया जैसा पहले कभी उन्होंने अपनी सारी ज़िन्दगी में नहीं पकाया था। तय किये गये दिन वे सभी अपना अपना पका मॉस ले कर गॉव के चौराहे पर इकट्ठा हुईं।

सबके बर्तनों में मॉस को स्वाददार बनाने के लिये सैंकड़ों किस्म के मसाले पड़े हुए थे पर एक बर्तन उनमें ऐसा भी था जिसमें केवल सब्जियॉ ही पड़ी थीं।

क्योंकि वह औरत गॉव के बाहर रहती थी और बहुत गरीब थी। क्योंकि वह खुद भी जंगल में मिलने वाले फलों और जड़ों पर गुजारा करती थी सो उसने केवल जंगल से मिलने वाली सब्जियॉ ही पका दी थीं।

गॉव के चौराहे पर बर्तनों की मीलों लम्बी लाइन लगी थी और हर बर्तन में से खूब खुशबुऐं उड़ रही थीं। होने वाला राजा आया

और उसने सब बर्तनों में से खाना चखना शुरू किया। सुबह से शाम हो गयी। आखिर वह उस आखिरी बर्तन के पास पहुँचा जहाँ वह गॉव के बाहर रहने वाली औरत बैठी हुई थी।

उसने उसके बर्तन में रखी सब्जी चखी और खुशी से नाच उठा कि वही उसकी मॉ थी। इस तरह उस निकाली गयी रानी ने बहुत सालों बाद फिर से राजमहल में अपनी जगह पा ली थी।

3 लैचकी राजकुमार[6]

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में बहुत ही अमीर और ताकतवर राजा रहता था। वह इतना ताकतवर था कि पड़ोस के गॉव के राजा भी उसको टैक्स देते थे। इसके बदले में वह उनकी उनके दुश्मनों से रक्षा करता था।

इस राजा के पास सब कुछ था जो वह चाहता था पर फिर भी उसके पास एक चीज़ नहीं थी जिसकी उसको बहुत इच्छा थी और वह था एक बेटा।

जैसा कि इस देश में रिवाज था राजा के चार पत्नियॉ थीं। हालॉकि उन सबसे उसके पन्द्रह बच्चे थे पर वे सब लड़कियॉ थीं, लड़का कोई नहीं।

हालॉकि ये चारों पत्नियॉ उसकी रिवाज के अनुसार थीं पर फिर भी वह अपनी पहली पत्नी के कहने से अपनी मैबू[7] नाम की आखिरी पत्नी से बहुत ही बुरा बर्ताव करता था।

उसने अपनी जमीन पर अपने महल के पास अपनी तीनों पत्नियों के लिये बहुत सुन्दर सुन्दर घर बनवाये। पर अपनी चौथी पत्नी के लिये उसने एक झोंपड़ा बनवाया जो था तो उसकी अपनी जमीन पर ही पर उसके महल से सबसे ज़्यादा दूरी पर था।

---

[6] The Latchkey Prince – a folktale from Nigeria, Africa.

[7] Mebu – the name of the King's fourth queen

जब भी वह अपनी पत्नियों के लिये बाहर से चीज़ें ले कर आता तो वह हमेशा अपनी तीन पत्नियों को ही याद रखता। उसकी चौथी पत्नी राजा की जमीन पर इतनी गरीब थी कि उसके पास भर पेट खाना भी नहीं था।

राजा ने बेटा पाने के लिये बहुत कुछ किया पर सब बेकार गया। वहॉ के रीति रिवाजों के अनुसार उसकी कोई भी लड़की उस गॉव की बागडोर अपने हाथ में नहीं ले सकती थी, यानी कोई भी लड़की उसकी वारिस नहीं बन सकती थी।

आखीर में राजा अपने पुरखों के मन्दिर के बड़े पुजारी के पास गया और उससे अपना दुखड़ा रोया। वहॉ उसने राजा को उसकी चारों पत्नियों के लिये एक खास किस्म के पाम के चार बीज[8] दिये।

उसने राजा से कहा — "तुम्हारी हर पत्नी इस बीज को तोड़े पर बजाय इसकी गिरी खाने के वे इनके छिलके खाये और इसकी गिरी फेंक दें।"

राजा बोला — "मैं उनको कह दूँगा।" और अपने महल को चला गया।

जब वह अपने घर पहुँचा तो उसने वे पाम के बीज अपनी तीनों पत्नियों को दे दिये और बड़े पुजारी जी का बताया हुआ उसको

[8] Palm Kernels – edible seed of the oil palm tree. See their picture above.

खाने का तरीका भी बता दिया। चौथा बीज उसने नदी में फेंक दिया।

राजा की तीनों पत्नियॉ बहुत घमंडी थीं। पहले तो वे यह ही नहीं समझ सकीं कि कोई पाम की गिरी खायेगा ही क्यों? क्योंकि वह तो गरीब लोगों का खास खाना है फिर उसके छिलके को तो खाने का तो सवाल ही पैदा नहीं होता।

एक ने कहा — "मैं समुद्र में घुस कर यह शिकायत कैसे कर सकती हूॅ कि साबुन मेरी ऑखों में लग रहा है?"

दूसरी बोली — "मैं पाम के बीज का छिलका कैसे खा सकती हूॅ? मैंने तो कभी पाम की गिरी भी नहीं खायी।"

तीसरी बोली — "मैंने ऐसी बेकार की बात तो कभी नहीं सुनी कि पाम की गिरी फेंक दो और उसका छिलका खा लो।"

सो उन सबने अपने अपने पाम के बीज तोड़े और उनके छिलके फेंक दिये और राजा की बात रखने के लिये उनकी गिरी खा लीं।

एक बोली "उफ़"। दूसरी बोली "फू।" और उसने उस गिरी का छूॅछ थूक दिया। तीसरी बोली "मैं सोच सकती हूॅ कि इस बीज का छिलका कैसा होगा।" कह कर उसने पाम की गिरी तो किसी तरह से खा ली पर उसका छिलका फेंक दिया।

राजा का वह नौकर जिसको उसने अपनी तीनों पत्नियों को यह सब कहने को लिये भेजा था राजा का मेबू के साथ का बर्ताव बिल्कुल पसन्द नहीं करता था। सो जब भी उसको मौका लगता वह

मेबू के लिये महल से छिपा कर खाना निकाल कर ले जाता और उसको दे देता।

जब उसने देखा कि राजा की दूसरी पत्नियों ने उन पाम के बीजों का क्या किया तो उसने पाम के बीज के वे छिलके उठाये और उनको मेबू को दे कर बोला — "ये छिलके तुमको खाने ही हैं मेबू। मुझे अफसोस है कि आज मैं तुम्हारे लिये क्या ले कर आया पर आज मैं तुम्हारे लिये बस यही ला सका।"

मेबू बोली — "कोई बात नहीं। तुम तो मेरा हमेशा ही बहुत ख्याल रखते हो। तुम तो मेरे ची[9] की तरह हो।

इसके अलावा एक पिता जो याम[10] अपनी बेटी के हाथ की हथेली पर रखता है वह उसको कभी जलाता नहीं।" मेबू ने पाम के बीज के वे छिलके उस नौकर के हाथ से ले कर खा लिये।

पाम के वे बीज अपनी पत्नियों को देने के बाद राजा को यकीन था कि उसकी तीनों प्रिय पत्नियॉ लड़कों को जरूर जन्म देंगी।

उसने यह भी निश्चय कर लिया था कि उन लड़कों के जन्म के बाद जो कोई भी लड़की उसके घर में जन्म लेगी वह उसको घर से बाहर निकाल देगा।

[9] Chi – their personal god

[10] Yam is a tuber like vegetable. It is a staple food of West African countries, especially of Nigeria. See its picture above.

कुछ दिन बाद राजा की उन तीनों प्रिय पत्नियों ने एक एक कर के तीन लड़कियों को जन्म दिया तो उसने उनको तुरन्त ही बाहर फेंक दिया गया।

पर जब मेबू की बारी आयी तो राजा की बड़ी पत्नी उसकी दाई बना कर भेजी गयी। राजा की बड़ी पत्नी रानी ऐजो या मीनी[11] के नाम से जानी जाती थी। वह अपने नाम जैसी थी। मेबू को जब बच्चा हुआ तो वह एक लड़का था।

यह देखते ही ऐजो ने उस लड़के को तो नदी में फेंक दिया और मेबू से कहा कि उसने एक मरी हुई बच्ची को जन्म दिया है। मेबू बेचारी और क्या करती वह अकेली ही अपनी झोंपड़ी में चली गयी और अपनी बदकिस्मती पर रोती रही।

पर वह भगवान जो बच्चों की देखभाल करता है जरूर ही उस भगवान से कोई दूसरा भगवान होता होगा जो बड़े लोगों की देखभाल करता है।

क्योंकि उस भगवान ने उस बच्चे को नदी में बजाय डुबोने के तैरा दिया और वह नदी के बहाव के साथ नदी में नीचे की तरफ बहता चला गया।

नीचे नदी में एक अकेली बूढ़ी स्त्री अपने कपड़े धो रही थी। वहॉ जा कर वह बच्चा उसकी टॉगों में अटक गया। उसको लगा कि शायद कोई मछली आ कर उसकी टॉगों से लिपट गयी है।

[11] Ajo or Meany – the name

सो जैसे ही उसने अपना मुँह फिरा कर अपने बड़े चाकू[12] को उठाने के लिये हाथ बढ़ाया ताकि वह उस मछली को मार सके तो उसने देखा कि वह तो मछली नहीं एक बच्चा था।

वह आश्चर्य और खुशी से चिल्लायी — "ओह बच्चा?" फिर तुरन्त ही उसके मुँह से निकला "किसका बच्चा है यह और इसकी माँ कहाँ होगी?"

उसने उस बच्चे को उठा लिया और उसे पानी पिलाया। उसने सोचा — "लगता है किसी ने इसको राजा के कानून के डर से नदी में फेंक दिया है।"

पहले तो वह बहुत देर तक उस बच्चे की माँ का इन्तजार करती रही कि अगर वह उसको ढूँढ रही हो तो आ कर उसे ले जाये पर जब उसे लेने के लिये काफी देर तक कोई नहीं आया तो वह उसको अपने घर ले गयी और उसको पालने पोसने लगी।

घर जाते समय वह कहने लगी — "आखिर भगवान ने आज मेरी प्रार्थना सुन ही ली।"

वह बच्चा बड़ा हो कर अच्छा सुन्दर लड़का हो गया। वह बुढ़िया उस बच्चे को बहुत प्यार करती थी पर साथ में इस बात के लिये चिन्ता भी करती थी कि जरूर ही कभी कोई आयेगा और उसको ले जायेगा।

[12] Translated for the word "Matchet" or "Cutlass" – a long blade knife or short blade sword mostly used for cutting grass or trees etc. See its picture above.

इसलिये जब भी कभी वह बाहर जाती तो वह उसको घर में ताले में बन्द कर जाती और इस बात का ध्यान रखती कि उसके लिये घर में खाना और पानी काफी रहे। इस तरह वह छोड़ा हुआ बच्चा एक सुन्दर लैचकी बच्चे के रूप में बढ़ने लगा।

एक दिन राजा का कुत्ता एक गिलहरी का पीछा कर रहा था। पीछा करते करते वह उसी मकान के पीछे की तरफ आ गया जहॉ यह लड़का रहता था।

इतने में वह गिलहरी उस कुत्ते की ऑखों से ओझल हो गयी। सो वह कुत्ता इधर उधर सूँघता हुआ घूमने लगा और उस बुढ़िया के मकान की बॉस की चहारदीवारी लॉघ कर अन्दर चला गया। वह कुत्ता वहॉ तक आ गया जहॉ वह लड़का खाना खा रहा था।

लड़के ने उसे पुकारा — "डौगी डौगी। यहॉ आ।"

और उसको थोड़ा सा खाना और हड्डी खाने के लिये दी। फिर उसने कुत्ते को थपथपाया। थोड़ी देर में वह कुत्ता वापस जाने लगा तो उस लड़के ने गाया —

ओ राजा के कुत्ते तूने मुझे ढूँढ लिया, ला ला ला ला
मेरे पिता ने यह कानून बनाया, ला ला ला ला
लड़कियों को फेंक देना चाहिये, ला ला ला ला
लड़कों को पालना चाहिये, ला ला ला ला
उसने मुझे पैदा किया और फेंक दिया, ला ला ला ला
राजा बहुत नीच है, ला ला ला ला
राजा की पत्नी भी नीच है, ला ला ला ला
राजा का नौकर मेरा भगवान है, ला ला ला ला

जब उसका गाना खत्म हो गया तो कुत्ता वहॉ से अपने मालिक के पास भाग गया और वहॉ जा कर बहुत ज़ोर ज़ोर से अपनी पूँछ हिलाने लगा पर राजा उसकी पूँछ हिलाने का मतलब न समझ सका और उसने उसको केवल थपथपा कर बाहर भेज दिया।

अगले दिन वह कुत्ता फिर से उस लड़के के पास गया। अबकी बार कुत्ते को वह लड़का अपना दोस्त लग रहा था। पहले की तरह से वे दोनों खूब खेले और उन्होंने साथ साथ खाना खाया।

फिर लड़के ने उसको थपथपाया और जब वह कुत्ता अपने घर जाने लगा तो लड़के ने उस कुत्ते के लिये अपना वही गाना फिर से गाया —

ओ राजा के कुत्ते तूने मुझे ढूँढ लिया, ला ला ला ला
मेरे पिता ने यह कानून बनाया, ला ला ला ला
लड़कियों को फेंक देना चाहिये, ला ला ला ला
लड़कों को पालना चाहिये, ला ला ला ला
उसने मुझे पैदा किया और फेंक दिया, ला ला ला ला
राजा बहुत नीच है, ला ला ला ला
राजा की पत्नी भी नीच है, ला ला ला ला
राजा का नौकर मेरा भगवान है, ला ला ला ला

कुत्ता फिर से अपने घर दौड़ गया और फिर से अपने मालिक के पास जा कर अपनी पूँछ ज़ोर ज़ोर से हिलाने लगा।

अबकी बार राजा बोला — "क्या बात है कि तुम मेरे पास रोज इस समय आते हो और अपनी पूँछ ज़ोर ज़ोर से हिलाते हो?"

कुत्ते ने एक दोस्ती की सी शक्ल दिखायी और बोला — "म्म, म्म, म्म, म्म। वुफ़, वुफ़।" उसने राजा की तरफ देखा और फिर दरवाजे की तरफ बढ़ गया। वहॉ वह राजा के आने का इन्तजार करने लगा।

राजा उठते हुए बोला – "ठीक है ठीक है। चलो दिखाओ मुझे कि तुम मुझे क्या दिखाना चाहते हो और क्या पा कर तुम इतने खुश हो।"

राजा कुत्ते के पीछे पीछे चलते चलते उस लड़के के घर तक आगया। जब उसने वह सुन्दर लड़का चहारदीवारी के भीतर देखा वह तो चुपचाप उसको खड़ा देखता ही रह गया।

लड़के के नाक नक्श राजा को इतने अच्छे लगे कि वह उसको तुरन्त ही चाहने लगा। वह लड़का अपने पिता की हूबहू नकल था। राजा को लगा कि जैसे उसमें वह अपना छोटा रूप देख रहा हो।

उसने निश्चय कर लिया कि वह यह जरूर मालूम करेगा कि उस लड़के के मॉ बाप कौन हैं और फिर वह उनको अपने घर बुलाना चाहेगा।

सो वह लड़के से बोला — "अगर तुम्हारे माता पिता मुझे तुम्हारे पास आने देंगे और तुम्हें मेरे बेटे की तरह से मानने देंगे जो मेरा कभी नहीं था तो मुझे बहुत सन्तोष मिलेगा।"

जब वह उस लड़के से यह बात कर रहा था कि उसी समय वह बुढ़िया घर वापस आ गयी। आपस में काफी देर तक बात करने के

बाद उस बुढ़िया ने जो भी कुछ उसे उस लड़के के बारे में मालूम था राजा को वह सब बता दिया।

कि किस तरह उसने उस लड़के को नदी में पाया और फिर कैसे उसको इतना बड़ा किया। फिर कैसे किसी पंडित[13] ने उसको यह भी बताया था वह एक राजा का बेटा था – हॉ, एक लैचकी राजकुमार।

राजा ने पूछा — "मेरी कौन सी पत्नी इस बच्चे की मॉ है?"

बुढ़िया बोली — "मैं नहीं जानती पर इस बात को जानने का एक तरीका है।"

राजा बोला — "तुम मुझे वह तरीका बताओ और उसकी कीमत बताओ। मैं तुमको दूँगा।"

बुढ़िया बोली — "राजा साहब, इसमें पैसे की बात नहीं है इसमें तो प्यार की बात है और प्यार की हमेशा जीत होती है।"

जैसे ही यह बात राजा की पत्नियों के पास पहुँची कि राजा का खोया हुआ बेटा मिल गया है तो राजा की हर पत्नी यह कहने लगी कि वह मेरा बेटा है और उसको अपना बेटा बनाना चाहने लगी।

पर उसकी असली मॉ को पहचानने का एक ही तरीका था – उसके लिये खाना बनाना। जिस किसी रानी के हाथ का बनाया खाना वह लड़का खा लेगा उसी से राजा यह निश्चय करेगा कि उसकी मॉ उसकी कौन सी पत्नी है।

[13] Translated for the word "Diviner" – who know the things through divine means

इस काम के लिय एक दिन निश्चित किया गया। राजा ने अपनी तीनों प्रिय पत्नियों को कुछ पैसे दिये और खाने में कोई भी सबसे अच्छी चीज़ जो भी वे जानती थीं बनाने के लिये कहा।

हर बार की तरह से उसने अपनी चौथी पत्नी मेबू को कुछ नहीं दिया पर उससे भी कुछ बनाने के लिये कहा।

तीनों पत्नियों ने अपना खाना बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। उन्होंने बहुत पैसा लगा कर बहुत ही स्वादिष्ट खाना बनाया और उसको सुन्दर सी मेज पर सजाया।

जब कि मेबू ने अपनी झोंपड़ी के आस पास में लगी सब्जी तोड़ी और राजा के कूड़े से जो कुछ भी उसको मिला उस सबको मिला कर एक अजीब सा खाना बनाया। उस खाने को उसने राजा के घुड़साल के पास की राजा की जमीन पर बिना किसी मेज के घास पर ही रख दिया।

राजा ने अपने बेटे को एक राजकुमार के लायक अच्छे शाही कपड़े पहनाये क्योंकि वह तो अब युवराज था और फिर उसको एक राजकुमार की हैसियत से महल से बाहर मैदान में निकाला। उसकी शान सारे गॉव को लुभा रही थी।

जब वह पहले खाने की तरफ आया तो हर एक के मन में एक उत्सुकता जागी कि वह किसका खाना खायेगा। उसने उस खाने को देखा और आगे चल दिया। उसने दूसरी मेंजें भी खाना बिना चखे ही पार की।

फिर वह अपने पिता से बोला — "राजा साहब, आपकी तो चार पत्नियॉ हैं पर मुझे तो आपके राजकुमार के लिये यहॉ केवल तीन मेजें ही दिखायी दे रही हैं।"

यह सुन कर नौकरों ने राजा की घुड़साल की तरफ इशारा किया जहॉ मेबू ने अपना खाना लगा कर रखा था। राजकुमार तब उस घुड़साल की तरफ बढ़ा और बिना किसी हिचक के उसने वह सारा खाना खा लिया जो मेबू ने वहॉ सजा कर रखा था।

सारे लोग खुशी से भर गये। पर वे यह देख कर बहुत ही आश्चर्यचकित हुए कि वह लड़का राजा की एक ऐसी पत्नी से था जिसको राजा ने छोड़ रखा था।

ऐसी पत्नी ने उनके होने वाले राजा को जन्म दिया था। राजा ने उस लड़के को उसके केवल जन्म के हालात की वजह से ही खो दिया था।

इसके बाद राजा ने अपनी तीनों पत्नियों को तलाक दे दिया और केवल मेबू को ही अपनी पत्नी बना कर रखा। उसने फिर एक कानून बना दिया कि उसके देश में कोई भी आदमी एक बार में एक से ज़्यादा पत्नी नहीं रखेगा।

राजा ने अपनी नौकरानियों से कहा कि वे मेबू को महल में ले जायें और उसे उसके राज्य का सबसे अच्छा तेल लगा कर नहलायें धुलायें। अच्छे से अच्छे शाही कपड़े पहनायें। अच्छे से अच्छी

खुशबू लगायें। उसके सिर पर रानी के लायक ताज रखें क्योंकि वह अब हमेशा के लिये उसकी सच्ची पत्नी हो जायेगी।

फिर उसने मेबू को गले से लगाया और उसकी नौकरानियॉ मेबू को महल के अन्दर ले गयीं।

उस दिन के बाद से राजा और मेबू खुशी खुशी रहने लगे। राजा के मरने के बाद लैचकी राजकुमार जिसको उसकी बड़ी रानियों ने मरा हुआ घोषित कर के फेंक दिया था राजा बन गया और उसने उस देश पर बहुत दिनों तक राज किया।

4 बॉसुरी[14]

बहुत साल पुरानी बात है एक आदमी अपनी दो पत्नियों के साथ रहता था। उसकी बड़ी पत्नी के तो कई बच्चे थे परन्तु छोटी पत्नी के केवल एक ही बेटा था।

एक दिन वह आदमी अपने सारे परिवार के साथ खेत पर गया। वहॉ सारे दिन सबने मिल कर काम किया फिर शाम को अपने अपने चाकू हल टोकरियॉ आदि इकट्ठी कीं और जल्दी जल्दी अपने घर चल दिये।

सात जंगल और सात नदियॉ पार कर वे सब अपने घर आये। अचानक उसकी छोटी पत्नी का बेटा बोला कि वह अपनी बॉसुरी तो खेत पर ही भूल आया था और अब वह उसको लाने के लिये अभी अभी वापस खेत पर जाना चाहता था।

उसकी मॉ ने रो कर उससे कहा भी कि इस समय रात को वह बॉसुरी लेने वहॉ न जाये। वह अगले दिन सुबह होते ही उसको नयी बॉसुरी दिला देगी।

पर वह तो अड़ गया कि उसको तो वही बॉसुरी चाहिये क्योंकि वह बॉसुरी उसकी अपनी बनायी हुई थी और वह उस बॉसुरी को किसी भी कीमत पर बदलना नहीं चाहता था।

[14] The Flute – a folktale from Nigeria, Western Africa

उसके पिता ने भी उसको बहुत समझाया और मना किया कि इस समय उसको खेत पर अपनी बॉसुरी लेने नहीं जाना चाहिये पर वह नहीं माना। आखिरकार उसके माता पिता ने उसको जाने तो दिया पर उससे होशियारी से जाने के लिये कहा।

जब वह खेत पर पहुँचा तो रात हो चुकी थी। वहॉ उसे भूत दिखायी दिये क्योंकि यह समय वहॉ भूतों के काम करने का था।

उन्होंने जब वहॉ एक बच्चे को देखा तो वे बहुत गुस्सा हुए। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहॉ इस समय किसने भेजा है और तू यहॉ क्यों आया है?"

बेचारा बच्चा डर के मारे वहीं की वहीं खड़ा रह गया। बड़ी मुश्किल से उसके मुँह से निकला — "दिन में मेरे माता पिता यहॉ खेत पर काम करने आये थे। उस समय मैं यहॉ अपनी बॉसुरी भूल गया था अभी मैं वही लेने आया हूँ।"

भूतों के नेता ने पूछा कि अगर उसे उसकी बॉसुरी दिखायी जाये तो क्या वह उसे पहचान सकता है?

लड़का खुशी से बोला — "हॉ हॉ, क्यों नहीं। वह मेरी बॉसुरी है। मैं उसे पहचानूँगा क्यों नहीं।"

भूतों के नेता ने खाल के थैले में से एक सोने की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का बोला — "नहीं नहीं, यह मेरी बॉसुरी नहीं है।"

भूतों के नेता ने एक बार फिर उस चमडे के थैले में हाथ डाला और अबकी बार उसने उसमें से एक चॉदी की बॉसुरी निकाली और उसको दिखा कर उस लड़के से पूछा कि क्या वह थी उसकी बॉसुरी?

लड़का उदास हो कर बोला — "नहीं, यह बॉसुरी भी मेरी नहीं है।"

अबकी बार भूतों के नेता ने अपने थैले में से एक बॉस की बॉसुरी निकाली और उसको लड़के को दिखा कर पूछा — "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

लड़का उस बॉस की बॉसुरी को देखते ही खुशी से चिल्ला पड़ा — "हॉ, यही है मेरी बॉसुरी।"

भूतों का नेता बोला — "अगर यही है तेरी बॉसुरी तो इसे बजा कर दिखा न।"

लड़के ने भूतों के नेता के हाथ से बॉसुरी ले ली और उसे बजाना शुरू किया।

भूत उस लड़के की बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए। भूतों का नेता बोला — "बच्चे, हम तेरी बॉसुरी सुन कर बहुत खुश हुए इसलिये हम तेरे माता पिता को एक भेंट देना चाहते हैं।"

ऐसा कह कर उसने दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे दो बर्तन लाने के लिये कहा। दोनों भूत तुरन्त ही दो बर्तन ले आये। भूतों के नेता ने उस लड़के से एक बर्तन लेने के लिये कहा।

बर्तन दोनों एक से थे, दोनों बन्द थे पर दोनों में से एक छोटा था और एक बड़ा। लड़के ने उनमें से छोटा वाला बर्तन उठा लिया।

भूतों के नेता ने कहा — "खुश रह बच्चे। जब तू घर पहुँच जाये तो अपने माता पिता के सामने ही इस बर्तन को तोड़ना।" लड़के ने भूतों के नेता का सिर झुका कर धन्यवाद किया और अपने घर चल पड़ा।

घर पहुँच कर लड़के ने वैसा ही किया जैसा कि भूतों के नेता ने उससे करने के लिये कहा था। उसने अपने माता पिता को बुलाया और सबसे पहले तो उसने अपने माता पिता को खेत पर जो कुछ भी हुआ था वह बताया और फिर उनके सामने ही उसने उस बर्तन को तोड़ दिया।

तुरन्त ही उनके घर का ऑगन अच्छी अच्छी चीज़ों से भर गया जैसे सोना, चॉदी, कॉसा, अच्छे अच्छे कपड़े, मखमल, अनेक प्रकार के खाने, गाय, बकरियॉ आदि। लड़के की मॉ ने उस सामान से दो टोकरियॉ भरीं और अपनी सौत को दे आयी।

परन्तु उस आदमी की बड़ी पत्नी यह सब देख कर इतनी जली भुनी कि उसने वह भेंट भी नहीं ली और चिन्ता की वजह से वह रात भर सो भी नहीं पायी।

सुबह उठते ही उसने अपनी सौत से उन सब चीज़ों को पाने का तरीका पूछा। छोटी पत्नी ने जो कुछ भी हुआ था वह सब उसको सच सच बता दिया।

अगले दिन तड़के ही उसने अपने बड़े बेटे को उठाया और उसको अपनी बॉसुरी लाने के लिये कहा। फिर बोली — "आज हम लोग अपने खेत पर जायेंगे।"

"पर मॉ हम लोग कल ही तो खेत पर गये थे।" लड़का बोला।

मॉ ने कहा — "लेकिन हम आज भी जायेंगे।" कह कर वह अपने बेटे के साथ खेत पर चली गयी। जब वे खेतों पर गये तो वहॉ कोई काम तो था नहीं क्योंकि सारा काम तो पहले ही दिन खत्म हो चुका था फिर भी सारा दिन वे लोग वहॉ रहे।

जब शाम हुई तो बड़ी पत्नी ने अपनी टोकरी उठायी और घर चलने के लिये तैयार हुई। तो लड़के ने भी अपनी बॉसुरी उठायी और वह भी अपनी मॉ के साथ घर चलने लगा।

जब वे घर की ओर चलने लगे तभी मॉ ने कहा — "अरे बेवकूफ लड़के, क्या तुझे मालूम नहीं कि बॉसुरी को कैसे भूला जाता है? चल छोड़ अपनी बॉसुरी यहीं और घर चल।"

अब क्योंकि यह बॉसुरी लड़के की अपनी बनायी हुई तो थी नहीं और न उसको बजानी ही आती थी इसलिये यह सुन कर लड़के ने बॉसुरी वहीं पड़ी छोड़ दी और मॉ के साथ घर चल दिया।

जैसे ही वे लोग घर में घुसे कि उसकी मॉ ने अपने बेटे से कहा "जा और खेत पर से अपनी बॉसुरी उठा ला।" लड़का बेचारा यह सुन कर रोने लगा।

वह रात में अकेले खेत पर जाने से डर रहा था इसलिये कि वह वहॉ अकेले नहीं जाना चाहता था क्योंकि उसको मालूम था कि रात को वहॉ पर भूत आते थे और वह उनसे बहुत डरता था।

परन्तु उसकी मॉ ने उसे घर के बाहर धकेलते हुए कहा — "जा और बिना बॉसुरी और बिना बर्तन के वापस नहीं आना।"

लड़का बेचारा डरते डरते खेत पर पहुँचा। वहॉ पहले दिन की तरह से भूत आ चुके थे। भूतों के नेता ने कहा — "ओ आदमी के बच्चे, तुझे यहॉ इस समय किसने भेजा है और तू यहॉ क्यों आया है?"

लड़का डर के मारे रोते रोते बोला — "आज हम यहॉ खेत पर बिना किसी काम के आये थे। मैं दिन में यहॉ अपनी बॉसुरी छोड़ गया था तो मेरी मॉ ने मुझे मेरी बॉसुरी और भेंट वाला बर्तन लाने के लिये भेजा है।"

भूतों के नेता ने पहले की तरह से थैले में से एक सोने की बॉसुरी निकाली और उसको उस लड़के को दिखा कर पूछा "क्या यह है तेरी बॉसुरी?"

अब इस लड़के ने तो बॉसुरी अपने हाथ से बनायी नहीं थी जो उसे उससे लगाव होता। वह सोने की बॉसुरी देख कर ललचा गया और बोला — "हॉ, यही है मेरी बॉसुरी।"

भूतों के नेता ने कहा — "अच्छा? यही है तेरी बॉसुरी? तो यह ले अपनी बॉसुरी। पर ज़रा इसे बजा कर तो दिखा।"

उस लड़के को तो बॉसुरी बजानी भी नहीं आती थी सो उसकी बॉसुरी से ऐसे ही कुछ बेमतलब आवाजें निकलने लगीं। वह लड़का बहुत परेशान हुआ पर कुछ कर नहीं सका क्योंकि उसने तो कभी बॉसुरी बजायी ही नहीं थी। थोड़ी ही देर में वह थक कर रुक गया।

सभी भूत खामोश खड़े थे किसी से कुछ कहते नहीं बन पा रहा था। तब भूतों के नेता ने ही दो छोटे भूतों को बुलाया और उनसे बोला — "लाओ वे दोनों बर्तन उठा लाओ।"

जैसे ही वे दो भूत दो बर्तन उठा कर लाये लड़के ने एक भूत के हाथ से बड़ा वाला बर्तन छीन लिया और जाने के लिये तैयार हुआ तो भूतों का नेता बोला — "बेटा, जब तू घर पहुँच जाये तभी अपने माता पिता के सामने ही इस बर्तन को तोड़ना।"

लड़का बोला "हॉ मुझे मालूम है।" और बिना धन्यवाद दिये अपने घर की तरफ दौड़ गया।

हॉफता हॉफता वह घर पहुँचा। बर्तन बहुत बड़ा था और भारी भी। उसकी मॉ घर के बाहर ही उसका इन्तजार कर रही थी। अपने बेटे को बड़ा सा बर्तन लाते देख कर वह बहुत खुश हुई।

लड़का हॉफते हॉफते ही बोला — "उन्होंने कहा है कि इस बर्तन को मैं अपने माता पिता के सामने ही तोड़ूँ सो पिता जी को और बुला लो।"

मॉ तुनक कर चिल्लायी — "तुम्हारे पिता को उस बर्तन के बारे में क्या मालूम है जो हम उनको बुलायें। इसको तो हम अपने आप ही तोड़ लेंगे।" और लड़के को अन्दर ला कर उसने अपनी झोंपड़ी का दरवाजा बन्द कर लिया।

उसने अपने सभी बच्चों को इकट्ठा किया और अपनी झोंपड़ी में बने सभी छेद और दरारें भी बन्द कर दीं ताकि कोई भी चीज़ उनमें से निकल कर बाहर दूसरी झोंपड़ियों की तरफ न जा सके।

फिर उसने वह बर्तन तोड़ दिया। बर्तन के टूटते ही उसमें से सब प्रकार की बीमारियॉ जैसे कोढ़, चेचक, तपेदिक आदि निकल पड़ीं और उन्होंने उस स्त्री और उसके बच्चों को वहीं मार दिया।

यह कहानी हमें कई शिक्षा देती है। पहली बात तो हमको लालची नहीं होना चाहिये। क्योंकि पहला वाला बच्चा लालची नहीं था इसी लिये वह दूसरों का आदर पा सका।

दूसरी बात यह कि बिना सोचे समझे दूसरों की नकल करने की आदत अच्छी नहीं होती। दूसरी मॉ ने अपने बच्चे से छोटी पत्नी के बच्चे की नकल करवायी तो क्या फल पाया।

और तीसरे हमें दूसरों के उपकारों का धन्यवाद जरूर देना चाहिये।

5 जादुई काशीफल[15]

बच्चों, बच्चे तो जिद्दी होते ही हैं तो देखो कि एक बच्चे की जिद ने क्या क्या गुल खिलाये।

एक बार उत्तरी नाइजीरिया में एक स्त्री अपनी बेटी फुरैरा[16] के साथ शाम को घर लौट रही थी। सुबह से शाम तक के काम के बाद अब उसे घर पहुँचने की जल्दी थी इसलिये वह जल्दी जल्दी घर की तरफ जा रही थी।

फुरैरा भी उसके साथ रेत से भरे रास्ते पर कूदती फाँदती खुशी से भागी चली जा रही थी।

एकाएक फुरैरा रुक गयी। उसको सड़क के पास घास के बीच में एक छोटा सा काशीफल[17] दिखायी दे गया था। वह चिल्लायी — "माँ, देखो तो। यह कितना सुन्दर काशीफल है, यह मुझे तोड़ दो न।"

माँ क्योंकि आगे आगे चल रही थी, पलट कर लौटी और काशीफल देखा तो बोली — "बेटी, अभी इसे रहने दो, यह अभी

[15] Magical Pumpkin – a folktale from Nigeria, Western Africa.
[16] Phurera – name of the daughter
[17] Pumpkin – a kind of vegetable. See its picture above.

छोटा है। जब यह बड़ा हो जायेगा तब इसे तोड़ेंगे क्योंकि तब इसकी भाजी भी अधिक बनेगी।

तुम अगर चाहो तो इसके पास में लगा यह बड़ा वाला काशीफल अभी तोड़ लेते हैं। हम इसे आज रात के खाने में बना लेंगे।" यह कहते हुए उसने पास में लगा वह बड़ा काशीफल तोड़ लिया और आगे चल दी।

पर फुरैरा को तो अपना वाला छोटा वाला काशीफल चाहिये था। वह रो पड़ी और उसी छोटे वाले काशीफल के लिये जिद करने लगी।

उसकी मॉ ने उसे बहुत समझाया कि इतना छोटा काशीफल तोड़ना बेवकूफी है। कुछ दिन बाद जब वह बड़ा हो जायेगा तब तोड़ लेंगे परन्तु वह न मानी।

मॉ भी उसकी बात को सुना अनसुना कर आगे चल दी। बच्ची भी रोती हुई मॉ के पीछे पीछे घर पहुॅची।

रात को फुरैरा ने खाना खाने से मना कर दिया। पिता अपनी बेटी को बहुत प्यार करता था सो उसके पिता ने पूछा — "क्या बात है आज मेरी बिटिया क्यों नाराज है?"

मॉ ने जवाब दिया — "आज जब हम लोग घर वापस लौट रहे थे तो इसने एक छोटा सा काशीफल देख लिया उसी के लिये जिद कर रही है। मैंने उसको छोटा होने की वजह से नहीं तोड़ा इसी लिये रो रही है।"

पिता ने कहा — "रो मत बेटी, कल सुबह ही हम अपनी बेटी को वह काशीफल ला देंगे। आजा, अब खाना खा ले।" फुरैरा ने तुरन्त ही अपने ऑसू पोंछ लिये और अपने पिता के साथ खाना खाने बैठ गयी।

सुबह वह सबेरे ही उठ गयी और फिर से काशीफल के लिये जिद करने लगी। आखिर उसकी मॉ को अपना सारा काम छोड़ कर काशीफल लाने जाना ही पड़ा।

काशीफल अभी भी उसी जगह लगा हुआ था। मॉ ने जल्दी से काशीफल तोड़ कर फुरैरा के हाथ में दे दिया और घर की तरफ वापस लौट पड़ी।

पर यह क्या? काशीफल फुरैरा के हाथ से नीचे जमीन पर गिर पड़ा और उसके पीछे पीछे चलने लगा। अब क्या था फुरैरा आगे आगे और काशीफल उसके पीछे पीछे।

फुरैरा ने एक नाला कूद कर पार किया तो काशीफल ने भी उसके ऊपर से कूद लगा दी। फुरैरा ने इस प्रकार का चलता फिरता काशीफल पहले कभी नहीं देखा था।

वह खुशी से चिल्लायी — "देखो न मॉ मेरे इस काशीफल को किस तरह यह मेरे पीछे पीछे चल रहा है। तुमने इस काशीफल को मेरे लिये तोड़ा कितना अच्छा किया। तुम कितनी अच्छी हो मॉ।"

यह सुन कर तो मॉ आश्चर्य में पड़ गयी। उसने पीछे मुड़ कर देखा तो सचमुच ही काशीफल फुरैरा के पीछे पीछे लुढ़कता हुआ चला आ रहा था।

उसने भी पहले कभी चलता फिरता काशीफल नहीं देखा था सो इस काशीफल को इस तरह दौड़ते देख कर उसे भी बहुत आश्चर्य हो रहा था। पर यह काशीफल तो सचमुच ही लुढ़कता हुआ चला आ रहा था।

मॉ ने जंगल से घर तक कई बार उसको अपने हाथ में उठाने की कोशिश की पर वह बार बार उसके हाथ से फिसल जाता और उन लोगों के पीछे पीछे चलने लगता।

फुरैरा अपना काशीफल पा कर बहुत खुश थी। वह दौड़ती हुई अपने घर के ऑगन में बैठे अपने पिता से लिपट गयी और फिर घर के सभी लोगों से बोली — "आओ और आ कर सभी लोग मेरा काशीफल देखो। यह जंगल से घर तक सारे रास्ते मेरे पीछे पीछे चल कर आया है।"

यह सुन कर सभी लोग वहॉ उस अजीब काशीफल को देखने के लिये दौड़े आये।

काशीफल अभी भी जमीन पर इधर उधर लुढ़क रहा था। जैसे ही किसी ने उसको अपने हाथ में उठाने की कोशिश की वह उसी के हाथ से फिसल गया।

घर में काशीफल का एक अजीब सा तमाशा बन गया। सभी उस चलते फिरते काशीफल को आश्चर्य से देख रहे थे।

पर फुरैरा का पिता यह सब देख कर खुश नहीं था। वह बहुत चिन्तित था क्योंकि उसको मालूम था कि ऐसे जादुई काशीफल के अन्दर शैतान हुआ करता है और अब वह पछता रहा था कि उसने फुरैरा की मॉ को काशीफल तोड़ने के लिये क्यों कहा।

पर अब क्या हो सकता था अब तो वह केवल उससे बचने की तरकीब ही सोच सकता था।

इतने में काशीफल बोला — "फुरैरा, फुरैरा, मुझे भूख लगी है मुझे खाने के लिये मॉस चाहिये।" यह कह कर वह फुरैरा की एड़ी काटने लगा।

फुरैरा के पिता ने फुरैरा से कहा — "बेटी, जहॉ भेड़ें बॅधी हैं तुम वहॉ भाग जाओ। काशीफल भी तुम्हारे पीछे पीछे वहीं भाग जायेगा।"

फुरैरा यह सुनते ही भेड़ों के बाड़े की तरफ भागी तो काशीफल भी फुरैरा के पीछे पीछे बाड़े में घुस गया और उसने भेड़ों को साबुत का साबुत ही निगलना शुरू कर दिया।

फुरैरा बाड़े से घर वापस आयी तो काशीफल भी भेड़ों को खा कर घर वापस आ गया और बोला — "फुरैरा, मुझे अभी और मॉस चाहिये, मैं अभी और भूखा हूॅ।" और ऐसा कह कर वह फिर फुरैरा के टखने की तरफ बढ़ा।

अबकी बार फुरैरा के पिता ने कहा — "फुरैरा, भाग जा जहॉ गायें बॅधी हैं।" फुरैरा तुरन्त ही गायों के बाड़े की तरफ भाग गयी। काशीफल भी उसके पीछे पीछे चल दिया।

जब तक फुरैरा घर वापस आयी, काशीफल भी सारी गायें खा कर घर वापस आ गया और उसकी टॉग की तरफ बढ़ते हुए बोला — "मुझे अभी और मॉस चाहिये फुरैरा।"

अबकी बार फुरैरा के पिता ने बड़े दुख के साथ कहा — "फुरैरा, तुम तुरन्त ही ऊॅटों की तरफ भाग जाओ।"

फुरैरा यह सुनते ही तुरन्त ऊॅटों की तरफ भाग गयी पर जब तक वह घर वापस आयी काशीफल भी ऊॅटों को खा कर घर वापस आ गया था।

अबकी बार काशीफल फुरैरा के घुटने की तरफ बढ़ता हुआ बोला — "मुझे अभी और मॉस चाहिये फुरैरा।"

इस बार फुरैरा को गुस्सा आ गया़ वह च्ल्ला कर बोली — "अब और मॉस कहॉ है? तुमने सारा मॉस तो खा लिया।"

काशीफल बोला — "तब अब मैं तुम्हें खाऊॅगा।" और यह कह कर उसने फुरैरा के घुटने पर बहुत जोर से काटा।

पिता ने तुरन्त ही काशीफल में अपने पैर से एक ज़ोर की ठोकर मारी मगर काशीफल पर तो कोई असर ही नहीं पड़ा।

इतने में अन्दर से उनकी पालतू बकरी आ गयी और उसने अपने सींगों से काशीफल में एक उछाल मारी। काशीफल नीचे तो

जा गिरा पर गुस्से में भर कर वह बकरी की तरफ दौड़ा और बोला — "मुझे और मॉस चाहिये।"

इस बार बकरी ने अपने सींगों से पूरी ताकत के साथ उसको फिर से एक उछाल मारी तो काशीफल एक ज़ोर की आवाज के साथ जमीन पर गिर गया और फट गया।

और यह क्या? काशीफल के अन्दर से सारे जानवर ऐसे के ऐसे बाहर आ गये जैसे उसने खाये थे। पिता ने सारे जानवर उनकी जगहों पर बॉध दिये।

फुरैरा अपनी बकरी को बहुत प्यार कर रही थी क्योंकि उसने उसकी जान बचायी थी। मॉ ने उस टूटे काशीफल के सारे टुकड़ों को जला कर राख कर दिया।

तो यह करामात दिखायी फुरैरा की जिद ने और उसके जादुई काशीफल ने।

6 लड़की, मेंढक और सरदार का बेटा[18]

बहुत पुरानी बात है कि नाइजीरिया देश के एक गॉव में एक आदमी रहता था जिसके दो पत्नियॉ थीं। उसकी दोनों पत्नियों के एक एक बेटी थी।

वह आदमी अपनी पहली पत्नी और उसकी बेटी को तो बहुत प्यार करता था पर दूसरी पत्नी की वह बिल्कुल भी परवाह नहीं करता था।

कुछ दिन बाद उस आदमी की दूसरी पत्नी मर गयी और उसकी दूसरी पत्नी की बेटी अब बिना मॉ की रह गयी। अब वही लड़की घर का सारा काम करती थी।

उसकी सौतेली मॉ उसे हमेशा ही पानी लाने और जंगल से लकड़ी काटने के लिये भेजा करती थी। वह घर के सब लोगों के लिये खाना भी बनाती थी मगर उसको अपने खाने के लिये केवल जूठन ही मिला करती थी।

उस लड़की का रिश्ते का एक भाई था जो उसकी इस हालत पर बहुत तरस खाया करता था। उसने उस लड़की को कह रखा था कि जब भी कभी तुम अच्छा खाना खाना चाहो तो मेरे घर आ जाया करो सो अक्सर वह अपने भाई के घर खाना खाने चली जाया करती थी।

[18] A Girl, Frog and a Son of the Chief – a folktale of Nigeria, West Africa.

घर की बची हुई जूठन वह साथ ले जाती थी पर उसे वह रास्ते के एक तालाब में फेंकती जाती। उस तालाब में कुछ मेंढक रहते थे, वे आते और उस जूठन को खा लेते थे। यह सब ईद आने तक चलता रहा।

कुछ दिन बाद ईद आयी। ईद की शाम को जब वह अपने भाई के घर जा रही थी तो उस तालाब पर एक मेंढक बैठा उस लड़की का इन्तजार कर रहा था।

लड़की ने रोज की तरह खाने की जूठन के टुकडे तालाब की तरफ फेंक दिये और जाने लगी तो मेंढक बोला — "बेटी, तुमने हम लोगों पर बहुत दया की है इसलिये अगर तुम कल सुबह यहॉ आ जाओ तो मैं तुम्हारी दया के बदले में तुम्हें कुछ देना चाहता हूँ।"

लड़की यह सुन कर बहुत खुश हुई और अगले दिन आने का वायदा कर के अपने घर चली गयी।

अगले दिन वह लड़की जैसे ही तालाब पर जाने लगी कि उसकी सौतेली मॉ ने कहा — "तू तो बहुत ही आलसी है, न तो जंगल से लकड़ी काटी, न तालाब से पानी भरा, न खाना ही बनाया और सुबह सुबह न जाने कहॉ चल दी।"

बेचारी लड़की ने पहले अपना सारा काम खत्म किया और फिर जल्दी जल्दी तालाब की तरफ चल दी।

वहॉ वह कल वाला मेंढक बैठा उसका इन्तजार कर रहा था। वह बोला — "अरे, तुम अब आ रही हो? मैं तो सुबह से तुम्हारा इन्तजार कर रहा हूॅ।"

लड़की यह सुन कर रुऑसी सी बोली — "माफ कर दो बाबा, मैं तो गुलाम हूॅ न इसी लिये ऐसा हुआ।"

मेंढक ने पूछा — "यह कैसे?"

लड़की बोली — "मेरी मॉ मर गयी है, और मेरे भाई की शादी हो चुकी है इसलिये मैं अपनी सौतेली मॉ के पास रहती हूॅ। इसी लिये मैंने कहा था कि मैं तो गुलाम हूॅ।

रोज सुबह मुझे जंगल से लकड़ी लाना, तालाब से पानी भरना तथा सबका खाना बनाना आदि बहुत से काम करने होते हैं, और इस सबके बाद भी खाने को मिलती है मुझे केवल जूठन और बचा खुचा खाना।"

मेंढक बोला — "अच्छा, मेरा हाथ पकड़ो।" लड़की ने उसकी तरफ अपना हाथ बढ़ाया और मेंढक उसका हाथ पकड़ कर तालाब में कूद गया।

पानी में पहुॅचते ही वह लड़की को निगल गया और जब वह फिर से सूखी जमीन पर आया तो उसने उस लड़की को बाहर निकाल कर खड़ा कर दिया।

वह अपने साथ कीमती कपड़े, गहने और सोने और चॉदी की दो जोड़ी जूतियॉ भी लाया था।

वह बोला — "अब तुम इन कपड़ों को पहन कर किसी भी मौके पर कहीं भी जा सकती हो पर एक बात का ख्याल रखना कि जब वह मौका खत्म हो जाये और तुम घर वापस लौटो तो अपने दाहिने पैर का सोने का जूता वहीं छोड़ आना।"

"मैं समझ गयी बाबा।" कह कर वह लड़की तैयार हुई और चल दी। उस दिन गॉव के सरदार के बेटे के घर दावत थी, वह वहीं चल दी।

वहॉ जा कर उसने देखा कि एक बहुत बड़े कमरे मे बहुत सारे लड़के और लड़कियॉ नाच रहे थे सो वह भी उधर ही चल दी।

सरदार के बेटे ने इस लड़की को देखा तो अपने दरबारियों द्वारा उसको अपने पास बुला भेजा। उसको अपने पास सिंहासन पर बिठाया। बहुत देर तक वे दोनों बातें करते रहे।

काफी देर बाद लड़की बोली — "मुझे अब जाना चाहिये, काफी देर हो गयी है।"

सरदार के बेटे ने उससे पूछा — "तो तुम मुझसे प्रेम करती हो न?"

लड़की केवल मुस्कुरायी और अपने दाहिने पैर का जूता वहीं छोड़ कर वहॉ से चल दी। कुछ दूर तक तो सरदार का बेटा उसके साथ गया पर फिर वह अकेली ही तालाब की तरफ चल दी।

वहॉ मेंढक उसका इन्तजार कर रहा था। पहले की तरह मेंढक ने उसका हाथ पकड़ा और पानी में कूद गया। जब वह दोबारा जमीन पर वापस आयी तो उसने अपने वही फटे पुराने कपड़े पहने और घर वापस चली गयी।

जब वह लड़की घर पहुॅची तो उसने अपनी मॉ से कहा कि उसकी तबियत ठीक नहीं थी।

सौतेली मॉ ने उसे खूब डॉटा और कहा — "तू बहुत आलसी होती जा रही है। घर में घर का काम तो करती नहीं है और बाहर अपना समय गॅवाती फिरती है। आज तुझे खाना नहीं मिलेगा।"

अगले दिन सरदार के बेटे ने अपने पिता से कहा — "बाबा, कल मैं एक लड़की से मिला था जिसके पास सुनहरी और रुपहली जूतियॉ थीं मैं उसी से शादी करना चाहता हूॅ।"

सरदार ने पूछा — "कौन है वह लड़की और कहॉ रहती है?"

बेटा बोला — "यह तो मुझे पूछने का ध्यान ही नहीं रहा। पर हॉ याद आया, वह अपना एक सुनहरी जूता छोड़ गयी है। आप सारे गॉव की लड़कियों को बुला लीजिये। वह जूता जिसके पैर में भी आ जायेगा वह वही लड़की होगी।" सरदार राजी हो गया।

सरदार ने ढोल पीट कर गॉव की सारी लड़कियों को बुलवा लिया। सरदार के गॉव में बूढ़ी जवान, छोटी लम्बी, मोटी पतली सभी तरह की लड़कियॉ आ गयीं।

सरदार के बेटे ने हर लड़की को वह जूता पहना कर देखा पर वह जूता किसी भी लड़की के पैर में नहीं आया। सरदार का बेटा बहुत परेशान हुआ।

तभी एक दरबारी ने आ कर कहा — "सरकार, वह बिन मॉ की बेटी तो आयी ही नहीं अभी तक।"

सरदार के बेटे ने अनमनेपन से कहा — "ठीक है, उसको भी बुला लो।" सो उस लड़की को भी बुला लिया गया।

जब वह लड़की आयी और वह जूता उसके पैर की तरफ बढ़ाया गया तो वह जूता फुदक कर अपने आप ही उसके पैर में चला गया।

सरदार के बेटे को यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बोला — "ओह, तो तुम ही हो मेरी होने वाली पत्नी।"

इस पर लड़की की मॉ बोली — "अच्छा तो तू ही वह आलसी लड़की थी जो अपना जूता यहॉ छोड़ गयी थी।"

अगले दिन ही सरदार के बेटे ने उस लड़की से शादी कर ली और वह लड़की उसके घर चली गयी।

शादी के बाद जब वह अपने पति के घर जाने लगी तो रास्ते में उसने मेंढक को देखा तो बोली — "आओ बाबा"।

मेंढक बोला — "अभी नहीं, आज रात को हम तुम्हारे घर आयेंगे और तुम्हारे लिये कुछ भेंटें लायेंगे।"

रात होने पर उस मेंढक ने और मेंढकों को बुलाया और कहा — "देखो, हमारी बेटी जो रोज हमको खाना खिलाती थी उसकी आज शादी हो गयी है। अब मैं यह चाहता हूँ कि आप सब लोग उसको अपनी अपनी हैसियत के अनुसार उसे कुछ भेंट दें।"

सभी मेंढकों ने उसको कुछ न कुछ दिया। और वह बड़ा मेंढक उन सारी भेंटों को ले कर उस लड़की के पास पहुँचा।

उन भेंटों में एक चाँदी का पलंग था, दूसरी धातुओं के बने हुए तीन और पलंग थे जो काले, लाल और सफेद रंग की थीं। रेशम की चादरें, ऊनी कम्बल और बहुत सारी वस्तुऐं थी।

मेंढक ये सब भेंट देने के बाद बोला — "जब तुम्हारे पति की दूसरी पत्नियाँ तुमसे मिलने आयें तो उनको दस दस हजार कौड़ियाँ और दो दो टोकरी कोला नट[19] देना।

और जब उसकी रखैलें मिलने आयें तो उनको पाँच पाँच हजार कौड़ियाँ और एक एक टोकरी कोलानट देना। और जब उसकी

[19] In very olden days Cowries, a kind of sea shells, were used as money. And Kola Nut is a kind of seed of a special fruit, and is offered to people at the time of meeting each other as a greeting, such as betel nut in India. It is also eaten in the same way. See their pictures above – left one is of cowries and the right one id of Kola Nut.

नौकरानियॉ मिलने आयें तो उनसे कहना कि वे इस कैलैबाश[20] में से कितने भी कोलानट अपने आप ही ले लें।

उस लड़की ने वैसा ही किया जैसा उस मेंढक ने उससे कहा था।

मेंढक जब दोबारा उससे मिलने आया तो उस लड़की ने उससे कहा — "बाबा, मैं चाहती हूँ कि मेरे ऑगन में एक कुँआ हो और आप सब यहीं रहें।"

मेंढक बोला — "ठीक है, तुम अपने पति से कहो और अगर वह चाहेगा तो हम यहीं आ जायेंगे।"

उस लड़की ने अपने पति से कहा तो उसके पति ने वहीं ऑगन में एक कुऑ खुदवा दिया और फिर सारे मेंढक वहीं आ कर रहने लगे।

[20] Calabash is a kind of outer cover of pumpkin like fruit which is dried and is used to keep dry and wet things. It looks like an Indian clay pitcher. See the picture above.

7 जुयिन गाटान फ़ारा[21]

एक बार उत्तरी नाइजीरिया के एक गॉव में बहुत ही अमीर आदमी रहता था। उसके घर में तीस नौकर चाकर काम करते थे। उसका एक बेटा था जिसका नाम था जुयिन गाटान फ़ारा[22]।

एक दिन पिता और उसका बेटा दोनों अपने खेत में खड़े थे कि उधर से व्यापारियों का एक कारवॉ निकला।

बेटे ने अपने पिता से पूछा — "पिता जी, ये कौन लोग हैं?"

पिता ने जवाब दिया — "बेटा, ये लोग व्यापारी हैं व्यापार करने जा रहे हैं।"

फ़ारा ज़ोर से चिल्लाया — "ओ व्यापारियो, ज़रा रुक जाइये, आप लोग कहॉ जा रहे हैं?"

व्यापारी बोले — "हम लोग अशान्ती देश[23] जा रहे हैं।"

[21] Juyin Gatan Fara – a folktale of Hausa people from Northern Nigeria, Western Africa

[22] Juyin Gatan Fara in Hausa language means "to sell something at a loss in expectation of a big profit".

[23] Today's Ghana country. In olden times many caravans used to travel from Egypt to Ashanti country (Ghana) via Hausa land in Northern Nigeria.

फ़ारा ने अपने पिता से कहा — "मैं भी इन लोगों के साथ अशान्ति देश जाना चाहता हूँ।"

पिता ने कहा — "जरूर जाओ बेटा, परन्तु रास्ते के लिये कुछ साथ तो ले लो। यह मेरी घोड़ी ले लो इसे बेच कर तुम कुछ पैसा कमा सकते हो।"

फ़ारा घोड़ी ले कर कारवॉ के साथ हो लिया।

पहले शहर में पहुँच कर फ़ारा ने देखा कि एक आदमी का पैर घायल है। उसने उससे पूछा — "यह कैसे हो गया।"

आदमी बोला — "मैं घास काट रहा था कि चाकू से अपना पैर काट बैठा। अब मैं चल भी नहीं सकता।" फ़ारा ने अपनी घोड़ी उसे दे कर उससे घास काटने का चाकू ले लिया।

अगले शहर में पहुँच कर फ़ारा ने एक आदमी को एक कुत्ते के साथ देखा तो उसने चाकू के बदले में उससे कुत्ता ले लिया।

अगले शहर में फ़ारा ने व्यापारियों के सरदार से कहा कि वह दूसरे व्यापारियों के साथ शहर के बाहर नहीं रहेगा। वह शहर के अन्दर ही रहना चाहता था सो वह शहर के अन्दर ही रुक गया।

ठहरने के लिये एक घर मिल जाने के बाद उसने कुत्ता घर में बॉध दिया और बाहर घूमने चला गया।

उस घर में ग्वारी जाति[24] की एक स्त्री रहती थी। जब उस स्त्री ने कुत्ते को देखा तो कुत्ते को मार कर आग पर भूनने को रख

[24] Gwari tribe of Nigeria eats dogs too.

दिया। जब तक फ़ारा घूम कर आया तब तक वह स्त्री कुत्ते के सिर को छोड़ कर बाकी सारा कुत्ता खा चुकी थी। फ़ारा ने यह सब कुछ देख लिया पर वह बोला कुछ भी नहीं।

अगले दिन फ़ारा उस घर के मालिक के पास गया और बोला — "मैंने अपना सारा सामान बॉध लिया है, मैं जा रहा हूँ।"

मालिक ने कहा — "ठीक है, तुम्हारी यात्रा शुभ हो और तुम सही सलामत वापस आओ।"

फ़ारा बोला — "आप यह कैसे उम्मीद करते हैं कि मैं सही सलामत वापस आऊँगा जबकि मेरा कुत्ता खा लिया गया है।"

मालिक ने पूछा — "किसने खाया तुम्हारा कुत्ता?"

फ़ारा बोला — "आप खुद ही देख लें, यह इसका सिर है।"

मालिक घर में ज़ोर से चिल्लाया — "किसने खाया यह कुत्ता?" फिर उसने अपनी नौकरानी की तरफ देख कर पूछा — "क्या तुमने?"

नौकरानी डरते डरते बोली — "जी बाबा।"

मालिक बोला — "अब मैं क्या कह सकता हूँ।"

फ़ारा बोला — "अब आप यह कह सकते हैं कि इस कुत्ते के बदले में इस स्त्री को ले लो।"

मालिक बोला — "ठीक है, अगर तुम्हारी यही इच्छा है तो ले जाओ इस स्त्री को।"

फ़ारा ने उस नौकरानी को लिया और उस कारवॉ के साथ चल दिया। जब वे दूसरे शहर में पहुँचे तो उन्होंने देखा कि गारडवा जाति[25] का एक आदमी सड़क के किनारे खुदाई कर रहा है।

फ़ारा ने उससे पूछा — "तुम यहॉ खुदाई क्यों कर रहे हो?"

वह आदमी बोला — "सॉप के लिये।"

फ़ारा ने कहा — "तुम सॉप मुझे दे दो बदले में मैं तुमको यह नौकरानी दे दूँगा। उस आदमी ने सॉप फ़ारा को दे दिया और फ़ारा ने उस आदमी से सॉप ले कर वह स्त्री उस आदमी को दे दी।

फ़ारा ने सॉप को अपने चमड़े के थैले में रखा और थैले का मुँह अच्छी तरह बॉध कर वह फिर अपने कारवॉ की तरफ चल दिया।

कारवॉ में जा कर वह कारवॉ के सरदार से बोला — "भगवान की दया से मैं वापस आ गया हूँ। तुम मेरा यह थैला अपने पास रख लो और देखो इस थैले को किसी को छूने भी न देना।"

सरदार ने फ़ारा से तो हॉ कर दी परन्तु फ़ारा के जाने के बाद वह अपने साथियों से बोला — "इस थैले में ऐसा क्या भरा है जो यह लड़का हम लोगों को इसे छूने भी नहीं देता।"

ऐसा कह कर उसने जैसे ही थैला खोला सॉप उसमें से निकल कर झाड़ियों में चला गया।

[25] Gardawa tribe people are very skilled in beating drums, dancing and showing snakes games.

जब फ़ारा लौटा तो सरदार से उसने अपना थैला माँगा। सरदार ने नीची निगाहों से फारा का थैला वापस कर दिया।

थैला लेते हुए फ़ारा बोला — "मैंने तो पहले ही कहा था कि मेरा थैला कोई न छुए मगर मुझे लगता है कि मेरा यह थैला किसी ने छुआ है क्योंकि यह खाली है। कोई बात नहीं माडुगू[26], तुम्हें इसके बदले में कुछ न कुछ तो देना ही पड़ेगा। याद रखना जब मैं शुरू में आया था तो मेरे पास एक बहुत बढ़िया घोड़ी थी।"

"ठीक है ठीक है।" कह कर सरदार ने उसे दो घोड़े दे दिये।

अगले दिन कारवाँ अशान्ति देश में पहुँचा तो सारे व्यापारी सामान खरीदने और बेचने में लग गये। लेकिन फ़ारा ने अपने घोड़े नहीं बेचे।

कारवाँ जब वापस लौट रहा था तभी भी वे उसके साथ ही थे। बीच में कारवाँ एक दो दिन के लिये किसी शहर में रुका तो फ़ारा फिर वहाँ घूमने चल दिया।

चलते चलते वह एक बुढ़िया के पास पहुँचा जो ज़हर बना रही थी। वह बोला — "माँ जी, क्या मुझे थोड़ा सा पानी पीने को मिल सकता है?"

बुढ़िया बोली — "हाँ हाँ क्यों नहीं। पानी उधर रखा है तुम खुद ही ले लो।"

[26] Madugu

"नहीं मॉ तुम खुद अपने हाथ से ही दे दो।" बुढ़िया बोली "ठीक है पर तुम मेरे इस बर्तन में झॉक कर मत देखना।"

फ़ारा ने सोचा कि इस बर्तन में झॉकने में क्या हो सकता है सो जैसे ही बुढ़िया पानी लाने के लिये उठी उसने उस बर्तन को खोल कर उसमें झॉका तो वह अन्धा हो गया।

बुढ़िया पानी ले कर वापस आयी तो देखा कि लड़का अन्धा हो चुका है। वह सब समझ गयी और बोली — "ओह, लगता है तुमने इस बर्तन में झॉका है।"

फ़ारा बोला — "हॉ मॉ जी, आप तो जानती हैं कि हम घूमने वाले लोग किस प्रकार के होते हैं। जिस काम को उनको मना किया जाता है वे उसी काम को करते हैं। लेकिन अब मेरे अन्धेपन की कुछ दवा तो बताओ।"

बुढ़िया बोली — "अगर मैं तुम्हें तुम्हारे अन्धेपन की दवा बताऊॅगी तो तुम मुझे क्या दोगे?"

फ़ारा बोला — "देखिये ये दोनों घोड़े मेरे हैं। आप मुझे दवा देंगी तो इनमें से एक घोड़ा आप ले लीजियेगा।"

इस पर बुढ़िया ने एक बर्तन लड़के को दे कर उसको ऑखों की रोशनी लाने का तरीका बताया। फ़ारा वह बर्तन ले कर चल दिया और कारवॉ में जा कर मिल गया।

लोगों ने कानाफूसी की कि फ़ारा के पास एक बर्तन है और इसने अपने घोड़ों का न जाने क्या किया।

उस रात वह कारवॉ के सरदार के पास गया और बोला — "माडुगू, ज़रा मेरा यह बर्तन रख लो मैं अभी आता हूँ और देखना इसको कोई खोले नहीं।"

लेकिन जैसे ही फ़ारा वहॉ से गया सरदार ने तुरन्त ही वह बर्तन खोल कर उसमें झॉका। उस बर्तन में झॉकते ही वह अन्धा हो गया।

अब उसने अपने एक साथी उबान्डावाकी[27] को बुला कर कहा — "उबान्डावाकी, ज़रा देखना तो इसमें क्या है।"

उबान्डावाकी ने भी जैसे ही उस बर्तन में झॉका तो वह भी अन्धा हो गया। इस प्रकार वे एक दूसरे को बुलाते रहे और उस बर्तन में झॉकने के लिये कहते रहे तो सभी अन्धे हो गये।

जब फ़ारा लौटा तो उसने देखा कि कारवॉ के सारे लोग अन्धे हो चुके हैं तो बोला — "मैंने तुम लोगों से पहले ही मना किया था कि इस बर्तन को खोलना नहीं और इसमें झॉकना नहीं। तुम लोग अपनी आदत से बाज़ नहीं आये और अब तुम सब अन्धे हो गये हो।"

अगले दिन जब सब लोग वापस लौटने के लिये तैयार हो रहे थे तो फ़ारा बोला — "मैं अशान्ति भी हो आया और सही सलामत भी आ गया।

[27] Ubandawaki

मेरे पास व्यापार के लिये तो कुछ नहीं था पर कम से कम मैं अपनी तन्दुरुस्ती तो वापस ले आया हूँ पर तुम लोग... ।" यह बात उसने सभी लोगों से कही।

जब एक दिन की यात्रा रह गयी तो सरदार फ़ारा से बोला — "फ़ारा, मैं तुमसे ऑखों की दवा की भीख मॉगता हूँ।"

तो फ़ारा बोला — "अगर मैं तुम्हें ऑखों की दवा दूँ तो तुम मुझे क्या दोगे?"

सरदार बोला — "मैं तुमको अपना सारा सामान दे दूँगा।"

फारा ने पूछा — "कितने गधे है तुम्हारे पास?"

"एक सौ।"

फारा बोला — "ठीक है, तुम मुझे चालीस गधे सामान दे दो, तुम्हें दवा मिल जायेगी।"

इस प्रकार फारा ने सरदार से चालीस गधे सामान ले कर सरदार की ऑखें ठीक कर दीं। इसी प्रकार सभी ने उसे, किसी ने तीस, किसी ने बीस, किसी ने दस गधे सामान दे कर अपनी अपनी ऑखें ठीक करायीं।

अगले दिन जब वह सारा सामान ले कर घर चला तो लोग बोले — "देखो, फ़ारा कितना होशियार है वह केवल एक घोड़ी घर से ले कर चला था और अब कितना सारा सामान ले कर घर वापस जा रहा है।

8 कुत्ता और शेर[28]

एक बार की बात है कि एक दिन एक कुत्ता खाने की खोज में जंगल तक पहुँच गया। सामने बड़ा सा जंगल देख कर वह घबरा गया पर क्योंकि वह भूखा था इसलिये वह जल्दी जल्दी खाना खोजने लगा।

कुछ ही देर में उसको एक शेर की दहाड़ सुनायी दी। वह डर गया। कुत्ते की सॉस रुक गयी उसने सोचा आज तो मैं गया। अभी वह यह सोच ही रहा था कि वह क्या करे कि इतने में उसको सामने पड़ीं कुछ सूखी हड्डियॉ दिखायी दीं।

उनको देख कर उसके दिमाग में कुछ आया और उसने उसमें से एक हड्डी उठायी और शेर की ओर पीठ कर के बैठ कर उसे चबाने लगा।

जब शेर काफी पास आ गया तो वह ज़ोर ज़ोर से बोला — "वाह शेर का मॉस खाने का तो मजा ही कुछ और है। एक शेर और मिल जाये तो बस पूरी दावत ही हो जाये।"

यह सुन कर शेर तो सकते में आ गया। उसने सोचा "अरे यह कुत्ता तो शेर का शिकार करता है जान बचा कर भाग लो वरना यह तो मुझे भी खा जायेगा।" और शेर वहॉ से उलटे पैरों चम्पत हो लिया।

[28] Dog and Lion – a folktale from Nigeria, Western Africa

पेड़ पर बैठा एक बन्दर यह सब तमाशा देख रहा था। उसने सोचा यह मौका तो बहुत अच्छा है। मैं शेर को जा कर इस कुत्ते की सारी कहानी बता देता हूँ। इससे शेर से मेरी दोस्ती हो जायेगी और फिर मेरा सारी ज़िन्दगी का खतरा दूर हो जायेगा।

वह फटाफट शेर के पीछे भागा। कुत्ते ने बन्दर को शेर के पीछे भागते हुए देखा तो तुरन्त समझ गया कि जरूर कहीं कोई गड़बड़ है। उधर बन्दर ने शेर को सब बता दिया कि उस कुत्ते ने उसे कैसे बेवकूफ़ बनाया है।

यह सुन कर शेर ज़ोर से दहाड़ा और बोला — "चल मेरे साथ अभी उसकी लीला खत्म करता हूँ।" यह कह कर उसने बन्दर को अपनी पीठ पर बैठाया और कुत्ते की ओर लपका।

बच्चो, ज़रा सोचो तो कुत्ते ने फिर क्या किया होगा?

कुत्ते ने शेर को आते देखा तो एक बार फिर उसकी तरफ पीठ कर के बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से बोलने लगा — "उफ़, यह बन्दर भी बहुत ही आलसी है। इस बन्दर को भेजे हुए मुझे एक घंटा हो गया अभी तक उससे एक शेर नहीं फॉसा जा सका। ऐसा कैसे चलेगा।"

यह सुनते ही शेर ने बन्दर को अपनी पीठ पर से उतार कर फेंक दिया और वह तो यह जा और वह जा। इस तरह कुत्ते ने दो बार शेर से अपनी जान बचायी।

9 मास्टर आदमी[29]

एक बार की बात है कि नाइजीरिया में एक आदमी था जो बहुत ताकतवर था। जब वह आग जलाने के लिये लकड़ी इकट्ठी करने जाता था तो दूसरे लोगों से दुगुनी लकड़ी इकट्ठी कर के लाता था। जब वह शिकार करने जाता तो एक बार में दो दो हिरन मार कर लाता था।

इस आदमी का नाम शाडूसा था और इसकी पत्नी का नाम शेटू[30] था। एक दिन शाडूसा ने अपनी पत्नी से कहा — "ज़रा मेरी ये मॉस पेशियॉ तो देखो। मैं दुनियॉ का सबसे ताकतवर आदमी हूँ। आज से तुम मुझको मास्टर आदमी कहा करो।"

यह सुन कर शेटू बोली — "बस बस अपनी यह बेवकूफी वाली शेखी बघारना छोड़ो। तुम खुद कितने भी ताकतवर क्यों न हो पर तुमसे भी ताकतवर कोई न कोई कहीं न कहीं जरूर होगा। ध्यान रखना एक दिन वह तुमको मिल ही जायेगा।"

एक दिन शेटू पड़ोस के एक गॉव में गयी। जब वह वहॉ से लौट रही थी तो उसको प्यास लग आयी तो वह एक कुँए के पास रुक गयी।

[29] Master Man – a folktale from Hausa Tribe of Nigeria, Africa. Told by Aaron Shepard. Published as a picture book. NY: HarperCollins. 2001.

[30] Shadusa – name of the strong man. His wife's name was Shettu.

उसने उस कुँए में बालटी डाली और पानी निकालने के लिये रस्सी खींची पर उसने उसको खींचने के लिये कितना भी ज़ोर लगाया पर वह बालटी नहीं खींच सकी।

तभी वहाँ अपनी कमर पर अपना बच्चा बाँधे और अपने सिर पर एक कैलेबाश[31] रखे एक स्त्री आयी।

शेटू बोली — "आज तुमको यहाँ पानी नहीं मिलेगा। मैंने इसमें से पानी निकालने के लिये अपनी बालटी डाली थी पर वह तो बाहर ही नहीं आती।"

दोनों स्त्रियों ने उसको खींचने के लिये ज़ोर लगाया पर वह बालटी तो हिल कर भी नहीं दी। स्त्री बोली "एक मिनट रुको।"

कह कर उसने अपनी कमर से बच्चे को खोल कर नीचे जमीन पर बिठाया और उसके हाथ में रस्सी देती हुई बोली — "बेटा मामा के लिये बालटी खींचो।"

बच्चे ने तुरन्त ही बालटी खींच दी और अपनी माँ का कैलेबाश भर दिया। फिर उसने दोबारा बालटी कुँए में डाली और एक बालटी पानी शेटू के लिये भी खींच दिया।

यह देख कर शेटू तो हैरान रह गयी। उसके मुँह से निकला — "अरे वाह यह तो बड़ी अजीब सी बात है। जिस बालटी को हम दोनों ही नहीं खींच सके उसे इस बच्चे ने खींच दिया।"

---

[31] Calabash is the dried outer skin of a pumpkin like vegetable. It may be used to keep dry and wet things and looks like clay pitcher of India. It comes in many sizes and shapes. See the picture of one of its kinds above.

स्त्री बोली — "बहिन इसमें अजीब सी कोई बात नहीं है। मेरा पति मास्टर आदमी है।"

पानी पी कर शेटू घर आ गयी। जब वह घर पहुँची तो उसने अपने पति को रास्ते की घटना बतायी।

शाडूसा चिल्लाया — "मास्टर आदमी? वह अपने आपको मास्टर आदमी नहीं कह सकता। मास्टर आदमी तो मैं हूँ। लगता है कि मुझे उसे सबक सिखाना पड़ेगा।"

शेटू ने उससे प्रार्थना की — "नहीं नहीं ऐसा मत करना। अगर उसका बच्चा इतना ताकतवर है तो ज़रा सोचो कि उसका पिता कितना ताकतवर होगा। कहीं तुम उसके हाथों मारे न जाओ।"

पर शाडूसा बोला — "देखेंगे।"

अगली सुबह शाडूसा जल्दी उठ कर उसी पड़ोस वाले गॉव की तफ चला जिसमें उसकी पत्नी गयी थी और उसी कुँए तक आ गया जहॉ उसने पानी खींचने की कोशिश की थी और उससे पानी नहीं खिंचा था।

उसने भी वहॉ आ कर पानी निकालने के लिये बालटी कुँए में डाली और उसकी रस्सी खींची। उसने भी कितनी कोशिश की पर वह भी वहॉ बालटी से पानी नहीं खींच सका।

तभी वह बच्चे वाली स्त्री वहॉ आ गयी और पानी खींचने लगी।

शाडूसा ने उससे कहा — "एक मिनट, तुम क्या कर रही हो।"

स्त्री ने कहा — "यह तो साफ दिखायी दे रहा है कि मैं पानी खींच रही हूँ।"

शाडूसा बोला — "नहीं तुम पानी नहीं खींच सकतीं। बालटी ऊपर आती ही नहीं। मैं तो इसे कितनी देर से खींचने की कोशिश कर रहा हूँ।"

स्त्री ने अपने बच्चे को नीचे बिठाया और उसके हाथ में रस्सी देते हुए उससे कहा कि वह उसके लिये पानी खींच दे। बच्चे ने तुरन्त ही रस्सी हाथ में पकड़ी और अपनी माँ का कैलेबाश पानी से भर दिया।

यह देख कर शाडूसा के मुँह से निकला — "वाह। पर यह उसने किया कैसे?"

स्त्री बोली — "यह तो उसके लिये बहुत आसान है जब किसी का पिता मास्टर आदमी होता है।"

शाडूसा ने यह सुन कर अपने गले का थूक सटका और घर वापस जाने की सोची पर फिर घर जाने की बजाय उसने अपनी छाती चौड़ी की और कहा — "मैं इस आदमी से मिलना चाहता हूँ ताकि मैं उसे दिखा सकूँ कि मास्टर आदमी कौन है।"

स्त्री बोली — "मैं ऐसा नहीं करूँगी। वह तुम्हारे जैसे आदमियों को तो खा जाता है। पर वह तुम जैसों के लिये ठीक भी है सो चलो मेरे साथ चलो।"

सो शाडूसा उस स्त्री के पीछे पीछे उसके घर की तरफ चल दिया। उसके घर के चारों तरफ बाड़ लगी थी। बाड़ के पीछे एक बहुत बड़ी आग जलाने की जगह थी और उसके पास ही हड्डियों का एक बहुत बड़ा ढेर पड़ा था।

उसको देखते ही शाडूसा ने पूछा — "यह सब क्या है?"

स्त्री बोली — "यह तुम अभी देखोगे। हमारा घर तो इतना छोटा है कि मेरे पति को अपने हाथी खाने के लिये घर के बाहर आना पड़ता है।"

तभी उनको इतनी ज़ोर की गरज की आवाज सुनायी दी कि शाडूसा को तो अपने कान बन्द कर लेने पड़े। फिर जमीन हिलना शुरू हुई और इतनी ज़ोर से हिली कि शाडूसा तो मुश्किल से ही खड़ा हो सका।

वह चिल्लाया — "यह क्या है?"

स्त्री बोली — "यह मास्टर आदमी है।"

शाडूसा फिर चिल्लाया — "ओह नहीं। तुम कुछ गलत नहीं कह रही थीं। मुझे तो यहाँ से भागना पड़ेगा।"

स्त्री बोली — "भागने के लिये तो अब बहुत देर हो चुकी है। पर कोई बात नहीं मैं तुमको कहीं छिपा देती हूँ।"

मकान के बाड़े के पास ही मिट्टी के कुछ बड़े बड़े बर्तन रखे थे। वे आदमी की लम्बाई जितने ऊँचे थे। शायद वे अनाज इकट्ठा करने के लिये थे।

उस स्त्री ने उसे एक बर्तन पर चढ़ने और फिर उसमें उतर जाने में सहायता की। जब वह उस बर्तन में बैठ गया तो उसके ऊपर उसने उसका ढकना ढक दिया।

शाडूसा ने तुरन्त ही एक डंडी से उस बर्तन का ढकना उठा कर उसकी झिरी में से झॉकने की कोशिश की।

उसने देखा कि वह वहॉ अपने कन्धे पर एक मरा हुआ हाथी उठाये हुए उस घर के कम्पाउंड की तरफ आ रहा था। यह मास्टर आदमी था।

स्त्री ने पूछा — "प्रिय क्या तुम्हारा दिन अच्छा गुजरा?"

मास्टर आदमी बोला — "हॉ। पर मैं अपना तीर कमान तो यहीं भूल ही गया था। आज मुझको यह हाथी केवल अपने हाथों से ही मारना पड़ गया।"

यह देख सुन कर शाडूसा डर के मारे थर थर कॉपने लगा। थर थर कॉपते हुए उसने देखा कि मास्टर आदमी ने वहीं कम्पाउंड मे एक बहुत बड़ी सी आग जलायी। उस हाथी को उस आग पर भूना और सिवाय उसकी हड्डियों के उसका वह एक एक टुकड़ा खा गया।

अचानक वह रुक गया और उसने इधर उधर कुछ सूँघ कर अपनी पत्नी से पूछा — "प्रिये मुझे यहॉ किसी आदमी की बू आ रही है।"

स्त्री बोली — "अभी तो यहॉ कोई आदमी नहीं है। हॉ तुम जब चले गये थे तब एक आदमी इधर से गुजरा था। तुम्हें उसी की बू आ रही होगी।"

मास्टर आदमी गरजा — "बड़ी बुरी बात है कि वह मेरे पीछे से गुजरा। नहीं तो वह तो खाने में मुझे बहुत स्वाद लगता।"

फिर वह जमीन पर लोटता रहा जब तक कि उसके खर्राटों से वहॉ पड़ीं सूखी पत्तियॉ नहीं कॉपने लगीं।

स्त्री जल्दी से उस बर्तन के पास गयी जिसमें शाडूसा बन्द था और उसका ढकना हटा कर बोली — "जल्दी निकलो यहॉ से। जितनी जल्दी हो सके उतनी जल्दी यहॉ से भाग जाओ।"

शाडूसा तुरन्त उस बर्तन में से कूदा और सड़क की तरफ भाग लिया। पर वह बहुत दूर तक नहीं गया था कि उसको एक गरज की आवाज सुनायी पड़ी और उसके नीचे की जमीन कॉपने लगी। इसका मतलब यह था कि मास्टर आदमी उसके पीछे आ रहा था।

शाडूसा भागता ही रहा जब तक वह एक खेत तक नहीं आ गया जहॉ पॉच किसान अपना खेत जोत रहे थे।

उसको इतनी तेज़ भागते हुए देखा तो उनमें से एक ने पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी कहॉ भागे जा रहे हो?"

शाडूसा हॉफते हुए बोला — "वह मास्टर आदमी मेरे पीछे आ रहा है।"

किसान बोला — "आराम से, आराम से। तुम चिन्ता न करो हम तुमको किसी से कोई नुकसान नहीं पहुँचने देंगे।"

तभी उन्होंने सबने गरज की आवाज सुनी तो किसानों ने अपने अपने हल फेंक दिये और अपने अपने कान बन्द कर लिये।

उस किसान ने पूछा — "यह क्या था?"

शाडूसा बोला — "यही तो मास्टर आदमी था।"

"तो भागो अपनी जान बचा कर भागो।" कह कर सब किसान वहाँ से भाग लिये। शाडूसा भी भागते एक ऐसी जगह आ गया जहाँ दस मजदूर बोझा उठा कर जा रहे थे।

उनमें से एक मजदूर ने पूछा — "इतनी जल्दी जल्दी कहाँ भागे जा रहे हो?"

शाडूसा हाँफते हुए बोला — "वह मास्टर आदमी मेरे पीछे आ रहा है।"

मजदूर बोला — "आराम से, आराम से। तुम चिन्ता न करो हम सबसे कोई नहीं लड़ सकता।"

तभी उन्होंने सबने गरज की आवाज सुनी तो कई मजदूर तो उछल कर नीचे गिर गये और उनके हाथ से उनके गट्ठर गिर गये और उन्होंने अपने अपने कान बन्द कर लिये।

उस मजदूर ने पूछा — "यह क्या था?"

शाडूसा बोला — "यही तो मास्टर आदमी था।"

"तो अपनी जान बचा कर भागो।" और सब वहॉ से भाग लिये।

शाडूसा फिर भागा तो एक मोड़ पर आ कर पल भर के लिये रुक गया। वहीं रास्ते के पास एक अजनबी बैठा था और उस अजनबी के पास हाथी की हड्डियों का एक ढेर लगा हुआ था।

अजनबी चिल्लाया — "अरे इतनी जल्दी जल्दी कहॉ भागे जा रहे हो?"

शाडूसा हॉफते हुए बोला — "वह मास्टर आदमी मेरे पीछे आ रहा है।"

अजनबी बोला — "तुमको ऐसा नहीं कहना चाहिये क्योंकि मास्टर आदमी तो मैं हूँ।"

तभी शाडूसा के पीछे से गरज की आवाज आयी और एक बार फिर वह हवा में उछल गया। उस अजनबी ने उसको एक हाथ में पकड़ लिया। मास्टर आदमी उनके पास आ रहा था।

मास्टर आदमी चिल्लाया — "इस आदमी को मुझे दे दो।"

शाडूसा बोला — "यही तो मास्टर आदमी था।"

अजनबी मास्टर आदमी से चिल्ला कर बोला — "अगर तुम्हें इसे लेना हो तो आओ और आ कर ले लो।"

मास्टर आदमी शाडूसा के ऊपर कूदा पर अजनबी ने शाडूसा को उछाल कर एक पेड़ पर फेंक दिया। दोनों ताकतवर आदमी एक दूसरे से गुँथ गये और वहीं कुश्ती लड़ने लगे।

इस लड़ाई में जो आवाज हो रही थी उससे शाडूसा के कान बहरे हुए जा रहे थे और उससे जो धूल उठ रही थी उससे उसका गला घुटा जा रहा था। इस सबसे पेड़ भी हिल रहा था जिससे वह नीचे गिरने गिरने को हो रहा था।

शाडूसा उन दोनों को लड़ते हुए देख रहा था। दोनों ने एक एक कुदान भरी और दोनों हवा में उछल गये। वे हवा में ऊँचे और ऊँचे उठते चले गये और इतने ऊँचे उठ गये कि एक बादल से हो कर आसमान में गायब हो गये।

शाडूसा बहुत देर तक इन्तजार करता रहा पर वे लोग तो नीचे आये ही नहीं। सो वह बहुत सावधानी से पेड़ पर से नीचे उतरा और अपने घर की तरफ भाग लिया। वह तब तक नहीं रुका जब तक कि वह अपने घर सुरक्षित रूप से नहीं पहुँच गया।

इसके बाद उसने फिर अपने आपको कभी मास्टर आदमी भी नहीं कहा।

जहाँ तक इन दोनों मास्टर आदमियों का सवाल है ये अभी भी बादल में हैं और अभी तक लड़ रहे हैं। जब वे थक जाते हैं तो थोड़ा आराम कर लेते हैं पर फिर शुरू हो जाते हैं। और फिर ये लोग क्या शोर मचाते हैं, उफ़ बस पूछो मत।

कुछ लोग इसको बिजली की कड़क बोलते हैं पर अब तो तुम्हें मालूम हो गया है न कि यह क्या है – दो बेवकूफ एक दूसरे से

हमेशा के लिये लड़ रहे हैं केवल यह तय करने के लिये कि मास्टर आदमी कौन है।

10 चिन्ये[32]

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में एक लड़की रहती थी जिसका नाम था चिन्ये। उसके माता पिता मर गये थे सो वह अपनी सौतेली मॉ निकेची[33] और सौतेली बहिन अडॉमा के साथ रहती थी।

चिन्ये की सौतेली मॉ और बहिन उससे घर का सारा काम करवाती थीं। उधर अडॉमा एक बहुत आलसी और बिगड़ी हुई लड़की थी और घर में कोई काम नहीं करती थी।

असल में उसको घर में इधर उधर घूमना और दिन में कई बार नहाना बहुत अच्छा लगता था सो वह घर का बहुत सारा पानी नहाने में ही खर्च कर देती थी। उन दिनों पानी घरों में पास की नदी से लाया जाता था। और इस तरह से पानी लाना आसान नहीं था।

एक दिन घर में शाम को ही सारा पानी खत्म हो गया और शाम का खाना बनाने के लिये भी बिल्कुल पानी नहीं था सो निकेची ने चिन्ये को पानी लाने के लिये भेजा। हालॉकि रात बहुत अँधेरी थी।

उसने उससे कहा — "ओ बुरी लड़की, जा ज़रा नदी पर चली जा और जल्दी से थोड़ा सा पानी ले आ।"

---

[32] Chinye – a fairy tale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.365cinderellas.com/search/label/Baba%20Yaga
By Obi Onyefulu and E Safarevicz. From their book "Chinye: a west African folktale". NY: Penguin Books. 1994.

[33] Chinye lived with her stepmother Nkechi.

हालॉकि चिन्ये कोई बुरी लड़की नहीं थी पर फिर भी वह उस अँधेरी रात में नदी से पानी लाने चली गयी क्योंकि उसके पास और कोई रास्ता ही नहीं था।

जब वह नदी के आधे रास्ते में पहुँची तो एक शक्ल उसके रास्ते में आ कर खड़ी हो गयी और वह डर के मारे चीख पड़ी।

पर तभी एक मीठी सी आवाज ने उससे कहा — "बच्ची तुम कहॉ जा रही हो।" और तभी वह शक्ल उसको एक हिरन[34] में बदलती नजर आयी।

जब चिन्ये ने उसको यह बताया कि वह इतनी रात को बाहर क्यों निकली तो उस शक्ल ने एक लम्बी सी सॉस भरी और उसको जाने दिया।

चिन्ये और आगे चली। जब वह नदी की तरफ तीन चौथाई रास्ता पार कर गयी तो उसके रास्ते में एक और शक्ल दिखायी दी। वह उसको हयीना[35] लगा।

उसने भी उससे बड़ी शान्ति से पूछा — "बेटी तुम इतनी रात गये इस अँधेरी रात में जंगल के इस खतरनाक रास्ते पर अकेली कहॉ जा रही हो?"

---

[34] Translated for the word "Antelope". See its picture above.

[35] Hyena – is a tiger-like animal. See its picture above.

जब चिन्ये ने उसे बताया कि वह उस समय में कहॉ और क्यों जा रही थी तो हयीना बोला — "जाओ बेटी मेरे आशीर्वाद के साथ जाओ। पर सॅभाल कर जाना एक शेर मेरा पीछा कर रहा है। तुम इस पेड़ के पीछे छिप जाओ जब तक वह यहॉ से गुजरता है। उसके जाने के बाद चली जाना।"

सो चिन्ये हयीना के बताये पेड़ के पीछे छिप गयी और तब तक वहॉ खड़ी खड़ी शेर का इन्तजार करती रही जब तक वह वहॉ से निकल कर चला नहीं गया। उसके जाने के बाद वह तुरन्त ही वहॉ से निकल कर नदी की तरफ दौड़ गयी। उसके बाद उसको वहॉ कोई जानवर नहीं मिला।

चिन्ये ने अपना पानी का बर्तन पानी से भरा और लौटने के लिये घूमी कि अचानक उसके सामने एक बुढ़िया आ गयी जिसकी कमर उम्र की वजह से झुकी हुई थी। यह उस नदी की आत्मा थी जिससे वह अभी अभी पानी ले कर आ रही थी।

वह बुढ़िया बोली — "भगवान तुम्हारी रक्षा करे बेटी। जब तुम यहॉ से वापस जाओगी तो तुमको जंगल की एक झोंपड़ी से आती ढोल और गाने की आवाज सुनायी देगी तो तुम उस झोंपड़ी में घुस जाना। वहॉ तुमको उस झोंपड़ी के फर्श पर बहुत सारे खोल[36] बिखरे

[36] Translated for the word "Gourd". See its picture above. Gourd is a dry oluter cover of a fruit which can be used to keep dry or wet things.

मिलेंगे। तुम उनमें से सबसे छोटा और चुप रहने वाला खोल उठा लेना। तुम उनमें से बड़े वाले खोल और यह कहने वाले खोल मत उठाना जो तुमसे यह कहें कि "मुझे उठा लो।"

यह कह कर और एक बार फिर से उसको आशीर्वाद दे कर नदी की आत्मा वहॉ से गायब हो गयी। अब जैसा कि नदी की आत्मा ने कहा था वैसा ही हुआ।

जब वह वापस जा रही थी तो उसने जंगल में से एक झोंपड़ी से आती ढोल और गाने की आवाज सुनी। वह उसी झोंपड़ी में चली गयी। वहॉ जा कर उसने देखा कि वहॉ तो वाकई बहुत सारे खोल पड़े हुए थे।

उनमें से कुछ की गर्दनें सीधी थीं तो कुछ की गर्दनें मुड़ी हुई थीं। कुछ चिन्ये के बराबर बड़े थे तो कुछ इतने छोटे थे कि वे उसकी हथेली में आ सकते थे। उसने वहॉ से सबसे छोटा खोल उठाया और उसको ले कर घर चल दी।

नदी की बुढ़िया उसके सामने फिर प्रगट हुई और बोली — "बेटी तुमने यह खोल बहुत ही अक्लमन्दी से चुना है अब जो भी यह तुम्हारी किस्मत में ले कर आये उसको भी तुम अक्लमन्दी से ही इस्तेमाल करना।" और इतना कह कर वह फिर गायब हो गयी।

पर जब चिन्ये घर पहुॅची तो उसकी सौतेली बहिन ने उसका वह छोटा सा खोल उसके हाथ से छीन लिया और खाना बनाने के लिये उसको रसोईघर में धकेल दिया।

सौतेली मॉ ने उसको देर से आने पर बहुत मारा और चिल्लायी — "हम शाम का खाना बनाने के लिये तेरा कबसे इन्तजार कर रहे हैं और तू अब आयी है।"

सो चिन्ये को घर पहुँच कर शाम का खाना बनाना पड़ा और फिर उन दोनों को खिलाना पड़ा। इस बीच उसको अपने लाये हुए खोल को खोलने का मौका ही नहीं मिला।

सुबह सवेरे वह अपने छोटे से काशीफल के खोल को ले कर एक खाली झोंपड़ी में चली गयी। उसने पास में से एक पत्थर उठाया और उस खोल को मार कर उसको तोड़ दिया।

खोल के टूटते ही वह झोंपड़ी एक खजानेघर में बदल गयी। बहुत सुन्दर सुन्दर सोने के और हाथी दॉत के गहने वहॉ बिखर गये और धूप में चमक उठे।

चिन्ये बहुत ही दयालु थी सो वह यह अच्छी खबर अपनी सौतेली मॉ को देने के लिये दौड़ पड़ी। यह सब देख कर तो निकेची की लालची चमकीली ऑखें खुली की खुली रह गयीं।

उसी शाम उसने अपनी आलसी बेटी अडॉमा को नदी की आत्मा को ढूँढने के लिये नदी पर भेज दिया। वह उसको वहॉ मिल गयी। उसने उस आलसी लड़की को भी वही आशीर्वाद और वही सलाह दी जो उसने चिन्ये को दी थी। पर क्या अडॉमा ने उसकी बात सुनी? नहीं।

जब वह जंगल की उस झोंपड़ी में आयी जहॉ से उसको खोल उठाने थे तो उसने जो वह ले जा सकती थी वह सबसे बड़ा खोल उठाया। उस बुढ़िया की बेवकूफी भरी सलाह पर हॅसती हॅसती वह उस खोल को किसी तरह से घसीटती घसीटती अपने घर ले गयी।

जब वह घर आयी तो निकेची बहुत खुश थी कि उसकी बेटी कितनी अक्लमन्द थी कि वह कितना बड़ा खोल लायी थी। अब तो उसमें चिन्ये के खोल से भी ज़्यादा सामान निकलेगा।

यही सोचते हुए निकेची ने अपने अपनी रसोई के सबसे बड़े चाकू से उस खोल के दो टुकड़े कर दिये। पर जब वह खोल टूटा तो उसमें से क्या निकला?

बिजली की चमक और कड़क। एक बवंडर उठने लगा। उसने उनके घर के सारे बर्तन कपड़े कौड़ियॉ उठा कर बाहर अॅधेरे में फेंक दिये।

अडॉमा और निकेची अपना सामान लाने के लिये अकेली ही उसके पीछे दौड़ीं क्योंकि घमंडी होने की वजह से वे किसी से सहायता तो मॉग नहीं सकती थीं। पर अकेली होने की वजह से उनको उनमें से कुछ भी नहीं मिल सका। बवंडर बहुत तेज़ था और वह उन सबको बहुत जल्दी ही दूर ले गया।

पर चिन्ये को नदी की आत्मा के शब्द याद थे।

उसने अपने जवाहरात और गहने आदि अपने गॉव की भलाई के लिये लगा दिये। उसके बाद चिन्ये और उसका गॉव खुशी खुशी रहे।

11 किसान का बेटा शिकारी[37]

एक किसान अपनी पत्नी और एक बेटे अजाडी[38] के साथ रहता था। वे लोग बहुत अमीर तो नहीं थे पर उनको खाने की भी कभी कोई कमी नहीं हुई क्योंकि उनके ऊपर चाहे कितना भी समय खराब आया पर वह किसान अपने परिवार के लिये काफी खाना पैदा कर लेता था और साथ में थोड़ा सा बेच भी लेता था।

वे लोग अजाडी के बड़ा होने का इन्तजार कर रहे थे जब वह बड़ा हो कर उनके खेती के काम में हाथ बॅटायेगा क्योंकि अगर ज़्यादा आदमी खेत पर काम करेंगे तो पैदावार भी ज़्यादा होगी।

इसके अलावा अजाडी अपने माता पिता के सामने सामने अपनी रोटी कमाने का काम भी सीख लेगा।

पर अफसोस अजाडी जब बड़ा हुआ तो उसने अपने पिता से कह दिया कि वह किसान का काम नहीं करेगा बल्कि शिकारी बनेगा।

उसका पिता बोला — "शिकारी? शिकारी की ज़िन्दगी तो बहुत ही बेभरोसे वाली होती है बेटा। एक दिन तो तुमको खाना मिल जायेगा और पता चला कि कई दिनों तक तुम भूखे ही रहे।"

---

[37] The Farmer's Son Becomes a Hunter – a folktale from Nigeria, Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

[38] Ajadi – Nigerian name of a male

अजाडी की मॉ भी बोली — "हॉ बेटे, यह तो खतरे की ज़िन्दगी है क्योंकि तुमको तो यह भी पता नहीं चलेगा कि कब तुम्हारा किसी खतरनाक जानवर से सामना हो जाये।"

पर अजाडी का मन तो शिकारी बनने में ही लगा था सो उसने अपने माता पिता को बता दिया कि वह तो शिकारी ही बनेगा चाहे कुछ हो जाये। अजाडी को लग रहा था कि वह शिकारी बन कर ज़्यादा खुश रहेगा बजाय किसान बनने के।

हालॉकि उसके माता पिता उसके इस निश्चय से खुश नहीं थे फिर भी उन्होंने अपने बेटे की खुशी के लिये जितना वे दे सकते थे उतना उसको शिकारी बनने में सहारा देने का निश्चय किया। उन्होंने शिकारी बनने के लिये उसको जरूरी सामान भी दिलवा दिया।

इस तरह अजाडी एक शिकारी बन गया। वह एक होशियार और चतुर शिकारी था। कोई दिन ऐसा नहीं गया जिस दिन वह कोई शिकार ले कर घर न आता हो।

वह जो भी शिकार ले कर आता उसकी मॉ शाम को उसका लाया मॉस शाम के खाने में बनने वाले सूप में मिला देती।

लेकिन एक दिन उसकी किस्मत काम नहीं की। उस दिन उसकी ताकत और होशियारी किसी ने कुछ भी काम नहीं किया। वह जंगल में कई दिन तक घूमा। वह घने गहरे अॅधेरे जंगल में भी गया पर उस दिन उसे कोई शिकार ही नहीं मिला।

तभी उसको एक बहुत छोटी सी चिड़िया दिखायी दे गयी जो एक पेड़ की एक नीची डाल पर बैठी थी। हालॉकि वह इतने छोटे जानवरों पर कभी ध्यान नहीं देता था क्योंकि उनमें बहुत ही कम मॉस होता था पर आज का तो दिन ही अलग था।

आज अजाडी को कोई तो शिकार चाहिये था। उसने सोच लिया था कि आज उसे जो कोई शिकार भी मिल जायेगा वह उसे ही मारेगा। सो उसने चिड़िया की तरफ अपना निशाना साधा और उसको मार कर गिराने ही वाला था कि चिड़िया ने एक गाना गाया —

मैंने एक चिड़िया को कहते सुना कि वह उसको मारेगा

वह चिड़िया इसे बहुत ही मीठा गा रही थी। अजाडी ने इतना मीठा गाना अपनी ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं सुना था। और उसको यकीन था कि उसके माता पिता ने भी इतना मीठा गाना पहले कभी नहीं सुना होगा।

उसने सोच लिया कि इस चिड़िया को वह अपने माता पिता के पास अपने घर ले जायेगा। वह एक होशियार शिकारी था सो उसने वह चिड़िया बिना किसी मुश्किल के पकड़ ली और उसको अपने थैले में डाल लिया। थैले को उसने अपने कन्धे पर लटकाया और घर की तरफ चल पड़ा।

घर आ कर अजाडी ने थैले में से वह चिड़िया निकाली तो उस चिड़िया ने तुरन्त ही गाना शुरू कर दिया —

मैंने एक चिड़िया को कहते सुना कि वह उसको मारेगा

अजाडी के माता पिता ने भी इतना मीठा गाना पहले कभी नहीं सुना था सो जैसे ही उन्होंने यह गाना सुना तो वे तो नाचने लग गये। वे नाचते ही गये, नाचते ही गये और वे और भी देर तक नाचते रहते अगर अजाडी उस चिड़िया को वापस थैले में न रख देता।

जब अजाडी के पिता की सॉस में सॉस आयी तो उसके दिमाग में एक विचार आया। उनके गॉव का राजा काफी सालों से बहुत उदास रहता था।

पास के गॉवों से अच्छे से अच्छे कवि, गवैये, नाचने वाले और जोकर उसको खुश करने के लिये आते रहते थे पर कोई राजा को खुश नहीं कर सका था सो उसने सोचा कि शायद यह छोटी सी चिड़िया कुछ जादू कर सके और राजा के चेहरे पर हॅसी ला सके।

यह सोच कर अजाडी और उसके पिता उस चिड़िया को ले कर राजा के महल चल दिये। जब वे राजा के महल पहुॅचे तो महल के चौकीदारों ने उनको महल के दरवाजे पर ही रोक दिया और पूछा कि उनको राजा से क्या काम है।

किसान ने जवाब दिया कि वह राजा से मिलना चाहता था। चौकीदारों ने पूछा कि क्या राजा ने तुमको मिलने का समय दिया है?

किसान बोला — "नहीं तो।"

तो चौकीदारों ने तुरन्त ही कहा "तब तुम नहीं मिल सकते।"

किसान ने उनसे राजा से मिलने देने की प्रार्थना भी की तो उन चौकीदारों में से एक चौकीदार ने कहा — "अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैं तो राजा से दूर भाग जाता क्योंकि इस समय राजा बहुत ही खराब मूड में हैं और मुझे यकीन है कि तुम उनका गुस्सा सहना पसन्द नहीं करोगे।"

किसान तो लौटने को हुआ पर अजाडी ने अपने थैले में से वह चिड़िया निकाल ली। थैले से बाहर निकलते ही उस चिड़िया ने फिर गाना शुरू कर दिया, और उसका गाना सुनते ही चौकीदारों ने नाचना शुरू कर दिया।

चौकीदार नाचते रहे और अजाडी और उसके पिता उनकी नजर बचा कर महल में चले गये। वहॉ जा कर उन्होंने देखा तो राजा अपने सिंहासन पर बेचैन सा बैठा था।

उन दोनों को देख कर वह चिल्लाया — "तुमको अन्दर किसने आने दिया?"

अजाडी ने तुरन्त ही अपनी चिड़िया थैले में से निकाली और चिड़िया ने फिर गाना शुरू कर दिया।

मैंने एक चिड़िया को कहते सुना कि वह उसको मारेगा

यह गाना सुनते ही राजा उठा और नाचने लगा। और नौकर चाकर भी जो वहॉ राजा के पास खड़े थे वे भी नाचने लगे।

राजा की रानियॉ भी यह देखने के लिये अपने अपने कमरों से बाहर आ गयीं कि वहॉ क्या हो रहा था। सबको नाचते देख कर उन्होंने भी नाचना शुरू कर दिया।

राजकुमार और राजकुमारियॉ भी वहॉ आ गये और उन्होंने भी नाचना शुरू कर दिया। इस तरह सारे महल का तो माहौल ही बदल गया।

जहॉ सारे समय उदासी छायी रहती थी वहॉ अब सब नाच रहे थे। सारे लोग तब तक नाचते रहे जब तक वे नाचते नाचते थक नहीं गये।

सूरज डूबने वाला था। अजाडी और उसके पिता घर वापस जाना चाहते थे पर राजा उस चिड़िया को उनको ले जाने देना नहीं चाहता था। राजा उस चिड़िया से इतना खुश हुआ कि उसने उस चिड़िया के बदले में किसान को अपना आधा राज्य दे दिया।

इस तरह किसान और उसकी पत्नी अपने बेटे अजाडी के शिकारी बनने की वजह से इतने अमीर हो गये।

12 तीन भाई और खीर का बर्तन[39]

एक बार तीन भाई नाइजीरिया के एक घने बरसाती जंगल से गुजर रहे थे। वे लोग सारा दिन पैदल चलते रहे थे और अब रात होने वाली थी।

अब उनको रात को सोने के लिये कोई ठीक सी जगह चाहिये थी। एक ऐसी जगह जहॉ वे जंगली जानवरों की चिंघाड़ और भयानक आवाजों से दूर रह सकें। उनकी अच्छी किस्मत से रात का अँधेरा छाने से पहले ही उनको एक अकेली झोंपड़ी दिखायी दे गयी।

जब वे वहॉ पहुँचे तो एक बूढ़ी दयालु स्त्री ने उनको घर में आने को कहा और रात गुजारने के लिये जगह दी। उसने उनको वह खीर भी खाने को दी जो वह एक लोहे के बर्तन में लकड़ी की आग पर बना रही थी।

पर वे बहुत थके थे और वे उस बुढ़िया के ऊपर बोझ भी नहीं बनना चाहते थे जो अकेली रहती थी और जिसने केवल अपने अकेले के लिये ही खीर बनायी थी सो उन्होंने उसकी खीर खाने के लिये मना कर दिया।

---

[39] Three brothers and the Pot of Porridge – a folktale from Nigeria, Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

बुढ़िया ने उन तीनों को बिछाने के लिये चटाइयॉ दीं और उनको एक कमरा दिखा दिया जिसमें वे सो सकते थे। जल्दी ही उस झोंपड़ी में चारों तरफ अँधेरा हो गया और सब लोग सो गये।

कभी किसी समय रात में उन तीनों में से सबसे छोटे भाई की ऑख खुल गयी क्योंकि वह बहुत भूखा था। जब उसके बड़े भाइयों ने उस बुढ़िया की दी हुई खीर नहीं खायी थी तो उसने भी मना कर दिया था पर वह वाकई में बहुत भूखा था।

सो वह रसोईघर में यह देखने गया कि अभी वहॉ कुछ खीर बची थी या नहीं। उसने देखा कि वहॉ एक आदमी के लिये काफी खीर थी।

ऐसा लग रहा था कि बुढ़िया ने उस खीर में से खीर बिल्कुल ही नहीं खायी थी और उसको अगले दिन के लिये रख दिया था। उसने सोचा अगर वह उसमें से थोड़ी सी खीर खा लेगा तो दूसरों के लिये तो कोई बात नहीं है पर उसका पेट जरूर भर जायेगा।

सो उसने उसमें से थोड़ी सी खीर खा ली। फिर थोड़ी सी और खायी और फिर थोड़ी सी और, और वह तब तक उसमें से खीर खाता ही रहा जब तक कि वह खीर पूरी खत्म नहीं हो गयी।

खाली बर्तन देख कर उसको अपनी बेवकूफी का अन्दाजा हुआ कि यह उसने क्या कर दिया सो उसने उस बर्तन में कुछ पत्थर रखे और उसको ढक दिया। उसने सोचा कि बुढ़िया को तो इसका पता नहीं चलेगा और जा कर सो गया।

सुबह को तीनों भाई जल्दी ही उठ गये क्योंकि उनको अभी और आगे भी जाना था। उन्होंने बुढ़िया को उस मेहमानदारी के लिये धन्यवाद दिया और विदा कह कर वे चल दिये।

तीनों भाइयों के जाने के थोड़ी ही देर बाद बुढ़िया को पता लग गया कि उसका खीर का बर्तन तो खाली पड़ा था और उसमें खीर की बजाय पत्थर रखे थे।

हालॉकि वह बुढ़िया काफी बुढ़िया थी पर फिर भी वह काफी तेज़ भाग सकती थी, या कहना चाहिये कि वह जवानों से भी ज़्यादा तेज़ भाग सकती थी सो जल्दी ही उसने उन तीनों भाइयों को पकड़ लिया।

उसने उन तीनों के ऊपर अपनी खीर चुराने का और खीर के बर्तन में पत्थर भरने का इलजाम लगाया। इस पर सबसे बड़े भाई ने अपनी और अपने दोनों भाइयों की तरफ से कहा कि उन्होंने यह काम नहीं किया।

पर बुढ़िया को पूरा यकीन था कि यह काम उन्हीं में से एक का है सो उसने उनको एक इम्तिहान देने के लिये कहा। वे सब पास की एक नदी के किनारे गये। वहॉ उस नदी के ऊपर नदी पार करने के लिये एक लकड़ी का लट्ठा पड़ा हुआ था।

उसने उन सबको बारी बारी से उस लट्ठे पर से जा कर नदी पार करने को कहा। उसने उनको एक गाना भी सिखाया जिसे उनको उस लट्ठे पर से गाते हुए जाना था —

अगर मैंने इस स्त्री की खीर खायी है तो समुद्र मुझको ले ले, तो समुद्र मुझको ले ले...

दोनों बड़े भाइयों ने तो यह काम किया नहीं था सो वे तो आराम से यह गाना गाते हुए नदी पार कर गये पर सबसे छोटा भाई जब उस नदी को पार कर रहा था तो वह बहुत डरा हुआ था। कई बार उसके कदम उस लट्ठे पर डगमगाये और आखिर वह नदी में गिर पड़ा और बह गया।

इस तरह उसके झूठ बोलने का यह नतीजा निकला।

13 चिपमंक के ऊपर धारी क्यों[40]

बहुत पहले चिपमंक गिलहरी[41] भी दूसरी गिलहरियों की तरह ही था, यानी उसके शरीर पर भी कोई धारी नहीं थी। यह कहानी यह बताती है कि उसको ये धारियॉ कैसे मिलीं जैसी कि आज हम उसके शरीर पर देखते हैं।

एक बार एक जंगल में जहॉ बहुत से जानवर रहते थे इतनी ज़्यादा बारिश हुई कि वह जंगल बहुत घना हो गया। और इतना घना हो गया कि जानवरों को जंगल में चलना भी मुश्किल हो गया।

सो उन्होंने इस मुश्किल को आसान करने का तरीका ढूँढने के लिये एक मीटिंग की। उस मीटिंग में यह तय हुआ कि जो कोई भी जानवर इस जंगल में चलेगा उसको जंगल के रास्ते साफ करने के लिये पैसा देना पड़ेगा।

चिड़ियें जो हवा में उड़ती थीं उनको यह टैक्स माफ था क्योंकि वे तो उस जंगल की जमीन इस्तेमाल ही नहीं करती थीं।

चिपमंक साइज़ में तो बहुत छोटा था पर अपने जिद्दीपन में वह बहुत अक्खड़ था। उसने दूसरे जानवरों से कहा — "मैं कोई टैक्स

[40] How the Chipmunk Got Stripes? – a folktale from Nigeria, Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

[41] A type of squirrel with stripes mostly found in North America. See its picturte above. It is very strange that here at this Web Site its country is given Nigeria.

नहीं देने वाला चाहे इसका मतलब यही क्यों न हो कि मैं जमीन पर नहीं चल सकता।"

सो उसने पेड़ों पर ही एक शाख से दूसरी शाख पर कूद कर इधर उधर जाना आना शुरू कर दिया। अब वह जमीन को छूता ही नहीं था और इस तरह से वह उस जंगल की जमीन का इस्तेमाल ही नहीं कर रहा था।

एक जानवर बोला — "आज नहीं तो कल और कल नहीं तो परसों, एक न एक दिन तो उसको जमीन पर आना ही पड़ेगा। तब वह टैक्स देगा।" जानवरों ने यह सुना और अपने अपने काम पर चले गये।

कई दिन बीत गये पर चिपमंक ने जमीन को नहीं छुआ। सारे जानवरों ने अपना अपना टैक्स दे दिया। यहॉ तक कि सबसे होशियार कछुआ भी इस टैक्स से नहीं बच पाया। पर चिपमंक पेड़ों से नीचे नहीं आया।

कुछ जानवर उसके लिये बहुत दुखी थे। वे बोले — "शायद उसके पास टैक्स देने के लिये पैसा नहीं होगा इसी लिये वह टैक्स नहीं दे पा रहा है। नहीं तो वह बेचारा ज़िन्दगी भर के लिये पेड़ों पर ही क्यों रहता और जमीन पर न आने का दुख सहता।

यह हम लोगों के लिये बड़े दुख की बात है कि हममें से एक जानवर इस तरह की ज़िन्दगी अपना ले।"

सो बहुत सारे जानवरों ने चिपमंक के लिये कुछ पैसे इकट्ठा करने का विचार किया।

उन्होंने इरोको पेड़ के नीचे एक घड़ा[42] रख दिया और सब जानवरों को बोल दिया कि जो कोई भी जानवर चिपमंक की सहायता करना चाहे वह उस घड़े में एक कौड़ी[43] तक भी डाल सकता था जब तक कि उसमें उसके टैक्स के लायक पैसे जमा न हो जायें।

एक चिड़िया ने चिपमंक से यह सब कहा तो चिपमंक को यह सब सुन कर बड़ा मजा आया। उसने कहा इसका मतलब तो यह हुआ कि उन जानवरों के पास पैसे को इस्तेमाल करने का इससे अच्छा और कोई तरीका ही नहीं है कि वे मेरा टैक्स दें।

जब रात हुई तो चोरी छिपे वह इरोको पेड़ के नीचे गया और कौड़ियों का वह घड़ा ले कर चलता बना।

अगली सुबह जब जानवरों को उसके इस गन्दे कारनामे के बारे में पता चला तो वे बहुत परेशान हुए। उन्होंने चिपमंक को पकड़ने की बहुत कोशिश की पर उनमें से कोई भी जानवर उसको न पकड़ सका। चिपमंक पेड़ों की शाखों पर बहुत तेज़ी से कूद कर इधर से उधर जा रहा था।

---

[42] Translated for the word “Gourd”. A gourd is a hard covering of big pumpkin like fruit. It may be used to keep dry or wet things after it is dried. See its picture above.

[43] Cowrie shell – a type of seashells. The currency in use at that time. See its picture above. Below it is the picture of “Gourd”.

तब जानवरों ने चिपमंक को जंगल से बाहर निकाल दिया क्योंकि उसने उनके विश्वास और दया को धोखा दिया था। जंगल से निकलने के बाद चिपमंक आदमियों के बीच रहने चला गया।

उसके बाद जंगल में जानवरों की कई मीटिंग हुई और उनमें से एक मीटिंग में किसी ने पूछा — "क्या किसी को मालूम है कि चिपमंक ने उन पैसों का क्या किया?"

तो दूसरे ने जवाब दिया कि वह उस पैसे को किसी अच्छे इस्तेमाल में नहीं लाया बल्कि उन पैसों से उसने धारियॉ खरीद लीं। सबने अपना सिर हिला कर उसके लिये अफसोस प्रगट किया। पर वह कर क्या सकते थे। जैसी चिपमंक की इच्छा।

मुफ्त का मिला हुआ पैसा ऐसे ही बेकार के कामों में खर्च होता है।

14 कीग्बो कीग्बा और आत्माऐं[44]

यह बहुत पहले की बात है कि नाइजीरिया देश के योरुबा लोगों के एक छोटे से गॉव में कीग्बो कीग्बा[45] नाम का एक आदमी रहता था। और दूसरे गॉव वालों की तरह वह भी एक मेहनती किसान था पर उसके अन्दर एक कमी थी और वह यह कि वह जिद्दी बहुत था।

असल में योरुबा भाषा में उसके नाम का मतलब भी यही है कि "जो किसी की न सुने और किसी की न माने"। सो वह न तो किसी की सुनता था और न ही किसी की सलाह मानता था।

जैसा कि पुरानी योरुबा दुनियॉ में होता था, इस गॉव में भी आदमी और आत्माऐं दोनों एक साथ ही रहते थे। पर आपस में कोई झगड़ा न हो इसलिये इन दोनों ने एक नियम बना रखा था कि आत्माऐं जमीन पर किसी खास दिन ही घूमेंगी और उस दिन आदमी लोग घर में रहेंगे।

तुमने ठीक अन्दाजा लगाया। अब यह कीग्बो न तो किसी की बात सुनता था और न ही किसी की बात मानता था सो उसने यह नियम भी नहीं माना।

---

[44] Keegbo Keegba and the Spirits – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

[45] Keegbo Keegba – a Nigerian name

एक दिन जिस दिन वे आत्माएँ उस गॉव में आ कर घूमने वाली थीं उसने जिद की कि वह उस दिन भी अपने रोज के काम पर जायेगा।

पहले दिन जब वे आत्माऐं आने वाली थीं तो सब लोगों को बोला गया कि जब वे गॉव में आयें तो वे घर में ही रहें बाहर न निकलें पर कीग्बो ने अपना हल और कटलस[46] उठाया और अपने खेत की तरफ चल दिया।

लोगों ने उसको बाहर जाने से बहुत रोका पर वह अपनी आदत के अनुसार नहीं माना। वहॉ पहुँच कर उसने अपनी जमीन जोतनी और याम[47] बोना शुरू कर दिया।

उसने अभी कुछ ही देर काम किया था कि उसे अपने चारों तरफ कुछ आसमानी आवाजें सुनायी पड़ीं।

एक बोला — "तुम कौन हो और यहॉ क्या कर रहे हो?"

कीग्बो कीग्बा ने जवाब दिया — "मेरा नाम कीग्बो कीग्बा है और मैं याम बोने के लिये अपना खेत जोत रहा हूँ।"

"अच्छा तो इस काम में हम तुम्हारी सहायता करते हैं।"

---

[46] Cutlass or matchet – is a kind of very long blade knife, 1 1/2 feet to 2 feet long, which Nigerians use to cut grass. See its picture above.

[47] Yam is a kind of tuber vegetable. It is staple food of Nigeria. Sometimes it weighs even up to 10 pounds each. See its picture above.

अचानक ही आवाजें आनी बन्द हो गयीं और सैंकड़ों हल वहॉ पर दिखायी देने लगे। उन्होंने उसके खेत को जोतना शुरू कर दिया। कुछ मिनटों में ही उसका सारा खेत जुत गया और वह अपने घर वापस चला गया।

फिर एक दिन जब आत्माऐं आने वालीं थीं तो फिर लोगों को अपने अपने घरों में रहने के लिये कहा गया। पर उस दिन भी कीग्बो नहीं माना और वह अपने खेत पर याम बोने के लिये चला गया।

इस बार भी उसने अपना काम शुरू ही किया था कि उसको फिर से आसमानी आवाजें आनी शुरू हो गयीं।

"तुम कौन हो और यहॉ क्या कर रहे हो?"

कीग्बो बोला — "मैं कीग्बो कीग्बा हूँ और अपने खेत में अपने याम बो रहा हूँ।"

एक आवाज ने कहा — "अच्छा तो याम बोने में हम तुम्हारी सहायता करते हैं।"

और कुछ ही मिनटों में उन्होंने उसके सारे याम बो दिये। कीग्बो का काम खत्म हो गया था सो वह अपना काम खत्म कर के फिर से जल्दी ही अपने घर वापस चला गया।

तीसरी बार जब आत्माऐं आयीं और सारे लोगों को घर में रहने के लिये कहा गया तो कीग्बो अपने याम खोदने के लिये अपने खेत पर चल दिया।

जैसे ही उसने अपना खेत खोदना शुरू किया तो उसे फिर वही जानी पहचानी आवाजें सुनायी दीं और उनमें से एक आवाज ने पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?"

कीग्बो ने जवाब दिया — "मैं कीग्बो कीग्बा हूँ और अपने याम निकाल रहा हूँ।"

उस आवाज ने कहा — "अच्छा तो याम निकालने में हम तुम्हारी सहायता करेंगे।"

और कुछ ही मिनटों कीग्बो का सारा याम खुदा पड़ा था और खेत में उनका एक बड़ा सा ढेर लगा हुआ था।

कीग्बो ने पहले अपना एक याम देखा तो उसका वह याम अभी ठीक से पका नहीं था और उखाड़ने लायक नहीं था। पर फिर उसने और याम भी देखे तो उनमें से भी कोई भी याम अभी तक पका नहीं था और उखाड़ने लायक नहीं था।

असल में एक अच्छे किसान की तरह उसको पहले अपने कुछ याम उखाड़ कर देखने चाहिये थे कि वे अभी उखाड़ने लायक हैं भी या नहीं। उनको अभी उखाड़ लेना चाहिये या पकने के लिये अभी कुछ समय और देना चाहिये।

पर अब तो बहुत देर हो चुकी थी और उसकी याम की सारी फसल इन आत्माओं की वजह से खराब हो चुकी थी।

कीग्बो कीग्बा दुख से रो पड़ा और अपना सिर अपने हाथों में दे कर बैठ गया।

आत्माओं ने फिर पूछा — "तुम कौन हो और यहाँ क्या कर रहे हो?"

कीग्बो बोला — "मैं कीग्बो कीग्बा हूँ और दुख से अपना सिर पीट रहा हूँ।"

आत्माओं ने कहा — "अच्छा तो इस काम में हम तुम्हारी सहायता करते हैं।" और उन्होंने अपने सैंकड़ों हाथों से कीग्बो का सिर पीटना शुरू कर दिया।

बेचारा कीग्बो किसी तरह से वहाँ से निकल कर भागा। अगर वह अपनी अक्लमन्दी से यह कहता कि "ये मेरे याम अभी कच्चे हैं मैं इनको ठीक से पकाना चाहता हूँ।" तो शायद हो सकता है कि वे आत्माऐं उसको उनके पकाने में सहायता कर देतीं पर अब क्या हो सकता था।

उसने तो अपने पैरों पर अपने आप ही कुल्हाड़ी मार ली थी। उसने अपने याम भी खोये और मार भी खायी।

15 चिड़िया ने इयावो का बच्चा चुराया[48]

एक आदमी की दो पत्नियॉ थीं। उसकी पहली पत्नी का नाम इयाले था और दूसरी पत्नी का नाम इयावो[49] था। इयाले का बर्ताव इयावो के साथ अच्छा नहीं था। वह हमेशा इयावो को तंग करती रहती थी।

उसने इयावो को इतना ज़्यादा तंग किया हुआ था कि न तो वह अपने बच्चों को अच्छा खाना खिला सकती थी और न ही वह उनको अच्छे कपड़े पहना सकती थी। इयावो जितनी ज़्यादा अच्छी थी इयाले उतनी ही ज़्यादा खराब थी।

एक बार उस आदमी की दूसरी पत्नी इयावो को आग जलाने के लिये जंगल से लकड़ी लानी थी। इयाले तो उसके बच्चे को देखती नहीं सो उसको अपने बच्चे को अपने साथ ही जंगल ले जाना पड़ा।

जंगल जा कर इयावो ने अपने बच्चे को एक बहुत ऊॅचे पेड़ के नीचे लिटा दिया और खुद वह लकड़ी इकट्ठा करने चली गयी। थोड़ी देर में उसकी लकड़ियॉ इकट्ठी हो गयीं तो वह अपने बच्चे को लेने के लिये उस पेड़ के पास लौटी।

वहॉ आ कर उसने देखा तो वहॉ तो उसका बच्चा नहीं था। वह चिल्ला पड़ी — "कहॉ गया मेरा बच्चा? किसने उठाया मेरा

[48] A Bird Steals Iyawo's Baby – a folktale from Nigeria, Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php
[49] He had two wives – the first wife's name was Iyale and the second wife's name was Iyawo.

बच्चा?" वह बेचारी अपने बच्चे को ढूँढने के लिये रोती चिल्लाती जंगल में इधर उधर भागी मगर उसको अपना बच्चा आस पास में कहीं भी दिखायी नहीं दिया।

तब उसने ऊपर देखा तो वहाँ पेड़ के बहुत ऊपर एक चिड़िया बैठी थी और उस चिड़िया के पंजों में उसका बच्चा था। वह ज़ोर से चिल्लायी — "ओ पेड़ के ऊपर बैठी चिड़िया, तूने मेरा बच्चा क्यों लिया। मेरा बच्चा मुझे वापस दे।"

चिड़िया ने तुरन्त ही अपने पंजों में दबी एक पोटली नीचे फेंक दी। इयावो ने भी तुरन्त ही वह पोटली उठा ली। पर उस पोटली में तो उसका बच्चा नहीं था। उस पोटली में तो मूँगे के मोती[50] भरे हुए थे।

इयावो फिर चिल्लायी — "ओ चिड़िया, मेरा बच्चा मुझे वापस कर। मैं इन मूँगे के मोतियों का क्या करूँगी, मेहरबानी कर के मेरा बच्चा मुझे वापस कर।"

चिड़िया गाते हुए बोली — "ये मूँगे के मोती बच्चे से ज़्यादा कीमती हैं, इयावो।"

[50] Beads of coral – coral is a sea animal and is found in many colors. When the animal is dead its house becomes empty. The same house is used to make many shapes. It is one of the nine valuable gems. See the picture of coral above.

पर इयावो को तो अपना बच्चा चाहिये था। वह इन मूँगे के मोतियों का क्या करती। वह चिड़िया की सुनने वाली नहीं थी। उसने चिड़िया से फिर अपना बच्चा वापस देने के लिये कहा।

चिड़िया ने फिर एक पोटली नीचे फेंक दी। इयावो फिर उसको लपकने दौड़ी। पर इस पोटली में भी उसका बच्चा नहीं था।

इस पोटली में तो सोना भरा था। सोना देख कर इयावो फिर रो पड़ी और बोली — "मैं इस सोने का क्या करूँगी, चिड़िया। मुझे मेरा बच्चा चाहिये। मुझे मेरा बच्चा वापस कर ओ चिड़िया।"

अबकी बार चिडिया ने एक और पोटली फेंकी। जब इयावो ने उस पोटली को खोल कर देखा तो उसमें बहुत सारे वेशकीमती जवाहरात थे। उनको देख कर वह फिर ज़ोर से रो पड़ी।

वह फिर चिल्लायी — "मैं इन जवाहरातों का क्या करूँगी, मेहरबानी कर के मेरा बच्चा मुझे वापस कर ओ चिड़िया।"

अबकी बार चिड़िया उड़ कर नीचे आयी और उसने इयावो के बच्चे को पेड़ के नीचे उसी जगह पर रख दिया जहाँ से उसने उसे उठाया था।

वह बोली — "इयावो, तुमने साबित कर दिया कि तुम लालची नहीं हो इसलिये तुम ये सब पोटलियाँ भी रख सकती हो और यह लो अपना बच्चा भी लो और खुश रहो।"

अब इयावो के पास न केवल उसका बच्चा था बल्कि उसके पास मूँगे के मोती, सोने और जवाहरात के तीन थैले भी थे। वह खुशी खुशी घर वापस चली आयी।

अब जब इयाले ने इयावो को इतने सब खजाने के साथ आते देखा तो उससे पूछा कि उसके पास इतनी सारी चीज़ें कहाँ से आयीं तो इयावो ने उसको सब सच सच बता दिया।

सो इयाले ने भी अपने लिये इतना सारा खजाना इकट्ठा करने का सोचा क्योंकि वह इयावो के खजाने में से हिस्सा बाँटने से सन्तुष्ट नहीं होती बल्कि उसको तो इयावो से भी ज़्यादा चाहिये था।

अगले दिन उस आदमी की पहली पत्नी इयाले भी अपने बच्चे को ले कर जंगल गयी। उसने भी अपने बच्चे को उसी ऊँचे पेड़ के नीचे लिटा दिया जहाँ से उस चिड़िया ने इयावो का बच्चा उठाया था।

फिर वह वहाँ से चली गयी। वह कुछ देर तक जंगल में घूमती रही जैसे कि वह आग जलाने के लिये लकड़ी लेने के लिये आयी हो पर ऐसा कुछ नहीं था।

वह तो केवल इसलिये आयी थी कि चिड़िया उसके बच्चे को उठा ले और फिर उसको भी इयावो की तरह से बहुत सारे जवाहरात और सोना दे जाये।

वह जब जंगल में घूम घाम कर वापस आयी तो उसका बच्चा भी वहाँ से जा चुका था।

यह देख कर वह बहुत खुश हुई। वह रोयी नहीं, वह चिल्लायी भी नहीं कि मेरा बच्चा कहाँ है। उसने तो सीधे पेड़ के उपर की तरफ देखा और वहाँ देखा एक चिड़िया को जिसने अपने पंजों में उसके बच्चे को दबा रखा था।

वह उस चिड़िया से ज़ोर से बाली — "ओ चिड़िया, मुझे मूँगे के मोती दो, सोना दो और जवाहरात दो और फिर मुझे मेरा बच्चा दो।" चिड़िया ने एक गठरी नीचे फेंक दी।

इयाले ने बड़ी उत्सुकता से उसे उठा लिया। पर यह क्या? उस गठरी में न तो मूँगे के मोती थे, न ही सोना था और न ही जवाहरात थे। उसमें तो केवल पत्थर भरे थे।

वह फिर चिल्लायी — "अरी ओ बेवकूफ चिड़िया, मुझे मूँगे के मोती दो, सोना दो और जवाहरात दो और फिर मेरा बच्चा मुझे दो।" इस बार चिड़िया ने कूड़े से भरी एक पोटली नीचे फेंक दी।

इयाले ने यह कूड़े की पोटली देख कर फिर उससे यह कह कर चिल्लायी — "मुझे मूँगे के मोती दो, सोना दो और जवाहरात दो और फिर मेरा बच्चा मुझे दो ओ चिड़िया।"

इस बार उस चिड़िया ने इयाले के बच्चे की हड्डियों से भरी एक पोटली फेंक दी।

इयाले तो उस पोटली को देख कर पागल सी हो गयी। उसका तो खजाना भी गया और बच्चा भी गया। वह बेचारी रोती

चिल्लाती इयावो को गालियॉ देती हुई खाली हाथ घर वापस लौट आयी।

जो लोग लालची होते हैं उनका यही हाल होता है। वे छोटी छोटी चीज़ों के लालच में अपनी बड़ी बड़ी चीज़ें भी गॅवा बैठते हैं। सच में लालच बुरी बला है।

16 दो बहिनें और एक बूढ़ा[51]

बहुत दिन पहले की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में एक आदमी अपनी दो पत्नियों और दो बेटियों के साथ रहता था। उसकी दोनों पत्नियों की एक एक बेटी थी।

बिसी उसकी पहली पत्नी की बेटी थी और रन्ती[52] उसकी दूसरी पत्नी की बेटी थी। बिसी रन्ती से केवल कुछ ही महीने बड़ी थी।

सब लोग साथ साथ ही रहते थे सो उसकी दोनों बेटियॉ आपस में खूब खेलती थीं। पर बिसी को अपनी छोटी बहिन को छेड़ने में बहुत मजा आता था जैसे उसकी मॉ को रन्ती की मॉ को छेड़ने में आता था।

जब बिसी रन्ती को छेड़ती तो रन्ती बेचारी रोती हुई अपनी मॉ के पास चली जाती और कभी कभी कहती कि काश वह भी बिसी को इसी तरह छेड़ सकती जैसे वह उसे छेड़ती है।

पर उसकी मॉ उसको समझाती कि बुरे लोगों के साथ बुरा बर्ताव नहीं करना चाहिये। इससे कोई भलाई नहीं होती। सो रन्ती हमेशा ही अच्छी रहने की कोशिश करती और बिसी से हमेशा ही प्यार से रहती चाहे वह उसके साथ कितना भी बुरा बर्ताव क्यों न करती।

---

[51] Two Sisters and an Old man – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

[52] Bisi and Ranti – names of Nigerian girls

एक बरसाती दिन रन्ती की मॉ बीमार पड़ी और चल बसी। अब रन्ती बिन मॉ की हो गयी थी सो बिसी अब उससे किसी भी तरह का बर्ताव करने के लिये आजाद थी। रन्ती भी अपनी अच्छाई की वजह से अब बिसी का सारा काम करने लगी थी।

बिसी आलस में पड़ी रहती। कभी कपड़े पहन लेती, कभी खा लेती, कभी सो जाती और कभी अपनी दोस्तों के घर हो आती। जबकि रन्ती सुबह बहुत जल्दी उठती, मुर्गे की बॉग से भी पहले।

एक घड़ा वह अपने सिर पर रखती और दूसरा अपनी बॉह में लेती और नदी से परिवार के लिये पानी भरने जाती। एक बड़ा सा बर्तन उसके घर में रखा था जिसको उसे भरना होता था। उसको पानी से भरने के लिये उसको नदी के कई चक्कर काटने पड़ते।

उसके बाद वह पाम की पत्तियों से बनी झाड़ू से घर का ऑगन साफ करती और फिर नाश्ते के लिये याम[53] छीलती। इस तरह उसके काम शाम तक चलते ही रहते।

शाम तक वह काम करते करते इतना थक जाती कि बस अपनी चटाई पर लेटते ही सो जाती। वह सारे दिन इतना काम करती थी कि उसको अपने बारे में सोचने का भी मौका नहीं मिलता। और यह सब रोज ही चलता।

[53] Yam is a root vegetable found in Nigeria abundantly. It is their staple food. One yam piece can sometimes weigh up to 10 pounds. See its picture above.

एक दिन जब वह रोज की तरह नदी पर पानी भरने गयी तो उसने देखा कि एक बूढ़ा आदमी नदी के किनारे बैठा हुआ है। उसके सारे बदन पर घाव थे और वह सचमुच में बहुत दर्द में लग रहा था।

रन्ती उसको इतने दर्द में देख कर उसके पास गयी और उससे पूछा — "बाबा, तुम ठीक तो हो न? तुमको कुछ चाहिये?"

उसको थोड़ा पानी चाहिये था सो रन्ती ने उसको पानी दिया फिर उसने उसके घाव धोये।

बूढ़ा उस बच्ची की इस सेवा से बहुत खुश हुआ और बोला — "तुम्हारा दिल बहुत अच्छा है बेटी। तुमको ज़िन्दगी में बहुत अच्छी अच्छी चीज़ें मिलनी चाहिये।"

फिर उसने रन्ती को नदी पार एक बगीचे में जाने के लिये कहा। उसने उसको बताया कि वहाँ उसको दो पेड़ मिलेंगे – एक सुनहरे फल वाला जिसको उसे बिल्कुल नहीं छूना है और दूसरा सड़े हुए फल वाला।

सड़े हुए फल वाले पेड़ से उसको एक सड़ा हुआ फल ले लेना है और उसको घर ले जा कर तोड़ना है। जैसा बूढ़े ने उसे बताया था उसने वैसा ही किया। जब उसने वह फल तोड़ा तो उसमें से तो बहुत सारा खजाना निकल पड़ा।

उसका सारा कमरा उस खजाने से भर गया। रन्ती ने तो न कभी ऐसा खजाना सोचा था और न कभी ऐसा खजाना देखा था।

जब बिसी को पता चला कि रन्ती को खजाना मिला है तो उसने रन्ती को यह बताने पर मजबूर किया कि वह उसे यह बताये कि वह खजाना उसे कहॉ से मिला था। रन्ती ने उसे बताया कि उसको वह खजाना कैसे मिला था।

अगली सुबह जब मुर्गा कई बार बॉग दे चुका तब बिसी उठी और यह सोचते हुए कि वह बूढ़ा अभी भी नदी किनारे बैठा होगा उसने भी पानी लाने के लिये एक घड़ा उठाया और नदी की तरफ चल दी।

उसकी खुशकिस्मती से जैसा कि रन्ती ने बताया था वह बूढ़ा अभी भी वहॉ बैठा हुआ था। वह उसके पास गयी और उससे पूछा — "जादू के बगीचे का रास्ता किधर से जाता है?"

बूढ़े ने उसको बगीचे का रास्ता बता दिया और यह भी बता दिया कि वह वहॉ से सड़ा हुआ फल उठाये सुनहरा वाला फल नहीं।

बिसी ने अपना घड़ा वहीं छोड़ा और तुरन्त ही बगीचे जाने वाले रास्ते पर चल दी। वहॉ उसको दोनों पेड़ दिखायी दे गये सुनहरे फल वाला भी और सड़े हुए फल वाला भी।

वह सोचने लगी कि यह बूढ़ा क्या सोचता है कि मैं क्या बिल्कुल ही बेवकूफ हूँ। उसने मुझे सड़ा हुआ फल उठाने के लिये क्यों कहा मुझको तो सुनहरा फल ही उठाना चाहिये।

उसने जितने उसके हाथों में आ सकते थे और जितने वह घर ले जा सकती थी उतने सुनहरे फल उठा लिये और उन सबको ले कर वह घर आ गयी।

घर आ कर वह अपने कमरे में गयी और उन फलों के तोड़ने से पहले उस कमरे का दरवाजा बन्द कर लिया क्योंकि वह यह नहीं चाहती थी कि उसके खजाने का किसी और को पता चले।

उसने वह सारे फल जमीन पर ज़ोर से फेंके ताकि वे सब एक साथ टूट जायें। वे सब एक साथ ही टूट भी गये पर बजाय खजाना निकलने के उन फलों में से तो बहुत सारे कीड़े मकोड़े और रेंगने वाले जानवर निकल पड़े।

यह देख कर तो वह दंग रह गयी और बहुत डर गयी और उनसे बचने के लिये बाहर भागने की कोशिश करने लगी। पर उसके कमरे का दरवाजा तो बन्द था।

बड़ी मुश्किल से वह किसी तरह दरवाजे तक पहुँच पायी। उसने दरवाजा खोला और फिर किसी तरह बाहर की तरफ भाग कर उसने उन जानवरों से किसी तरह अपनी जान बचायी।

लालच बुरी बला है और नकल के लिये भी अक्ल और नम्रता चाहिये।

17 ओलोमुरोरो ने बच्चों को कैसे कमजोर किया[54]

ओलोमुरोरो एक बहुत ही लालची राक्षस था जो बच्चों को अपना शिकार बनाता था। हालॅकि वह देखने में कोई बहुत अच्छा नहीं था पर फिर भी बच्चे उससे डरते नहीं थे क्योंकि वह बहुत मीठा गाता था। वह बच्चों के पास गीत गाता हुआ जाता और उनका खाना ले कर चला जाता और बच्चे बेचारे भूखे रह जाते।

टोजो[55] ऐसे ही बच्चों में से एक छोटा सा बच्चा था जिसको ओलोमुरोरो ने अपना शिकार बनाया। टोजो का पिता एक किसान था और उसकी मॉ एक दूकान चलाती थी।

हर सुबह जैसे ही मुर्गा बॉग देता टोजो का पिता उठ कर खेतों पर चला जाता और टोजो की मॉ उसके लिये नाश्ते में अकारा[56] बनाती और दोपहर के खाने के लिये फूफू और इगूसी सूप[57] बनाती।

इस तरह अपने बेटे के लिये खाने का इन्तजाम करने के बाद वह भी बाजार चली जाती जहॉ वह अपने खेत में पैदा हुई चीज़ें बेचती थी।

---

[54] How Olomuroro Made Children Thin? – a folktale from Nigeria, Africa.
Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

[55] Tojo – name of the Nigerian child

[56] Black-eyed beans or red beans are soaked, its skin is removed, and the beans are ground. Some onion, green pepper and salt is added to the paste and its small balls are fried in hot oil. That is called Akara. It is very common food in Nigeria. See its picture above.

[57] Fu Fu and Igussi soup are very common food of Nigerians. See their picture above below Akara.

हर सुबह जब टोजो अपने नाश्ते के लिये तैयार होता तो ओलोमुरोरो गाता हुआ वहॉ आ जाता और टोजो उससे बात करने लग जाता —

"ओलोमुरोरो आओ, आओ"
"तुम्हारी मॉ कहॉ है?"
"मेरी मॉ बाजार गयी है।"
"तुम्हारे पिता कहॉ हैं?"
"मेरे पिता खेत पर गये हैं।"

यह गीत चलता रहता और फिर ओलोमुरोरो उससे पूछता तुम्हारा खाना कहॉ है और टोजो उसको वह जगह दिखा देता जहॉ उसकी मॉ उसका नाश्ता और खाना रख कर जाती।

ओलोमुरोरो वहॉ से उसका सारा खाना ले कर खा जाता और टोजो के लिये वह उसमें से ज़रा सा भी नहीं छोड़ता।

दिन इसी तरह से निकलते चले गये और टोजो दिन ब दिन खाने के बिना दुबला होता चला गया। उसके माता पिता ने यह सब देखा तो उसके बारे में चिन्ता करने लगे।

टोजो की मॉ जितना खाना बना कर रख कर जाती थी उसको नहीं लगता था कि वह खाना उसके टोजो के लिये कम था।

पर फिर भी उनको लगा कि टोजो को शायद कुछ और ज़्यादा खाने की जरूरत है सो उसकी मॉ ने अकारा की गिनती बढ़ा दी जो वह उसके नाश्ते के लिये बनाती थी।

उसने उसके फूफू और इगूसी के सूप का कटोरा भी बड़ा कर दिया जो वह उसके लिये दोपहर के खाने के लिये बनाती थी। लेकिन फिर भी टोजो दुबला ही होता चला जा रहा था।

माता पिता ने सोचा कि अगर टोजो और ज़्यादा दुबला हो गया तब तो वह बीमार ही पड़ जायेगा। पर साथ में उनको यह भी लगा कि ऐसा लगता है कि टोजो का खाना टोजो नहीं कोई और खा रहा है और इसको उनको रोकना है।

अगले दिन टोजो की मॉ ने टोजो का खाना एक बहुत ऊॅची अलमारी के सबसे ऊॅचे वाले तख्ते पर रख दिया जहॉ टोजो का भी हाथ नहीं पहुॅच सकता था और रोज की तरह बाजार चली गयी।

टोजो के पिता ने भी अपना हल और कटलस[58] उठाया और खेत पर जाने के लिये घर से बाहर निकल गया। पर वह खेत पर नहीं गया। वह यह देखने के लिये कि टोजो का खाना कौन खाता है पास में ही छिप गया।

थोड़ी ही देर में अपने समय पर ओलोमुरोरो टोजो के पास आया और टोजो के पिता ने उन दोनों के बीच की बातचीत सुनी।

इस बार जब ओलोमुरोरो ने टोजो से पूछा कि तुम्हारा खाना कहॉ है तो टोजो ने उस ऊॅची वाली आलमारी की तरफ इशारा कर दिया जहॉ उसकी मॉ उसका खाना रख कर गयी थी।

[58] Cutlass is a kind of very long blade knife, 1 1/2 feet to 2 feet long, which Nigerians use to cut grass. See its picture above.

ओलोमुरोरो ने टोजो से कहा कि वह एक स्टूल पर चढ़े और उसके लिये खाना उतार दे। टोजो एक स्टूल ले कर आया और उस पर चढ़ कर उसने ओलोमुरोरो के लिये खाना उतारने की कोशिश की पर फिर भी उसका हाथ अपने खाने तक नहीं पहुँचा।

तब ओलोमुरोरो ने एक लम्बी डंडी ले कर उससे खाना उतारने के लिये कहा सो टोजो ने एक लम्बी सी डंडी ली और फूफू और सूप के कटोरों में मारनी शुरू की तो दोनों कटोरे तेज़ आवाज के साथ नीचे गिर गये और चकनाचूर हो गये। उनमें रखा खाना भी नीचे बिखर गया।

ओलोमुरोरो ने उस खाने को चाटने के लिये जैसे ही अपना सिर झुकाया टोजो का पिता अपनी छिपी हुई जगह से निकल आया और उसने अपने कटलस से ओलोमुरोरो की गरदन काट दी। ओलोमुरोरो वहीं का वहीं मर गया।

और इस तरह वे सैंकड़ों बच्चे जो पहले ओलोमुरोरो की वजह से भूखे रहते थे फिर से बढ़ने लगे और खाते पीते दिखायी देने लगे।

18 सूप की चुरायी हुई खुशबू[59]

एक बार इपेटुमोडु गॉव[60] में एक स्त्री रहती थी। वह इतनी ज़्यादा गरीब थी कि उसके पास अपना ऐब्बा[61] खाने के लिये कोई सूप भी नहीं होता था।

ऐब्बा खाना नाइजीरिया का एक ऐसा चिकना खाना होता है जो कसावा[62] के आटे से बनाया जाता है। यह थोड़ा सा बेस्वाद होता है और बिना सूप के साथ के नहीं खाया जा सकता।

इस स्त्री के घर के सामने ही सड़क के उस पार एक और स्त्री रहती थी जो अपने खाने के लिये रोज इगूसी सूप[63] बनाती थी।

गरीब होने की वजह से यह स्त्री दिन में केवल एक बार ही खाना खा पाती थी। एक दिन जब यह गरीब स्त्री अपना खाना खाने बैठी जो ऐब्बा का केवल एक छोटा सा कटोरा था तो इसके नथुनों में पड़ोसन के इगूसी सूप की खुशबू पहुॅची।

---

[59] The Stolen Soup Aroma – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

[60] Ipetumodu village

[61] Ebba – a Nigerian food to be eaten with soup. Ebba is a starchy food made from Cassava flour and it is unappetizing to eat all by itself. See Ebba's picture above white in the plate.

[62] Cassava is a root tuber vegetable, a very popular food on Nigeria. They boil it, pound it and eat it with some kind of soup. It is considered a very poor man's food. See its picture above.

[63] Igussi soup is made from meat and is thickened with ground melon seeds and is eaten with pounded yam and this Ebba food. See their picture above. White is Ebba and green is Igussi soup.

उसने सोचा मैं इसके घर जा कर इससे कुछ सूप माँगती हूँ शायद यह मुझे अपना थोड़ा सा सूप मेरा ऐब्बा खाने के लिये मुझे दे दे। सो उसने अपना ऐब्बा का कटोरा उठाया और पड़ोसन के घर चल दी।

वहाँ पहुँच कर उसने देखा कि वह स्त्री एक बड़े चमचे से एक बड़े बर्तन में काफी सारा इगूसी सूप चला रही थी। उस गरीब स्त्री ने उससे कहा — "क्या मुझे ऐब्बा खाने के लिये थोड़ा सा सूप दोगी?"

सूप के बर्तन में चमचा घुमाती हुई उस स्त्री ने अपनी फटे कपड़े पहने पड़ोसन की तरफ देखा और बोली — "अगर तुम अपना इगूसी सूप नहीं बना सकतीं तो तुमको कोई इगूसी सूप नहीं मिलेगा।"

वह गरीब स्त्री बेचारी अपनी झोंपड़ी में लौट गयी और अपनी झोंपड़ी के बाहर ही बैठ गयी। वहाँ उसकी पड़ोसन के इगूसी सूप की खुशबू बहुत तेज़ आ रही थी।

वह वहाँ बैठ कर थोड़ा सा ऐब्बा अपने हाथों से उस कटोरे में से निकालती, एक बड़ी सी साँस ले कर पड़ोसन के ऐब्बा के सूप की खुशबू सूँघती और फिर ऐब्बा का वह टुकड़ा खा जाती।

पड़ोसन उस गरीब स्त्री को अपने इगूसी सूप की खुशबू के साथ ऐब्बा खाते देख कर बहुत गुस्सा हुई। वह बाहर की तरफ भागी और उस गरीब स्त्री पर चिल्लायी — "मेरे सूप की खुशबू खाना बन्द करो।"

पर उस गरीब स्त्री ने उसके सूप की खुशबू खाना बन्द नहीं किया। वह उसके सूप की खुशबू सूँघती रही और उसके साथ अपना ऐब्बा खाती रही। उसको उस सूप की खुशबू के साथ ऐब्बा खाना बहुत अच्छा लग रहा था।

अब तो जब भी उस पड़ोसन कोई बढ़िया सूप बनाती और उसके सूप की खुशबू उस गरीब स्त्री के घर तक आती वह तुरन्त ही एक छोटा कटोरा भर कर ऐब्बा बनाती और घर के बाहर आ कर उसे उस सूप की खुशबू के साथ खाने बैठ जाती।

पड़ोसन उसकी इस बात से बहुत तंग थी सो उसने इस मामले को उस गॉव के राजा ओबा[64] के पास ले जाने का फैसला किया।

उसने जा कर ओबा से कहा — "यह स्त्री अपना ऐब्बा खाने के लिये मेरे इगूसी सूप की खुशबू इस्तेमाल करती है। इसको इस बात की सजा मिलनी चाहिये।"

ओबा ने जब यह मामला सुना तो मान गया कि हॉ उस गरीब स्त्री को पड़ोसन के सूप की खुशबू चुराने की सजा मिलनी ही चाहिये सो उसने पड़ोसन से कहा कि अच्छा हो वह खुद ही उसको इसकी सजा दे दे। पर सूप वाली स्त्री बोली कि नहीं ओबा को खुद ही उसकी पड़ोसन को सजा देनी चाहिये।

ओबा बड़ी अक्लमन्दी से बोला — "अगर उसने तुम्हारे सूप की खुशबू चुरायी है तो तुम उसकी परछाईं को मारो। अपने सूप की

[64] Oba is a Yoruba language word for the King.

एक बार खुशबू चुराने के लिये तुम उसकी परछाईं को चालीस बार मारो।"

यह कह कर उसने पड़ोसन को एक बड़ी सी डंडी थमा दी जिससे वह अपना न्याय करती। पड़ोसन ने उसकी परछाईं को मारना शुरू किया तो कुछ बार मारने के बाद ही वह थक गयी।

पड़ोसन को उस डंडी से उस स्त्री की परछाईं को मारना बहुत ही बेवकूफी लगी। उसने उस गरीब स्त्री से माफी मॉगी और उस दिन से रोज उसको इगूसी सूप देने का वायदा किया।

दोनों स्त्रियॉ घर चली गयीं और अब वह पड़ोसन उस गरीब स्त्री को रोज़ इगूसी सूप देने लगी और उस दिन से वह गरीब स्त्री भी रोज़ स्वाददार खाना खाने लगी।

19 एक आदमी और उसकी कीमती गाय[65]

एक आदमी के तीन बेटे थे और एक गाय थी। आदमी को अपनी गाय बहुत प्यारी थी क्योंकि वह हर साल एक बहुत ही तन्दुरुस्त बछड़े को जन्म देती थी।

एक दिन उस आदमी ने अपने सबसे बड़े बेटे से कहा कि वह उसकी गाय को चरा लाये। बेटा उस गाय को वहॉ ले गया जहॉ खूब हरी हरी घास उगी हुई थी।

जब गाय ने वहॉ घास खा ली तो वह उसको पानी के तालाब के पास पानी पिलाने के लिये ले गया। खिला पिला कर वह उसको वापस घर ले आया।

बाद में उस आदमी ने उस गाय से पूछा — "क्या तुमने ठीक से खा पी लिया?"

गाय बोली — "हॅुह। तुम्हारा कमीना बेटा तो मुझे ऐसी जगह ले गया जहॉ घास बिल्कुल भी नहीं थी। फिर उसने मुझे बॉध दिया और खुद जा कर सो गया।"

यह सुन कर वह आदमी बहुत गुस्सा हुआ और उसने अपने बड़े बेटे को घर से बाहर निकाल दिया। बड़ा बेटा बहुत दिनों तक इधर उधर घूमता रहा, हरी घास के मैदानों में, सूखी जमीन पर।

---

[65] One Man and His Precious Cow – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://allfolktales.com/folktales.php

कई तालाब पार करने के बाद वह एक दयालु किसान के घर आ गया। उस किसान ने उसको बारिश और सूखे दोनों मौसम में खेती करना सिखाया।

उसने उस बेटे से यह भी कहा कि एक दिन वह उसको उसके पिता के वापस भेजेगा ताकि वह अपने पिता को खेती करना सिखा सके। उसके बाद वह अपनी उस कमीनी गाय पर कभी निर्भर नहीं रहेगा।

एक दिन उस आदमी ने अपने बीच वाले बेटे से कहा कि वह उस गाय को चरा लाये। बीच वाला बेटा भी उस गाय को चराने के लिये वहॉ ले गया जहॉ हरी हरी घास उगी हुई थी।

जब उसने वहॉ घास खा ली तो वह उसको पानी के तालाब पर ले गया। उसको अच्छी तरह नहलाया धुलाया और पानी पिलाया। फिर उसको सूखने के लिये एक पेड़ से बॉध दिया।

जब वह गाय सूख रही थी तो वह थोड़ी देर सो लिया। खिला पिला कर वह उसको घर वापस ले आया।

बाद में उस आदमी ने उस गाय से पूछा — "क्या तुमने ठीक से खा पी लिया?"

गाय बोली — "हॅुह। तुम्हारा कमीना बेटा मुझे ऐसी जगह ले गया जहॉ घास बिल्कुल भी नहीं थी। फिर उसने मुझे बॉध दिया और जा कर सो गया।"

वह आदमी फिर से बहुत गुस्सा हुआ और उसने एक बड़ी सी डंडी उठायी और अपने बीच वाले बेटे को भी मार पीट कर घर से बाहर निकाल दिया।

उसका दूसरा बेटा भी बहुत दिनों तक इधर घूमता रहा और आखीर में एक लोहार के घर आ पहुँचा। उस लोहार ने उसको खेती के लिये हल और कटलस[66] आदि औजार बनाने सिखाये और शिकार के लिये तीर और कमान बनाने सिखाये।

उस लोहार ने भी उस बेटे से यही कहा कि एक दिन वह उसको उसके पिता के वापस भेजेगा ताकि वह अपने पिता को ये औजार बनाने सिखा सके फिर उसके बाद वह अपनी उस कमीनी गाय पर कभी निर्भर नहीं रहेगा।

इस बीच उस आदमी ने अपने सबसे छोटे बेटे को बुलाया और कहा — "जाओ बेटे, इस गाय को चरा लाओ। और देखो ठीक से चराना क्योंकि अगर तुमने उसे ठीक से नहीं चराया तो मुझे तुमको भी तुम्हारे भाइयों की तरह से घर से बाहर निकालना पड़ेगा और तुम्हें घर से निकाल देने पर मुझे बहुत दुख होगा।"

"जी पिता जी" कह कर उसका सबसे छोटा वाला बेटा भी उस गाय को वहाँ ले गया जहाँ हरी हरी घास उगी हुई थी।

---

[66] Cutlass or matchet – is a kind of very long blade knife, 1 1/2 feet to 2 feet long, which Nigerians use to cut their grass. See its picture above.

जब गाय ने वहॉ घास खा ली तो वह उसको पानी के तालाब पर ले गया। उसको अच्छी तरह नहलाया धुलाया और पानी पिलाया। फिर उसको सूखने के लिये एक पेड़ से बॉध दिया।

जब वह गाय सूख रही थी तभी उसका पिता वहॉ आ गया। उस आदमी ने उस गाय से पूछा — "क्या तुमने ठीक से खा पी लिया?"

गाय बोली — "हॅुह। तुम्हारा यह बेटा भी तुम्हारे दोनों बड़े बेटों की तरह ही कमीना है। वह भी मुझे ऐसी जगह ले गया जहॉ घास बिल्कुल भी नहीं थी। फिर उसने मुझे यहॉ मरने के लिये बॉध दिया है।"

उसके बेटे ने अपने पिता को बहुत समझाने की कोशिश की कि यह गाय जो कुछ कह रही है वह बिल्कुल भी सच नहीं है परन्तु पिता ने उसकी एक न सुनी और उसको भी घर से वैसे ही निकाल दिया जैसे उसने उसके दोनों बड़े भाइयों को निकाल दिया था।

यह तीसरा बेटा भी बेचारा बहुत दिनों तक इधर उधर घूमता रहा और आखीर में एक बड़े पढ़े लिखे आदमी के पास पहॅुच गया। वहॉ उसने उस आदमी से पढ़ना लिखना सीखा।

अब वह आदमी तो अकेला ही रह गया था सो एक दिन वह खुद उस गाय को चराने के लिये ले गया। वह उसको एक अच्छे हरे घास के मैदान में ले कर गया और फिर उसको पानी पिलाया। तब तक वह एक पेड़ के छाया में कुछ देर तक सो लिया।

जब वह सो कर उठा तो उसने उस गाय से पूछा — "क्या तुमने ठीक से खाना खा लिया?"

गाय हॅसी और बोली — "तुम भी अपने बेटों की तरह ही हो। तुम मुझे जंगल में ले गये। तुमने मुझे न खाना दिया न पानी। और अब मुझसे पूछते हो कि मेरा पेट भरा कि नहीं? हुॅह।"

यह सुन कर तो उस आदमी के होश उड़ गये। उसको अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह क्या सुन रहा है। वह गुस्से से बोला — "इसका मतलब यह है कि तुम मुझसे अब तक झूठ बोलती रही हो?

उफ, मैं भी कितना बेवकूफ था कि मैंने अपने बेटों को केवल तुम्हारे झूठ पर विश्वास कर के घर से निकाल दिया। छिः लानत है मुझ पर। आज तो मैं तुम्हें खुद ले कर गया था तब भी तुम मुझसे झूठ बोल रही हो।"

उसने वहीं पास में पड़ी एक डंडी उठायी और उससे उस गाय को बहुत पीटा। फिर उसने उसको एक पेड़ से बॉध दिया और उसे वहीं मरने के लिये छोड़ कर घर चला आया।

अब वह आदमी अपने बेटों को ढूॅढने निकल पड़ा। उसने उन को गॉव गॉव ढूॅढा पर वे उसको कहीं नहीं मिले। आखिर बरसों बाद वह थका हारा बूढ़ा हो कर घर लौट आया।

एक दिन जब गॉव का बाजार लगा हुआ था तो वह वहॉ अपने लिये कुछ खाने की चीज़ें खरीदने पहुॅच गया। जब वह बाजार के

किनारे पर ही था तो थकान की वजह से वह गिर पड़ा और बेहोश हो गया।

कुछ आदमी उसकी सहायता के लिये दौड़े। इससे शोर मचा और इस शोर ने सबका ध्यान अपनी तरफ खींच लिया।

इन सब लोगों में इस आदमी का सबसे बड़ा बेटा भी था जो अपने खेत में उगी कुछ चीज़ें बेचने के लिये आया था। और उस आदमी का बीच वाला बेटा भी था जो अपने बनाये हुए औजार बेचने के लिये आया हुआ था। और उस आदमी का सबसे छोटा बेटा भी था जो अपने गुरू के साथ खाने की चीज़ें खरीदने आया था।

सबने अपने पिता को पहचान लिया और साथ में वे एक दूसरे से भी मिल लिये। सबको आपस में मिल कर बहुत खुशी हुई। जब पिता को होश आया तो वह भी अपने तीनों बेटों को देख कर बहुत खुश हुआ।

उसने अपने तीनों बेटों से माफी मॉगी और उनसे घर चलने के लिये कहा।

वह बोला — "बेटे, मेरी ऑखें तो बहुत साल पहले ही खुल गयी थीं कि तुम लोग मेरे लिये गाय से कहीं ज़्यादा कीमती हो। बस तुम लोग मुझे कहीं मिले ही नहीं। चलो घर चलो।"

और फिर वे तीनों अपने पिता के साथ घर चले गये जहॉ वे काफी दिनों तक खुशी खुशी रहे।

20 टिड्डा और मेंढक[67]

एक बार नाइजीरिया के एक गॉव के पास एक टिड्डा और मेंढक रहते थे। उनमें आपस में बड़ी अच्छी दोस्ती थी। लोग उनको अक्सर साथ साथ देखते थे। पर उनकी यह दोस्ती बाहर तक ही थी वे कभी भी एक दूसरे के घर नहीं गये थे।

एक दिन मेंढक ने टिड्डे से कहा — "दोस्त, आज तुम मेरे घर खाना खाने खाओ। मैं और मेरी पत्नी आज तुम्हारे लिये खास खाना बनायेंगे और हम सब मिल कर फिर उसे साथ साथ खायेंगे।"

टिड्डा खुशी खुशी राजी हो गया और शाम को मेंढक के घर जा पहुॅचा। खाना खाने से पहले मेंढक ने अपने आगे वाले पैर धोये और टिड्डे को भी कहा कि वह भी अपने आगे वाले पैर धो ले। टिड्डे ने अपने पैर धोये और खाना खाने आ गया।

पर जब उसने खाना खाना शुरू किया तो वह अपने आगे के पैर मलने लगा जिससे "चिर्प चिर्प" की आवाज होने लगी।

मेंढक बोला — "भाई टिड्डे, क्या तुम अपना यह चिल्लाना बन्द नहीं कर सकते? मैं इतनी तेज़ आवाज में खाना नहीं खा सकता।"

---

[67] Grasshopper and the Toad – a folktale from Nigeria, Africa. Adapted from the Web Site : http://www.timbooktu.com/olufemi/grasshop.htm Retold by Baba Olutunde Olufemi

टिड्डे ने बिना अपने आगे की टॉगों को मलते हुए खाना खाने की बहुत कोशिश की पर यह उसके लिये नामुमकिन सा था। वह उनको बिना मले खाना खा ही नहीं सकता था।

हर बार जब भी वह अपना कौर उठा कर खाता तो वह अपनी टॉगें मलता और उस मलने से आवाज होती। और जैसे ही उसकी आवाज होती "चिर्प" तो मेंढक शिकायत करता कि वह खाना नहीं खा पा रहा है इसलिये टिड्डे को शान्ति से खाना खाना चाहिये।

टिड्डा इस बात से गुस्सा हो गया और खाना नहीं खा सका। आखीर में उसने मेंढक से कहा — "मेंढक भाई, कल तुम मेरे घर शाम को खाना खाने आना।"

मेंढक बोला ठीक है। सो अगले दिन शाम को मेंढक टिड्डे के घर खाना खाने पहुँचा। जैसे ही टिड्डे का खाना तैयार हो गया उसने अपनी आगे वाली टॉगें धोयीं और मेंढक को भी अपनी टॉगें धोने के लिये बुलाया।

मेंढक ने भी अपनी आगे वाली टॉगें धोयीं और तुरन्त ही कूद कर खाना खाने पहुँच गया।

टिड्डा बोला — "मेंढक भाई, तुम्हारे हाथ तो गन्दे हैं अच्छा हो तुम इनको दोबारा धो कर आओ। लगता है कि तुम धूल मिट्टी में कूद कर आये हो इसी लिये तुम्हारे हाथ गन्दे हो गये हैं।"

मेंढक फिर से पानी के लोटे के पास कूद कर गया, अपने आगे के पैर फिर से धोये और फिर से खाने की मेज पर कूद कर आ

गया। वह मेंढक की सजायी हुई प्लेटों में से एक प्लेट में से खाना लेने ही वाला था कि मेंढक ने उसे फिर रोक दिया।

"मेहरबानी कर के अपने गन्दे पैर मेरी खाने की प्लेट में डाल कर मेरा खाना गन्दा मत करो। खाना खाना है तो अपने हाथ ठीक से साफ कर के आओ।"

मेंढक बहुत गुस्सा था, वह चिल्लाया — "तुम मुझे बस अपने साथ खाना खाने देना नहीं चाहते। तुमको मालूम है कि मुझे अपने आगे वाले पैर और पंजे इधर उधर जाने में इस्तेमाल करने ही होते हैं।

सो अगर वे पानी के लोटे और खाने की मेज के बीच आने जाने में थोड़े बहुत गन्दे हो भी जाते हैं तो मैं उसमें कुछ नहीं कर सकता।"

टिड्डा बोला — "पर यह सब तो तुमने ही कल से शुरू किया। तुमको भी तो मालूम है कि मैं अपने आगे की टॉगें बिना आवाज किये नहीं मल सकता और उनको बिना मले मैं खाना भी नहीं खा सकता।"

पर मेंढक उसको गन्दे हाथों से खाना खिलाने के लिये तैयार नहीं था सो टिड्डा अपने घर चला गया। उस दिन के बाद उन दोनों की दोस्ती टूट गयी और फिर किसी ने कभी उनको साथ साथ नहीं देखा।

इस कहानी से हमको यह सीख मिलती है कि अगर हमको किसी से दोस्ती बना कर रखनी है तो हमको उसकी अच्छाइयों के साथ साथ उसकी कमजोरियों को भी अपनाना चाहिये वरना हम अपने उस दोस्त को खो देते हैं।

21 एक टैडपोल की दुखभरी कहानी[68]

एक बार मेंढकों का राजा मर गया। उसके अन्तिम संस्कार के बाद सवाल यह था कि अब राजा किसे बनाया जाये। मेंढकों के खास खास परिवार तो इकट्ठे हुए ही और राजा बनने के लिये और बहुत सारे उम्मीदवार खड़े हुए।

विरोधी दलों के मेंढकों में कुछ कहा सुनी, लड़ाई झगड़ा और गाली गलौज भी हुई। बहुत देर तक यह सब कुछ करने के बाद भी मेंढक जनता जब किसी नतीजे पर नहीं पहुँच सकी तो फिर यह तय हुआ कि किसी जू जू आदमी[69] को बुला कर उससे राय ली जाये।

सो एक जू जू आदमी को बुलाया गया और उससे इस बारे में राय ली गयी। उसने कुछ सोच कर राय दी कि एक बच्चा टैडपोल[70] को मेंढकों को राजा बना दिया जाये।

इस खबर को सुन कर जितनी ज़्यादा खुशी और ताज्जुब बच्चा टैडपोल को हुआ उतना शायद किसी को भी नहीं हुआ।

मीटिंग खत्म करने से पहले सभी मेंढकों ने तय किया कि वे सात दिन के अन्दर अन्दर बच्चा टैडपोल का राजा बनाने की रस्म

[68] The Story of a Tadpole – a folktae of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa
[69] Translated for the word “Ju Ju man”. He is like Tonaa Totakaa man called Ojhaa in India.
[70] Tadpole is the state of the body of a frog before becoming the frog – see its picture above.

पूरी कर देंगे। इस अचानक सफलता ने बच्चा टैडपोल का दिमाग सातवें आसमान पर चढ़ा दिया।

पहले बहुत सारे मेंढक जो उसकी तरफ कभी ऑख उठा कर भी नहीं देखते थे वे अब उसके चारों तरफ चक्कर काटने लगे और उसकी चापलूसी करने लगे।

बच्चा टैडपोल इस सबसे इतना खुश हुआ कि उसने अपने राजा बनने की रस्म से पहले वाले सात दिन के अन्दर अन्दर एक शानदार दावत का इन्तजाम किया।

उसके सारे नये दोस्तों को बुलावा भेजा गया। सबसे अच्छे गवैये, संगीत के साज़ बजाने वाले और नाचने वाले बुलाये गये। दावत के लिये बढ़िया बढ़िया खाने तैयार किये गये।

बड़े बड़े बर्तनों में ताड़ी[71] भर कर इधर उधर चारों तरफ रख दी गयी। यहॉ तक कि ताड़ी गलियों और बाजारों में भी रखवा दी गयी ताकि किसी को पीने की कोई कमी न हो।

उस दिन सभी मेंढक दावत खाने और खुशी मनाने में में लगे रहे और उस दिन मेंढकों के देश में कोई काम नहीं हुआ।

रीति रिवाजों के अनुसार शाम को सारे मेंढक सड़कों पर खूब नाचे और छठे दिन बच्चा टैडपोल जो अब तक नशे में धुत हो चुका था मेंढकों के उस जुलूस के पीछे पीछे चला।

[71] Translated for the word “Palm Wine”. It is very common drink in Nigeria.

वह चाहता था कि सारी भीड़ उसको देखे सो उसने घोषणा की कि वह उन सारे नाचने वालों से कहीं ज़्यादा अच्छा नाच सकता था जो उस समय वहॉ पर मौजूद थे और उस टैडपोल ने सड़क पर ही नाचना और कूदना शुरू कर दिया।

क्योंकि हर मेंढक ने उसके नाच की तारीफ की और क्योंकि वह बहुत ज़्यादा नशे में था इसलिये उसने सोचा कि उसका नाच वाकई सभी को बहुत पसन्द आ रहा था जबकि उससे न तो कूदा ही जा रहा था और न ही नाचा जा रहा था।

वह बेचारा बार बार दूसरे मेंढकों के ऊपर लुढ़क जाता था। कभी कभी वह नाली में भी गिर पड़ता था।

एक चौराहे के पास कूड़े का एक बहुत बड़ा ढेर पड़ा था। यहॉ उस टैडपोल की किस्मत कुछ ज़्यादा ही खराब थी। उस ढेर को वह कूद कर पार करना चाह रहा था सो जब वह कूद रहा था तो एक गड्ढे में गिर गया और अपनी एक छोटी सी मुलायम सी टॉग तोड़ बैठा।

दूसरे मेंढकों ने उसे वहॉ से उठाया और एक तख्ते पर बिठा कर उसे उसके घर ले चले। घर जा कर उस टूटी हुई टॉग के दर्द में कराहता सा वह अपने मुलायम बिछौने पर लेट गया। उसको पता ही नहीं चला कि उसकी कौन सी टॉग ज़्यादा दर्द कर रही थी।

अब इन मेंढकों के देश में एक कानून यह भी था कि वे किसी ऐसे मेंढक को राजा नहीं बनाते थे जिसके शरीर का कोई भी हिस्सा टूटा हुआ हो।

सो अगले दिन जब सारे मेंढक इकट्ठा हुए तो उनको लगा कि सभी मेंढक ओझे की उस राय से राजी नहीं थे जो उसने सात दिन पहले दी थी। उन्होंने यह तय किया कि वे किसी टूटी टॉग वाले को अपना राजा नहीं बना सकते।

और इस तरह वह बच्चा टैडपोल राजा नहीं बना और उसकी जगह एक बूढ़े मेंढक को राजा बना दिया गया।

बच्चों इस कहानी से हमें यह शिक्षा मिलती है कि हमें अगर कोई अच्छी चीज़ या खुशी अचानक ही मिल जाये तो हमें इतना ज़्यादा खुश नहीं हो जाना चाहिये कि हम अपनी देखभाल भी ठीक से न कर सकें और उस खुशी को ही न सह सकें। बल्कि हमें उसके लायक बनने की कोशिश करनी चाहिये।

22 अक्लमन्द कुत्ता[72]

एक बार जानवरों के देश में बहुत सारी लड़ाइयॉ हुईं। लगता था उस देश में जैसे किसी का शाप काम कर रहा हो। सो जानवरों के राजा ने सलाह के लिये एक मीटिंग बुलायी।

सभी के ख्याल में कहीं कोई गड़बड़ थी जिसको ठीक करना जरूरी था ताकि वहॉ इतनी लड़ाइयॉ न हों। पर वह गड़बड़ कहॉ थी और उसको कैसे ठीक किया जाये इस बारे में काफी देर तक बातें करने के बावजूद वे किसी नतीजे पर नहीं पहुॅच पा रहे थे।

तभी किसी ने कहा कि ये सब परेशानियॉ उनके बचपन से शुरू हुईं थीं इसलिये हो सकता है कि इस सबके लिये उनकी मॉऐं जिम्मेदार हों। क्योंकि जब वे उनके लिये और उनके और कामों के लिये जिम्मेदार थीं तो वे इस काम के लिये भी जिम्मेदार थीं।

यह बात सूखे के मौसम में जंगली आग की तरह फैल गयी। वे सभी कहने लगे कि क्योंकि यह सब हमारी मॉओं का काम है इसलिये हमको उन्हें मार देना चाहिये। हर जानवर अपनी अपनी मॉ को मारेगा तभी कुछ हो सकता है।

---

[72] The Wise Dog – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa
[My Note: This story is given here as it was given in the book by Fuja Abayomi in his book "Fourteen Hundred Cowries but I found it with a varied title and and different version on Internet too. At one of the Web Sites its title is "A Dog Who Sent His Mother to Heaven".]

उन सबमें एक जानवर ऐसा भी था जिसको यह बात कुछ जॅची नहीं। और वह था कुत्ता। यह कुत्ता अपनी मॉ को बहुत प्यार करता था और उसकी बहुत इज़्ज़त करता था। वह अक्लमन्द भी बहुत था और ऐसी बेवकूफी वाली बातों से भटकता नहीं था।

पर इस समय उसको यह भी पता था कि इस समय जानवरों के खिलाफ जाने से कोई फायदा नहीं है क्योंकि इस समय उसकी कोई सुनने वाला नहीं है इसलिये उसने चुपचाप इस बात को मान लिया।

इस चक्कर में बहुत सारी माऐं मारी गयीं। कुत्ते ने इस डर से कि अगर उसने अपनी मॉ को कहीं छिपा दिया तो जानवर उसे ढूँढ निकालेंगे और फिर उन दोनों को मार देंगे उसने अपनी मॉ को स्वर्ग भेज दिया।

कुत्ते की मॉ अपने बेटे के प्यार की कर्जदार थी सो उसने स्वर्ग जाते समय अपने बेटे से कहा— "बेटे तुम किसी भी मुश्किल में हो तो मुझे बुला लेना मैं आ जाऊॅगी।" फिर उसने उसको एक छोटा सा गीत सिखाया जो उसको बुलाने के लिये उसे गाना था।

कुछ समय बाद ही जानवरों को पता चल गया कि उनका अपनी मॉओं को मारना कुछ भी नहीं कर सका क्योंकि उसके तुरन्त बाद ही एक और बड़ा भारी अकाल पड़ गया जिसमें कुँए सूख गये, मॉस भी नहीं मिलता था, फसल भी नहीं हुई और इस वजह से और बहुत सारे जानवर मर गये।

कुत्ता यह सब देख कर बहुत दुखी हुआ। एक दिन उसको अपनी मॉ की याद आयी और याद आया उसको बुलाने वाला गीत।

वह एक अकेली सी जगह पहुॅचा और उसने वह गीत गाया —

मॉ मॉ अपनी रस्सी नीचे डालो अपने बेटे को बुलाओ और उसे खाना खिलाओ
आज उसे तुम्हारी सहायता की जरूरत है, मॉ ओ मॉ

तुरन्त ही एक लम्बी सी रस्सी स्वर्ग से नीचे जमीन पर गिर पड़ी। उसके एक सिरे पर एक छोटी सी कुर्सी थी। कुत्ता उस कुर्सी पर बैठ गया और रस्सी ऊपर जाने लगी।

जब वह ऊपर पहुॅच गया तो उसकी मॉ ने उसे पेट भर बढ़िया बढ़िया खाना खिलाया। खाना खा कर शाम को वह उसी रस्सी के सहारे नीचे उतर आया।

जब तक उस देश में अकाल रहा कुत्ता अपनी मॉ के पास इसी तरह जाता रहा और खाना खा कर वापस आता रहा।

एक दिन रास्ते में उसको उसका दोस्त कछुआ मिल गया तो कछुआ तो उसको खुश और तन्दुरुस्त देख कर हैरान रह गया।

उसने उससे पूछ ही लिया — "कुत्ते भाई, इन मुश्किलों के दिनों में भी तुम क्या खाते हो जो इतने खुश और तन्दुरुस्त हो? यह अकाल तो हम लोगों की ज़िन्दगी का बड़ा भारी अकाल है।

हम सभी लोग तो खाने की कमी की वजह से दुबले हो रहे हैं और तुम हो कि मोटे हुए जा रहे हो। दोस्त मुझे भी अपनी इस तन्दुरुस्ती का राज़ बताओ न।"

कुत्ता यह सुन कर डरा कि कहीं ऐसा न हो कि वह दूसरे जानवरों के सामने उससे ऐसी बात फिर कहे सो उसने सोचा कि वह उसको अपना भेद बता देता है।

वह बोला — "कछुए भाई, अगर तुम मुझसे यह वायदा करो कि तुम मेरी यह बात किसी दूसरे से नहीं कहोगे तो मैं तुमको अपना यह भेद बता देता हूँ।"

ऐसे मौके पर जैसे सब कहते हैं ऐसे ही कछुए ने भी कुत्ते से वायदा किया कि वह कुत्ते की बात बाहर बिल्कुल भी नहीं फैलायेगा। कुत्ते ने कहा — "अच्छा तुम सुबह आना तब तुम देखना।"

सुबह तड़के ही कछुआ उस जगह पर पहुँच गया जहाँ कुत्ते ने उसको बुलाया था। कुत्ता थोड़ी देर से आया। आ कर कुत्ते ने अपनी माँ का बताया गीत गाया।

तुरन्त ही आसमान से एक रस्सी नीचे जमीन पर गिर पड़ी और कुत्ता और कछुआ दोनों उस कुर्सी पर बैठ कर स्वर्ग चल दिये। शाम को खा पी कर वे खुशी खुशी वापस लौट आये।

इस बीच सारे समय कछुआ स्वर्ग की कसम खाता रहा कि वह यह भेद किसी और को नहीं बतायेगा।

कुछ दिनों बाद कछुआ जानवरों के राजा से मिलने गया और बोला — "हे राजा शेर, क्या मैं आपसे अकेले में कुछ बात कर सकता हूँ?"

शेर ने तुरन्त ही अपनी पूँछ हिला कर सब जानवरों को वहाँ से बाहर जाने का इशारा किया।

जब शेर वहाँ अकेला रह गया तो कछुआ सिर झुका कर बोला — "राजा साहब, मैं अभी अभी एक ऐसी जगह से आ रहा हूँ जहाँ अकाल का नाम भी नहीं है और हर कोई पेट भर खाना खा सकता है।"

शेर बोला — "कहाँ है वह जगह कछुए भाई? मैंने बहुत दिनों से पेट भर खाना नहीं खाया है और इसी वजह से मुझे इस शापित देश से कुछ नफरत सी होने लगी है।"

कछुआ बोला — "अगर आप अपने राज्य में मुझे कोई ऊँचा ओहदा दें और मेरी सुरक्षा का वायदा करें तो मैं आपको वहाँ जाने का रास्ता बता सकता हूँ।"

शेर बोला — "इसमें तो कोई बात ही नहीं है कछुए भाई। पर तुमको अपना वायदा पूरा करना पड़ेगा। तुम तुरन्त ही हम लोगों के वहाँ जाने का इन्तजाम करो और देखो यह बात किसी और को नहीं बताना।"

कछुए ने शेर को सुबह एक जगह आने को कहा और वहाँ से चला गया।

कुत्ते को तो इन सब बातों का पता ही नहीं था। अगली सुबह कछुए को शेर का ज़्यादा इन्तजार नहीं करना पड़ा। उसने जल्दी ही उसको आते देखा।

परन्तु उसको देखते ही उसका पारा आसमान पर चढ़ गया क्योंकि शेर वहॉ अकेला नहीं आया था। वह साथ में अपनी पत्नी बच्चों और अपने बहुत सारे दोस्तों को भी लाया था। बड़ी भीड़ थी उसके साथ।

कछुआ मन ही मन बोला — "बस यही तो मैं नहीं चाहता था। पर अब तो कुछ हो नहीं सकता। अब अगर मैं केवल राजा को ऊपर ले जाता हूँ तो भी और जानवर तो उसके गवाह रहेंगे ही।"

जब राजा कछुए के पास आ गया तो कछुए ने राजा का और उसके साथ आये सब जानवरों का स्वागत किया और फिर उसने कुत्ते वाला गीत गाया और रस्सी और एक कुर्सी आसमान से नीचे आ गिरी।

राजा शेर ने पूछा — "इस एक कुर्सी पर हम सब कैसे बैठेंगे?"

कछुआ जल्दी से बोला — "जी शेर जी यह तो आप ठीक कह रहे हैं। हम सब इस एक कुर्सी पर नहीं बैठ सकते। इस पर तो केवल हम दोनों के लिये ही जगह है। मुझे दुख है कि बाकी सबको यहीं नीचे रहना पड़ेगा।"

शेर बोला — "ठीक है।"

और उछल कर वह उस कुर्सी पर बैठ गया। शेर के बैठने के बाद कछुआ बड़ी मुश्किल से उस कुर्सी पर बैठ सका। पर शेर की पत्नी बच्चे और दोस्त तो कुछ और ही सोच रहे थे।

जब शेर और कछुआ ऊपर जाने लगे तो कई जानवरों ने उस रस्सी पर लटकने की कोशिश की। और बहुत सारे तो लटक भी गये। पर इसके बाद वहॉ क्या हुआ इसको तो केवल सोचा ही जा सकता है।

राजा शेर सबको डॉट रहा था पर कोई उसकी सुन ही नहीं रहा था। किसी ने रस्सी पकड़ रखी थी, तो कोई कछुए के ऊपर बैठा था, किसी ने शेर की पूँछ पकड़ रखी थी और कुछ तो ऊपर वाले जानवरों के हाथ पैर या पूँछ पकड़े लटक रहे थे।

सो गुस्से में भरे चीखते चिल्लाते जानवरों की एक छोटी सी भीड़ ऊपर आसमान की तरफ चली।

कुत्ते की मॉ ने जब शोर सुना तो उसको लगा कुछ गड़बड़ है। उसने नीचे झॉक कर देखा तो उसने देखा कि अरे ये तो बहुत सारे जानवर रस्सी से लटके ऊपर चले आ रहे हैं।

उसको लगा वे सब उसको मारने के लिये आ रहे हैं।

बस तुरन्त ही उसने एक चाकू लिया और जब वे सब आधे रास्ते में पहुँचे तो उसने रस्सी काट दी। बड़े ज़ोर की एक आवाज हुई और सारे के सारे जानवर धम्म से नीचे आ गिरे। कछुआ तो अपने खोल की वजह से बच गया पर बाकी सारे जानवर मर गये।

पास के गॉव के जानवरों ने इतनी ज़ोर की धम्म की आवाज सुनी तो वे देखने आये कि मामला क्या है। उनको जल्दी ही पता चल गया कि कछुए के अलावा सभी जानवर मर चुके थे। उन्होंने राजा शेर के शरीर को भी पहचान लिया।

कछुए को राजा के मारने का जवाब देने के लिये अदालत में जाना पड़ा।

अदालत में उसने कुत्ते की मॉ और उसकी रस्सी की पूरी कहानी सुना दी। अब कोई जानवर उसकी बात का विश्वास ही नहीं कर रहा था सो उसको फिर उसी जगह पर लाया गया जहॉ शेर मरा था और इतने सारे जानवरों को मारने के जुर्म में उसका सिर काट दिया गया।

उधर कुत्ता जब उस जगह पर पहुॅचा और उसने ऊपर जाने के लिये गीत गाया तो कोई रस्सी नीचे नहीं गिरी क्योंकि वह रस्सी तो उसकी मॉ ने चाकू से काट दी थी और वह बची हुई आधी रस्सी तो केवल आधे रास्ते तक ही आती थी सो फिर कुत्ता भी कभी स्वर्ग नहीं जा सका।

अकाल चलता रहा तो कुत्ता आदमियों के देश में चला गया और वहीं उनके दिये गये खाने पर गुजारा करने लगा। तबसे कुत्ता अपना गुजारा आदमी के दिये खाने पर ही करता है।

बहुत सारे आदमियों और जानवरों ने इस बात को जानने में अपनी पूरी ज़िन्दगी खर्च कर दी कि कुत्ते ने अपनी मॉ को स्वर्ग कैसे

भेजा था और अकाल खत्म होने के बाद फिर वह नीचे कैसे आयी पर कोई भी इस बात का ठीक से पता नहीं लगा सका।

कुछ का कहना है कि और दूसरे जानवरों की तरह उसने भी अपनी मॉ को मारा था। कुछ का कहना है कि उसकी प्रार्थना पर किसी ने स्वर्ग से रस्सी लटकायी थी और उसी से वह ऊपर गयी थी। पर यह भेद अभी तक भेद ही है।

तुमको अगर यह भेद पता चल जाये तो हमें जरूर लिखना।

23 बाज़ कभी चोरी क्यों नहीं करता[73]

एक बार की बात है कि नाइजीरिया के एक गॉव में एक पति पत्नी रहते थे। उन लोगों की शादी को कई साल बीत चुके थे पर उनके कोई बच्चा नहीं था। एक दिन पत्नी ने अपने पति से प्रार्थना की कि वह किसी जू जू आदमी[74] के पास जाये और उससे इस बारे में बात करे।

पति अपने जू जू आदमी के पास गया और उससे उसने इस बारे में बात की तो उसने कहा कि "ठीक है कल आना। मैं देखता हूँ कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूँ।"

कुछ समय बाद उस जू जू आदमी के जू जू से उनके घर एक बेटी पैदा हुई जिसका नाम उन्होंने रखा अलान्तेरे[75]।

पति पत्नी दोनों उस जू जू आदमी के बहुत ही अहसानमन्द थे। पति जब उसको धन्यवाद देने गया तो वह बोला "देखो, अलान्तेरे को किसी भी हालत में काम मत करने देना क्योंकि इस जू जू ने इसको धरती पर भेजने के लिये यही सौदा किया है।"

पति घर लौट गया और जा कर यह सब अपनी पत्नी को बताया। दोनों को इस बात की कोई फिक नहीं थी कि उनकी बेटी

[73] Why the Hawk Never Steals? - a Yoruba folktale from Nigeria, Africa

[74] Ju Ju Man is the man who does magic or Black Magic. Ju Ju in Nigeria is a kind of magic or Black magic. It is like Indian Tonaa Totakaa. It can be done both for good or bad.

[75] Alantere – name of the daughter of the couple.

काम करती है या नहीं क्योंकि बेटी से बढ़ कर उनके लिये और कोई खुशी नहीं थी।

अलान्तेरे बड़ी हुई पर जैसे और घरों में लड़कियॉ काम करती हैं अलान्तेरे को घर का कोई काम नहीं करने दिया जाता था। इस तरह बड़े होने से वह बहुत आलसी हो गयी।

जब अलान्तेरे अठारह साल की हुई तो उसके पिता ने दूसरी शादी कर ली। आदमी की दूसरी पत्नी अलान्तेरे को उसके आलसीपने की वजह से बिल्कुल भी पसन्द नहीं करती थी।

हालॉकि उसको अलान्तेरे के बारे में सब कुछ बता दिया गया था कि वह काम क्यों नहीं करती थी फिर भी उसके ऊपर इस बात का कोई असर नहीं था।

एक दिन जब पति और उसकी पहली पत्नी दोनों बाहर अपने दोस्तों से मिलने गये हुए थे तो उसकी दूसरी पत्नी को अलान्तेरे से काम कराने का मौका मिल गया। उसने अलान्तेरे को खूब पीटा और घर का ऑगन साफ कराया। फिर उसको पानी लाने भेजा।

जैसे ही अलान्तेरे पानी भरने के लिये पानी पर झुकी तो एक अजीब बात हुई। तालाब की देवी ओलूवेरी[76] अचानक तालाब से प्रगट हुई, उसने लड़की को खींचा और तालाब के पानी की गहराइयों में डुबो दिया।

[76] Oluweri – goddess of the Rivers

जब अलान्तेरे के माता पिता वापस घर लौटे तो उन्हें अपनी बेटी कहीं दिखायी नहीं दी। इससे उनको चिन्ता हो गयी कि उनकी बेटी कहॉ गयी।

उन्होंने जब दूसरी पत्नी से पूछा कि अलान्तेरे कहॉ है तो उसने उसके बारे में बताने से साफ इनकार कर दिया कि उसको उस लड़की के बारे में कुछ पता नहीं था। हो सकता था कि वह कहीं बाहर चली गयी हो।

जब अलान्तेरे बहुत देर तक नहीं लौटी तो उसके पिता ने उसके दोस्तों के घर मालूम किया पर वह वहॉ भी नहीं थी और उसके दोस्तों को भी नहीं मालूम था कि वह कहॉ थी।

इस पर उसके पिता ने लोगों से कहा कि लगता है कि अलान्तेरे को चुरा लिया गया है इसलिये उसकी तलाश जरूरी है। लोग दो दो और चार चार के समूह में चारों तरफ जा सकते थे और उसका नाम ले ले कर उसको पुकार सकते थे। लोगों ने ऐसा ही किया।

एक समूह ओलूवेरी के तालाब की तरफ निकल गया था। एक आदमी ने वहॉ जब उसका नाम ले कर पुकारा तो अलान्तेरे तालाब की सतह पर आ गयी। उसने बहुत बढ़िया कपड़े और गहने पहने हुए थे और वह बिल्कुल रानी लग रही थी। उसके चारों तरफ सोने और चॉदी की चटाइयॉ थीं।

अलान्तेरे ने एक गीत गाया जिसमें उसने उस आदमी को बताया कि किस तरह उसकी सौतेली मॉ ने उससे काम करवाया और उस पर क्या क्या बीती।

वह आदमी तो यह सब देख सुन कर भौंचक रह गया। वह तुरन्त भागा भागा अलान्तेरे के माता पिता के पास पहुॅचा और जा कर उनको सब कुछ बताया।

अलान्तेरे के माता पिता अपने दोस्तों के साथ उस तालाब पर आये और अलान्तेरे को पुकारा।

अलान्तेरे फिर वैसे ही बढ़िया कपड़े और गहने पहने तालाब की सतह पर आ गयी और यह गीत गाने लगी —

अलान्तेरे अलान्तेरे
देवताओं ने तुझे काम करने से मना किया था
उसके मॉ बाप ने भी हॉ तो की कि वह काम नहीं करेगी
पर जब उसके मॉ बाप नहीं थे तब उसको पीटा गया
उससे काम कराया गया उसको पानी भरने भेजा गया
वह भी ओलूवेरी के अपने तालाब से

अलान्तेरे अलान्तेरे
तभी अचानक देवी आ गयी तालाब की जिसका नाम है ओलूवेरी
वह ले गयी उसको पानी के नीचे कभी न दिखायी देने के लिये
अब वह इस तालाब से आगे कभी दिखायी नहीं देगी

और वह फिर पानी में डूब गयी। अब हर बार जब भी वे तालाब पर आये यही सब हुआ। अलान्तेरे तालाब की सतह पर आती, यह गाना गाती और फिर तालाब में चली जाती।

पर कोई कभी उसको तालाब के बाहर नहीं ला सका।

दुखी पिता एक बार फिर उसी जू जू आदमी के पास गया और उसको अपने साथ हुई घटना बतायी। जू जू आदमी ने पहले जू जू से सीधी प्रार्थना की परन्तु उससे कुछ नहीं हुआ क्योंकि उससे किया गया वायदा तोड़ा जा चुका था।

तब उस जू जू आदमी और पिता ने मिल कर देवताओं की प्रार्थना की मगर वहॉ से भी कुछ नहीं हुआ। ओलूवेरी से भी प्रार्थना की पर उसका भी कोई जवाब नहीं मिला।

अलान्तेरे की कहानी अब सब जगह फैल चुकी थी। कई लोग सहायता के इरादे से आये भी पर कोई भी उसकी सहायता नहीं कर सका।

एक दिन जब अलान्तेरे का पिता सब तरफ से नाउम्मीद हो चुका था तो एक बाज़[77] आया। उसने भी अलान्तेरे की कहानी सुन रखी थी।

वह उसके पिता की सहायता करना चाहता था पर उसकी कीमत थी बीस मुर्गे। पिता तुरन्त ही राजी हो गया और दोनों ओलूवेरी के तालाब की तरफ चल दिये।

[77] Translated for the word “Hawk”. See its picture above.

बाज़ ने पिता को उस समय अपनी बेटी को पुकारने के लिये कहा जब वह उस तालाब के ऊपर मॅडराये। कह कर बाज़ उस तालाब के ऊपर उड़ गया और वहॉ जा कर मॅडराने लगा। उस बाज़ को तालाब पर मॅडराते हुए देख कर पिता ने अपनी बेटी को पुकारा।

पिता के पुकारने पर अलान्तेरे तालाब की सतह पर आ गयी तो उस बाज़ ने तुरन्त ही कूद लगा कर उसके बाल पकड़ लिये और उसको धीरे से अपने तेज़ पंजों में पकड़ कर बाहर ले आया। बाहर ला कर उसने अलान्तेरे को उसके पिता के ऑगन में छोड़ दिया।

इस पर घर में बहुत आनन्द मनाया गया और बाज़ को बहुत बहुत धन्यवाद दिया गया। अलान्तेरे के पिता ने बाज़ को न केवल बीस मुर्गे दिये बल्कि और भी बहुत कुछ दिया।

बाज़ बोला ये सारे मुर्गे तो मैं एक साथ नहीं ले जा सकता सो अगर आपको कोई एतराज न हो तो मैं इनको यहीं आप ही के पास छोड़ देता हूॅ और इनको मैं एक एक कर के ले जाता रहूॅगा। पिता राजी हो गया।

तब से बाज़ एक एक मुर्गा ले जाता रहता है। किसी को पता नहीं है कि अलान्तेरे के पिता ने उसको कितने मुर्गे देने का वायदा किया था।

पर बस वह तो तबसे आता है और एक एक मुर्गा ले जाता है। उसको यह लगता ही नहीं कि वह चोरी कर रहा है क्योंकि

उसको तो अब याद ही नहीं कि उसको कितने मुर्गे ले जाने हैं और वह कितने मुर्गे ले जा चुका है।

24 एक बैल और मक्खी[78]

बहुत साल पहले की बात है कि जानवरों के देश में एक बार अकाल पड़ा। किसी को कुछ खाने को नहीं मिल पा रहा। याम[79] की फसल भी नहीं हुई, मूँगफली बिना पानी के सिकुड़ गयी थी, केला बहुत ही छोटा सा रह गया था।

यहाँ तक कि मिर्चें और भिंडी भी नहीं आयीं। घास जल गयी थी और भुट्टे के पेड़ पर तो भुट्टा ही नहीं था।

जो जानवर दूसरे जानवरों का माँस खा कर ज़िन्दा रहते थे वे भी अब भूखे थे क्योंकि वे दूसरे जानवर जिनको वे खा कर गुजारा करते थे अब केवल बची खुची घास, फल और सब्जी खा कर ही गुजारा कर रहे थे।

और क्योंकि बची खुची घास फल और सब्जी नहीं हो रही थी सो वे सब जानवर भी सब सूख से गये थे उनमें माँस ही नहीं था तो वे बेचारे माँसाहारी जानवर भी क्या खाते।

मरने से पहले कुछ करना जरूरी था। सो जानवरों के राजा शेर ने एक मीटिंग बुलायी जिसमें जंगल के सारे जानवर, पक्षी, मछली, कीड़े मकोड़े सभी को बुलाया गया था।

---

[78] The Bull and The Fly - a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[79] Yam is a tuber vegetable which is a staple food in all the West African countries. It may weigh up to 5-10 pounds. See its picture above.

सभी को लग रहा था कि देवता को बलि चढ़ाना जरूरी था पर बलि के लिये कौन तैयार हो। शेर ने सलाह दी कि लाटरी निकाली जाये और जिसका नाम उस लाटरी में निकले उसी की बलि चढ़ायी जाये।

सबने यह बात मानी। लाटरी निकाली गयी तो उसमें हाथी का नाम निकला और उसको मार डाला गया।

उसका मॉस इतना सारा था कि उसको जंगल में ऐसे ही नहीं छोड़ा जा सकता था। सो यह निश्चय किया गया कि किसी कसाई को बुलाया जाये और उससे हाथी को दावत के लिये कटवा लिया जाये। पर यह काम भी उतना ही मुश्किल था जितना कि बलि के लिये जानवर ढूँढना।

सो शेर ने इस काम के लिये भी लाटरी डाली तो उसमें कसाई के नाम में बैल का नाम निकला। बैल उसमें से सबके लिये मॉस काटने लगा। जब वह मॉस काट रहा था तो मक्खी ने भी अपना हिस्सा मॉगा।

बैल को मक्खी बिल्कुल पसन्द नहीं थी। वह बोला — "तुम बस मेरी ऑख की तरफ देखती रहो मैं तुमको बिल्कुल नहीं भूलूँगा।"

मक्खी बैल की ऑख की तरफ देखती रही। धीरे धीरे सारा मॉस खत्म हो गया और अब कुछ भी नहीं बचा था।

मक्खी फिर चिल्लायी — "मेरा हिस्सा कहॉ है?"

यह सुन कर बैल को उससे और चिढ़ हो गयी। वह अपनी पूँछ हिलाता हुआ बोला — "तुम्हारी कोई कीमत नहीं है मक्खी और तुम मेरा कुछ बिगाड़ भी नहीं सकतीं सिवाय इसके कि बस तुम मेरी तरफ देखती रहो।"

मक्खी बहुत गुस्सा होते हुए बोली — "ठीक है फिर ऐसा ही हो। आज से मैं और मेरे बच्चे तुम और तुन्हारे बच्चों की ऑखों में ही देखते रहा करेंगे।"

तबसे मक्खी अक्सर जानवरों की ऑख पर बैठ कर उन्हें परेशान करती है और जानवर भी उनको नफरत करते हैं। पर कर कुछ नहीं सकते क्योंकि उनके पूर्वज ऐसा ही शुरू कर गये हैं।

25 चीता और साही[80]

बहुत पुरानी बात है कि जानवरों के देश में एक साही[81] रहता था। उसकी उस देश के एक चीते[82] से बड़ी अच्छी दोस्ती थी।

वह छोटी मोटी परेशानियों में चीते की अक्सर सहायता भी किया करता था और चीते को भी जब कोई परेशानी होती तो वह भी साही को ही याद करता था।

साही एक भरोसे का जानवर था और वह अपनी और अपने परिवार की ठीक से देखभाल करता था।

साही और चीता दोनों एक दूसरे से काफी दूर रहते थे। चीता जंगल में रहता था और साही खेतों के पास वाले घास के मैदान में रहता था फिर भी वे अक्सर ही मिलते रहते थे।

साही तो कभी जंगल जाता नहीं था परन्तु चीता अक्सर ही खेतों के पास वाले घास के मैदान के आस पास घूमता दिखायी दे जाता।

---

[80] The Leopard and the Hedgehog – a Yoruba folktale from Nigeria, West Africa

[81] Translated for the word “Hedgehog”. It is a small animal like a rabbit but has long soft and non-poisonous quills all over. See his picture above. It

[82] Translated for the word “Leopard”. See his picture above.

एक दिन हरमाटान के मौसम[83] में जब किसान लोग अपनी खेती के लिये अपनी अपनी जमीन तैयार कर रहे थे तो उन्होंने देखा कि उनको अपनी खेती के लिये कुछ नयी जमीन की जरूरत है तो उन्होंने अपने अपने खेतों के पास में लगी घास काटनी शुरू कर दी।

घास काट कर उन्होंने घास जलाने के लिये उसमें आग लगा दी जिससे वह आग काफी बड़े हिस्से में फैल गयी।

क्योंकि साही भी वहीं पास में रहता था इसलिये उसका घर भी उस आग के लपेटे में आ गया। बेचारा साही किसी तरह अपने आपको और अपने परिवार को बचाने में तो कामयाब हो गया परन्तु अपना घर नहीं बचा सका। वह तुरन्त ही जल गया।

बेघर साही अपने परिवार के साथ शरण के लिये जंगल की तरफ चल दिया। जहॉ उसको थोड़ी सी भी घास मिलती वह वहॉ आराम कर लेता।

इसी समय साही को अपने दोस्त चीते का ध्यान आया। उसने सोचा कि उसने चीते की कितनी बार सहायता की है। आज उससे वह केवल इतनी सहायता चाहता था कि वह उसे अपने साथ केवल तब तक के लिये रख ले जब तक वह अपना नया घर बनाता है।

[83] In Nigeria, fine dust of Sahara Desert comes through the sky towards South and spreads throughout the country and stays there for three months – November, December and January. Often the Sun does not come out the whole day for days together. Visibility becomes very low. It is called Harmattan there. Ofcourse its intensity is more in Northern side in comparison to Southern side.

उसने अपने सबसे बड़े बेटे को बुलाया और अपनी परेशानी के बारे में चीते को बताने के लिये कहा और यह भी कहा कि वह जा कर उससे पूछे कि क्या वह कुछ समय के लिये उनको खाना और सुरक्षा दे सकता था।

बेटा साही चीते के पास पहुँचा और उसको अपने घर के नुकसान की कहानी सुनायी और उससे खाने और सुरक्षा की प्रार्थना की। परन्तु चीता तो बड़ा ही खतरनाक और खराब जानवर था।

साही से उसकी दोस्ती तो केवल एक बहाना थी उसका अपना काम निकालने के लिये। अब उसे लगा कि साही से तो उसको कोई फायदा होगा नहीं सो उसने बेटा साही से कहा कि वे लोग उसके पास हमेशा के लिये आ कर रह सकते हैं, खाना खा भी सकते हैं और खाये भी जा सकते हैं।

बेटा साही से यह कुटिल बात सुन कर पिता साही ने सोचा कि यह चीता तो बड़ा ही बेवफा जानवर निकला। आगे से केवल उसे ही नहीं बल्कि और दूसरे साहियों को भी उससे होशियार रहना पड़ेगा।

अब चीते को यह तो मालूम ही था कि साही परिवार उसके घर में खाये जाने के लिये नहीं आयेगा सो चीता बेटा साही के पीछे पीछे चलता हुआ उसके रहने की जगह देखने आया।

अपने बेटे के मुँह से चीते का सन्देश सुन कर पिता साही अपने परिवार को ले कर किसी और सुरक्षित जगह पर चल दिया।

चीता तो पीछे ही था। साही को कहीं और जाते देख कर चीते ने एक ज़ोर की छलॉग लगायी। साही परिवार के बचने की कोई उम्मीद नहीं थी क्योंकि चीते ने तो उन सबको दबोच ही लेना था।

परन्तु खुशकिस्मती से साही को पास ही चींटियों का एक बड़ा सा घर दिखायी दे गया। उसने तुरन्त ही अपने परिवार को धक्का दे कर उस घर के अन्दर कर दिया और खुद भी उसी में छिप गया।

इस तरह चीते ने छलॉग तो लगायी पर वह साही के परिवार को मार न सका।

उस समय के बाद से चीते और साही की कभी नहीं बनती और साही चीते से छिपने के लिये जमीन के नीचे या चींटियों के घर में रहते हैं और चीते उनको इधर उधर ढूँढते रहते हैं।

26 मुर्गी और बाज़[84]

एक बार एक जगह एक मुर्गी रहती थी जो सॉपों और लोमड़ियों से बहुत परेशान थी क्योंकि जब भी वह अपने बच्चों को ले कर खाना ढूँढने निकलती थी वे उसके बच्चों पर हमला कर देते थे। और ऐसा अक्सर होता।

मुर्गी के कितना भी होशियार रहने के बावजूद वे उसके बच्चों को परेशान करने से नहीं चूकते थे। यह सब देख कर उसने यह सब एक बाज़[85] से कहने की सोची क्योंकि वह बाज़ कई तरह के जू जू[86] जानता था।

मुर्गी ने सारी बातें बाज़ को बहुत खुलासा बतायीं और इस काम में उसकी सहायता मॉगी। बाज़ बोला कि वह उसकी सहायता करने के लिये बिल्कुल तैयार है परन्तु इस काम के लिये उसको मुर्गी के हर दस बच्चों में से दो बच्चे चाहिये।

मुर्गी को यह सुन कर बहुत दुख हुआ क्योंकि वह अपने बच्चों की सुरक्षा के लिये ही तो उसके पास गयी थी और वही उसके बच्चे खाने के लिये मॉग रहा था।

---

[84] The Hen and the Hawk – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[85] Translated for the word “Hawk”. See its picture above.

[86] Ju Ju is like magic or Black Magic. It is like Tonaa Totakaa of India. It may be for good or for bad.

परन्तु फिर वह यह सोच कर तैयार हो गयी कि सारे बच्चों को खोने से तो अच्छा है कि दस में से केवल दो बच्चे ही जायें।

बाज़ ने मुर्गी के लिये एक बहुत ही असरदार जू जू बनाया और उसको दे दिया। कुछ समय बाद ही मुर्गी ने बीस अंडे दिये और जब उन अंडों में से उसके बच्चे निकल आये तो मुर्गी बहुत खुश हुई।

अब वह अपने बच्चों के साथ जहॉ भी जाती तो कोई सॉप या लोमड़ी उसके बच्चों को परेशान नहीं करते थे। ऐसा अब उनके साथ हर बार होने लगा और अब उसके सारे बच्चे सुरक्षित थे।

अब तक मुर्गी के साठ बच्चे हो चुके थे। वह अपने परिवार को देख कर बहुत खुश थी और उसको अपने परिवार पर बड़ा घमंड था।

यह सब तो हुआ परन्तु वह बाज़ के साथ किया गया अपना वायदा भूल गयी और उसने उसको अपने हर दस बच्चों में से दो बच्चे नहीं दिये।

बाज़ भी यह सब भूल गया था। कुछ समय बाद बाज़ को ध्यान आया कि अब तो मुर्गी का परिवार काफी बड़ा हो गया होगा पर उसने अपने वायदे के अनुसार मुझे अपने बच्चे नहीं दिये तो वह मुर्गी से अपना हिस्सा लेने पहुॅचा।

मुर्गी ने उसको बहुत कुछ सुनाया और उसको अपने बारह बच्चे देने से मना कर दिया। इससे बाज़ बहुत नाराज हुआ और जा कर एक देवता से शिकायत की।

उस देवता का नाम था ओरिशा[87]। उस देवता ने बाज़ की बात सुन कर उसकी शिकायत को ठीक समझा और उसको मुर्गी के साठ में से बारह बच्चे लेने की इजाज़त दे दी। अब बाज़ मुर्गी के बारह बच्चे एक साथ तो ले कर जा नहीं सकता था सो वह उसके बच्चे एक एक कर के ले जाता रहा।

मुर्गी के वायदा पूरा न करने पर वह आज तक उसके बच्चे एक एक कर के ले जाता है और मुर्गी का परिवार इतना बड़ा है कि वह अपने परिवार के बीस परसैन्ट बच्चों की गिनती भी नहीं कर सकती कि बाज़ को उसके कितने बच्चे लेने चाहिये।

इसलिये बाज़ भी उसके बच्चे ले कर जाता ही रहता है क्योंकि इतने सारे बच्चों में वह भी यह नहीं बता सकता कि उसको मुर्गी के कितने बच्चे लेने चाहिये।

[87] Orisha – name of the god

27 हाथी और मुर्गा[88]

एक बार एक हाथी और एक मुर्गे में बहस छिड़ गयी। हाथी अपने आपको सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर समझता था। पर एक दिन उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब एक मीटिंग में एक मुर्गे ने उसको ललकारा।

मुर्गा कूद कर बाहर आया और बोला — "ऐसा नहीं है दोस्त। तुम अपने बड़े शरीर की वजह से शायद ऐसा सोचते हो कि केवल तुम ही एक सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर हो पर सच्चाई तो यह है कि तुम एक बहुत ही बड़े बेवकूफ जानवर हो जो तुम उस ताकत का भी इस्तेमाल नहीं कर सकते जो देवताओं ने तुम्हें दी है।"

हाथी तो यह सुन कर सकते में आ गया। वह तो यह सोच ही नहीं सका कि देवताओं ने भला उसे ऐसी कौन सी ताकत दी है जिसका वह इस्तेमाल नहीं कर पा रहा है।

वह बोला — "अगर मैं सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर नहीं हूँ तो फिर मुझे बताओ कि सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर कौन है मैं उससे मिलना चाहता हूँ।"

मुर्गा बोला — "मैं साइज़ में बड़े जानवर की बात नहीं कर रहा हूँ बल्कि मैं उनकी ताकतों की बात कर रहा हूँ। बिना ताकत के साइज़ की क्या कीमत?"

---

[88] The Elephant and the Cock – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

हाथी बोला — "बिना ताकत के साइज़ की क्या कीमत? यह तो तुम ठीक कहते हो दोस्त। पर यह तो तुमको मुझे बताना ही पड़ेगा कि सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर कौन सा है।"

मुर्गा बोला — "मैं हूँ।"

इस जवाब पर सभी जानवर चौंक गये। कुछ को तो यह सुन कर बहुत ज़ोर से हँसी आ गयी, कुछ नाराज हो गये, और कुछ मजा लेने लगे।

हाथी ने कोई भाव नहीं दिखाया बल्कि जब सब शान्त हो गये तो वह अपनी शाही शान से उठा और अपनी सूँड़ हिलाते हुए बोला — "ओ मुर्गे, ज़रा मेरी तरफ देखो। मैं जंगल का राजा हूँ। सबसे ज़्यादा बड़ा और सबसे ज़्यादा ताकतवर।

मैं जिधर से भी गुजर जाता हूँ अपने निशान छोड़ जाता हूँ। सभी मेरे आने को पहचान जाते हैं। घने से घने जंगल में से भी मैं अपना रास्ता बना लेता हूँ। बड़े से बड़े खजूर के पेड़ को मैं बात की बात में गिरा देता हूँ।

और दूसरा कौन सा जानवर ऐसा है जो ऐसे काम कर सकता है? वह मेरे सामने आये और बोले।"

यह कह कर हाथी बैठ गया और मीटिंग में आये सभी जानवरों ने उसकी तारीफ में तालियाँ बजायीं।

मुर्गा फिर उठ खड़ा हुआ और बोला — "तुम्हारा यह शरीर और यह ताकत किस काम की? बाकी सारे जानवर जंगल में से

बिना कोई निशान छोड़े हुए चुपचाप से और तेज़ी से निकल जाते हैं। तुम्हारे पेड़ तोड़ने की इस बेवकूफी का क्या फायदा है?

तुम्हारी बजाय तो लगता है कि मैं ही सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर हूँ। मैं लोगों को गहरी से गहरी नींद में सोते हुए से जगा देता हूँ। मैं और बहुत सारे आश्चर्य के काम कर सकता हूँ।

यहाँ तक कि मैं मुर्दो को भी उठा सकता हूँ। मैं ही तो वह देवता हूँ जो सूरज को रोज धरती पर सुबह सुबह बुलाता हूँ।"

यह सब सुन कर तो वहाँ बैठे सभी जानवरों में एक चुप्पी सी छा गयी और वे एक दूसरे की तरफ देखने लगे।

आखिर एक कछुआ उठा और बोला — "ठीक है ऐसा करते हैं कि दोनों का एक दिन मुकाबला रखते हैं और फिर हम लोग बतायेंगे कि धरती का सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर कौन है।"

यह राय तो सभी को बहुत अच्छी लगी। हाथी और मुर्गा भी इस बात पर राजी हो गये। मुकाबले का दिन भी तय कर दिया गया। तय किये हुए दिन पर सभी जानवर इकट्ठा हो गये।

पहला नम्बर हाथी का था। एक बड़ा घना जंगल उसके लिये चुना गया था। एक ज़ोर की चिंघाड़ के साथ हाथी उस जंगल में घुसा। अपने पीछे धूल मिट्टी का घना बादल छोड़ते हुए वह तुरन्त ही जानवरों के सामने से गायब हो गया।

फिर पेड़ों के उखड़ने की आवाज आयी, टूटी हुई शाखें और पेड़ हवा में उड़ने लगे और जंगल मे बहुत ज़ोर का शोर होने लगा।

अब हुआ यह कि इस जंगल में छोटे छोटे कीड़े भी बहुत सारे थे। जब हाथी जंगल में घुसा तो ये बहुत सारे कीड़े मकोड़े डर के मारे हाथी के शरीर पर बैठ गये। क्योंकि उनको लगा कि उनके लिये वही सबसे ज़्यादा सुरक्षित जगह थी।

सो जैसे जैसे हाथी जंगल में आगे बढ़ता गया उसका शरीर उन कीड़ों से ढकता गया। उधर गुस्से और धूल की वजह से वह उनको देख ही नहीं पाया परन्तु उसको लगा कि उसका शरीर भारी और ज़्यादा भारी होता जा रहा है।

आखिर हाथी थक गया। उसने जंगल से गुजरना छोड़ दिया और नीचे लेट कर सो गया।

मुर्गा यह सब देख रहा था। जब उसने देखा कि उसका मुकाबले वाला सो गया तो वह हाथी के शरीर पर बैठ गया और अपनी चोंच से उन कीड़ों को एक एक कर के खाने लगा।

वह सारे कीड़े नहीं खा पाया क्योंकि हाथी के गिरते ही वे कीड़े उसके शरीर से उतर कर अपने टूटे घरों की तरफ जाने लगे।

आखिर हाथी का सारा शरीर साफ हो गया और अब उस पर कोई कीड़ा नहीं रह गया था। असल में तो हाथी कीड़ों से पूरी तरह आजाद तो आज ही हुआ था।

जब उसकी ऑख खुली तो उसने अपने आपको हॅसते हुए जानवरों के बीच पाया। मगर उसको तो अभी जंगल और भी पार

करना था। उसकी पीठ पर मुर्गा अभी भी बैठा था जिसकी चोंच की मार वह अभी भी अपने शरीर पर महसूस कर रहा था।

वह तुरन्त ही उठ गया। अब उसको अपना शरीर तो बहुत ही हल्का लग रहा था परन्तु सारे शरीर में मुर्गे की चोंच के घाव महसूस हो रहे थे। उसको अपने शरीर के हल्केपन और दर्द से पता चल गया कि मुर्गे ने उसके शरीर को खाया था।

यह सोचते ही वह डर गया। डर के मारे वह ज़ोर से चीखा और जंगल में दौड़ गया। और जानवरों से कहता गया कि आगे से वह किसी ऐसे मुकाबले में हिस्सा नहीं लेगा जिसका ठीक से इन्तजाम न किया गया हो। और यह भी कि वह अब मुर्गे से अपने शरीर का कोई नुकसान नहीं चाहता।

उस दिन से हाथी घने जंगलों में रहता है मुर्गों की आवाज से भी दूर। मुर्गे को सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर नहीं माना जाता पर फिर भी उसने अपनी कोशिश नहीं छोड़ी पर आज भी मुर्गे अपने आपको दुनियॉ का सबसे ज़्यादा ताकतवर जानवर समझते हैं।

28 अजनबी और यात्री[89]

यह उस समय की बात है जब कुत्ते बिल्ली आपस में दोस्ती से रहा करते थे। लेकिन बस फिर उनमें एक बार लड़ाई हो गयी और इतने ज़ोर की लड़ाई हुई कि देवता भी उसे नहीं निपटा सके और वह लड़ाई उनमें अभी तक चली आ रही है।

वह लड़ाई शुरू कैसे हुई इसकी भी एक अजीब सी कहानी है।

यह लड़ाई शुरू ऐसे हुई कि एक कुत्ते और एक बिल्ले ने एक बार एक अनजाने देश में जाने का फैसला किया।

बिल्ला बोला — "कुत्ते भाई, अगर हम इस देश में पहुँच गये तो हम अपना असली नाम किसी को नहीं बतायेंगे। मैं अपना नाम अजनबी बताऊँगा और तुम अपना नाम यात्री बताना। ठीक?"

हालाँकि वह कुत्ता वैसे भी बिल्ले की हर बात मान जाया करता था क्योंकि उसको लगता था कि बिल्ला एक अक्लमन्द जानवर है पर फिर भी कुत्ते को यह ख्याल अच्छा लगा।

आखिर वे घूमते घूमते योरुबा लोगों के देश में आ पहुँचे और एक शहर में पहुँच कर उस शहर के सरदार से मिलने जा पहुँचे। सरदार ने उनको इज़्ज़त के साथ ठहराया। जब उनसे उनका नाम पूछा गया तो उन्होंने जवाब दिया अजनबी और यात्री।

[89] The Story of the Stranger and the Traveler – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

सरदार थोड़ा कम सुनता था उसने सोचा कि उनमें से एक अजनबी था और एक यात्री। उसको यह पता ही नहीं चला कि ये उनके नाम थे।

उन दिनों योरुबा देश में यह रिवाज था कि वहॉ अजनबियों को तो लोग खाना खिला देते थे पर यात्रियों को खाना नहीं खिलाते थे। इसका नतीजा यह हुआ कि अजनबी यानी बिल्ले को तो खाना खिला दिया गया पर यात्री यानी कुत्ते को कोई खाना नहीं मिला।

इस बात से कुत्ता बहुत नाराज हुआ और बिल्ले से बोला कि उनको यह योरुबा देश छोड़ कर अपने देश चलना चाहिये क्योंकि यहॉ तो उसको खाना ही नहीं मिल रहा तो ऐसे वह वहॉ कैसे रहेगा।

सो अजनबी और यात्री दोनों ने अपना अपना सामान बॉधा और सरदार को विदा कहने के लिये चले। जब सरदार को यह मालूम पड़ा कि वे दोनों अपने घर जा रहे हैं तो उसने उनको एक सुन्दर गाय भेंट की।

अजनबी बिल्ला बोला — "कुत्ते भाई, यह गाय हम अपने देश ले चलते हैं।"

यात्री कुत्ता बोला — "नहीं, तुम तो जब तक यहॉ रहे खूब बढ़िया बढ़िया खाना खाते रहे और मैं भूखा मरता रहा। इसे हम यहीं मारते हैं और आपस में आधी आधी बॉट लेते हैं।"

अजनबी बिल्ला बोला — "ठीक है। मेरे पास एक चाकू है उसी से इसको काट लेते हैं।"

यात्री कुत्ते के पास क्योंकि कोई चाकू नहीं था इसलिये अजनबी बिल्ले के चाकू से ही गाय काटी गयी।

यात्री कुत्ते ने पूछा — "पर अब हम इस गाय को बॉटेंगे कैसे?"

अजनबी बिल्ले ने सलाह दी कि चाकू के मारने से जो हिस्सा आवाज करे वह तुम्हारा, बाकी मेरा।"

सो इस तरह गाय का बॅटवारा हुआ। इस बॅटवारे से साफ जाहिर है कि गाय की सारी हड्डियॉ कुत्ते के हिस्से में आयीं और मॉस बिल्ले के हिस्से में।

जब अजनबी बिल्ले ने सारा बॅटवारा कर दिया तो उसे लगा कि यह बॅटवारा तो ठीक नहीं है सो आखीर में उसने यात्री कुत्ते को गाय का सिर भी दे दिया।

यात्री कुत्ते ने अपने हिस्से की सारी हड्डियॉ खत्म कर ली थीं सो उसने अपने हिस्से का गाय का सिर उठाया और अजनबी बिल्ले से बोला — "अजनबी भाई, तुमको तो बहुत सारा मॉस ले कर जाना है, मैं तुम्हारा इतनी देर तक इन्तजार नहीं कर सकता, मैं चलता हूॅ फिर मिलेंगे।"

और यह कह कर वह गाय का सिर ले कर दौड़ गया। काफी देर चलने के बाद यात्री कुत्ता थक गया था सो वह एक पेड़ की छॉह में बैठ गया।

गाय के सिर की ओर देखते देखते उसके दिमाग में एक खयाल आया कि इस सिर को वह अभी यहीं जमीन में कहीं गाड़ दे और बाद में आ कर उसे ले जायेगा।

आराम करने के बाद उसने सिर गाड़ने के लिये गड्ढा बनाने के लिये जमीन खुरचनी शुरू की। जब गड्ढा खुद गया तो उसने सिर को उसमें रखा।

उस गड्ढे में सिर के सारे हिस्से तो आ गये पर वह उसकी आखें किसी तरह भी नहीं ढक सका। पर उसको इस बात की कोई चिन्ता नहीं थी और वह सिर को गड्ढे में उसी तरह दबा कर चला गया।

उधर अजनबी बिल्ले के पास बहुत बोझा था सो वह भी धीरे धीरे चलते हुए उसी पेड़ के नीचे आ पहुॅचा जिस पेड़ के नीचे यात्री कुत्ते ने अपनी गाय का सिर गड्ढे में दबाया था और वहॉ आराम करने बैठ गया।

अचानक उसकी निगाह जमीन में से झॉकती हुई दो ऑखों पर पड़ी। वह डर गया और डर के मारे चीख पड़ा। उसके सारे बाल खड़े हो गये। वे ऑखें उसे घूरे जा रहीं थीं और डर के मारे उसका बुरा हाल था।

उसको लगा कि उसने जो यात्री कुत्ते के साथ बेईमानी की थी उसी के बदले में धरती उसको डरा रही थी। उसने अपना डर हटाने के लिये एक गीत गाना शुरू किया —

ओ धरती मॉ क्या ये तुम्हारी ऑखें हैं?
क्या तुम चाहती हो कि मैं सारा मॉस यहीं रख दूँ?
और बिना मॉस के भाग जाऊँ? ओ धरती मॉ मेरी जान बचाओ
इस गाय का सारा मॉस में तुमको दे दूँगा

अजनबी बिल्ले को अपने इस गीत का कोई जवाब नहीं मिला सो उसने उस मॉस को धरती मॉ की भेंट में वहीं छोड़ कर घर जाने का फैसला किया और वह सारा मॉस वहीं छोड़ कर घर चला गया।

अगले दिन यात्री कुत्ता अपनी गाय का सिर लेने को लिये उस पेड़ के पास आया तो उसको गाय का बाकी बचा मॉस वहॉ पड़ा देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ। पर उसने अपनी गाय का सिर खोद कर निकाला और वह सारा मॉस लिया और घर वापस आ गया।

यात्री कुत्ता बहुत दिनों तक अपने घर से बाहर नहीं निकला। फिर आखिर अजनबी बिल्ला ही उसके घर आया और उसे उस दिन की सारी कहानी सुनायी कि किस तरह धरती मॉ की ऑखें उसको घूर रहीं थीं।

अजनबी बिल्ला अभी अपनी कहानी खत्म करने ही वाला था कि उसकी निगाह यात्री कुत्ते की पूँछ के पीछे पड़ी। यात्री कुत्ते ने पीछे मुड़ कर देखा और फिर सामने अजनबी बिल्ले को देखा तो

उसने देखा कि अजनबी बिल्ला तो उसके पीछे रखे मॉस के ढेर और गाय के सिर की तरफ देख रहा था।

अजनबी बिल्ले ने पूछा — "तुम्हें इतना सारा मॉस कहॉ से मिला?"

यात्री कुत्ता ज़ोर से हॅसा और बोला — "धरती मॉ से।"

और बस यहीं उनकी दोस्ती का अन्त हो गया। दोनों में बहुत ज़ोर की लड़ाई हुई। दोनों ही गाय के मॉस पर अपना अपना हक जता रहे थे।

मामला देवताओं के पास तक गया पर उनसे भी इस बात का फैसला नहीं हो सका कि वह मॉस किसका था।

उस दिन से आज तक कुत्ते बिल्ली एक दूसरे के दुश्मन हैं।

29 बलि को स्वर्ग भेजना[90]

एक बार बहुत दिनों तक धरती पर बारिश नहीं हुई सो कोई फसल भी नहीं हुई। लोग भूखों मरने लगे। इस पर लोगों ने सोचा कि अगर वे देवताओं को बलि चढ़ायेंगे तो शायद वे खुश हो कर धरती पर बारिश भेज दें।

लोगों ने एक बकरा मारा और बलि के लिये पूरी तैयारियॉ कर लीं। उन्होंने मरे हुए बकरे को एक टोकरी में रख दिया। सारे पक्षियों को इस रस्म के लिये बुलाया गया था और उसमें से एक चिड़िया को उस बलि को स्वर्ग में ले जाने के लिये चुना जाना था।

पर जब सारे पक्षी वहॉ आये तो सभी ने बलि को स्वर्ग ले जाने से मना कर दिया क्योंकि स्वर्ग बहुत दूर था और स्वर्ग जाने का मतलब था लम्बा और थकान पैदा करने वाला सफर।

इसके अलावा यह काम था भी बहुत छोटा। इस वजह से कोई इस काम को करना भी नहीं चाहता था।

आखीर में एक गिद्ध[91] ने कहा कि — "ठीक है, मैं यह बलि ले कर स्वर्ग जाऊॅगा।" सभी उसको बुरी शक्ल वाला समझते थे और गन्दा भी जो हर समय गॉव के कूड़े के ढेरों में मुॅह मारता फिरता था।

[90] Taking a Sacrifice to Heaven – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[91] Translated for the word "Vulture". See its picture above.

जब गिद्ध उस बलि को ले जाने को राजी हो गया तो लोगों ने आग जलायी और उन्होंने गिद्ध को गाते हुए सुना —

यह कैसी लड़ाई है धरती और आसमान की
कि बारिश धरती पर नहीं आती और फसल नहीं उगती
आसमान कहता है कि मैं बड़ा हूँ और धरती कहती है कि मैं बड़ी हूँ
परन्तु कोई भी बलि ले जाने के लिये तैयार नहीं है
आखीर में जब सबने मना कर दिया
तो केवल गिद्ध ही यह काम करने को तैयार हुआ

उसने बकरे की टोकरी और आग उठायी और आसमान की तरफ चल पड़ा। सभी उसको जाते देखते रहे जब तक कि वह आसमान में एक छोटी सी बिन्दी की तरह नहीं दिखायी नहीं पड़ने लगा। कुछ देर बाद वह नीले आसमान से भी गायब हो गया।

उसके कुछ देर बाद ही तेज़ हवा चली? आसमान काला हो गया और बारिश के पानी से भरे काले बादलों से भर गया।

बारिश की बूँदें टपकाने लगीं। साथ में बिजली भी चमकने लगी और बादल तो ज़ोर ज़ोर से गरज ही रहे थे। और फिर बारिश इतनी ज़्यादा हुई कि धरती पर नदियाँ बहने लगीं।

इसका मतलब यह था कि देवता ने उनकी बलि स्वीकार कर ली थी। वे सब बहुत खुश हुए।

जब गिद्ध वापस लौटा तो उसने देखा कि उस भारी बारिश ने तो उसका सारा घर ही तोड़ दिया है। सो वह एक एक कर के सारे

पक्षियों के पास शरण मॉगने गया क्योंकि उसने उन सभी की सहायता की थी।

परन्तु सभी मतलबी थे। किसी ने भी उसको अपने घर में नहीं ठहराया। यहॉ तक कि आदमियों ने भी उसको भुला दिया और अपने घरों से बाहर निकाल दिया।

गिद्ध थकान, लम्बे सफर, बारिश में भीगने और बिना घर के होने की वजह से अब और भी ज़्यादा बुरी शक्ल का लगने लगा था। बलि की आग ने उसके सारे पंख जला दिये थे।

उस दिन से आज तक कोई पक्षी गिद्ध को अपने पास नहीं बिठाता। वह आज भी गॉव के बाजारों में, कूड़े के ढेरों पर, जंगल में लगी आग के आस पास ही घूमता रहता है और वहॉ भी वह बेचारा अकेला ही होता है।

30 ईगा चिड़िया और उसके बच्चे[92]

ईगा चिड़िया[93] एक छोटी सी सुन्दर सी काले और पीले रंग की चिड़िया होती है जो पश्चिमी अफ्रीका में सेनेगल देश से ले कर कैमेरून देश तक पायी जाती है।

यह कॉटे वाली झाड़ियों और घास के मैदानों में रहती है। यह दो अंडे देती है और इसके ये अंडे सफेद, हल्के नीले या जामुनी रंग तक के होते हैं।

जब यह अपना नया घोंसला नहीं बना रही होती है तब यह अपना पुराना वाला घोंसला तोड़ रही होती है। यह बहुत ही चंचल और शोर मचाने वाली चिड़िया है और लड़ने में भी बड़ी बहादुर है। परन्तु जब इसके घोंसले में से बड़े बड़े चिड़े इसके छोटे छोटे बच्चों को उठा कर ले जाते हैं तब यह कुछ नहीं बोलती है।

ऐसा सब क्यों हुआ इसकी भी एक बड़ी अजीब सी कहानी है। यह उस समय की बात है जब अकाल के समय लोगों की दी हुई बलि को स्वर्ग में ले जाने की वजह से गिद्ध के पंख जल गये थे।[94]

उस समय एक ईगा चिड़ा और उसकी पत्नी अपने घोंसले में रहते थे। पत्नी ने बहुत ही सुन्दर दो अंडे दिये। ईगा चिड़े ने इतने

---

[92] Concerning the Egas and Their Young – a folktale of Yoruba Tribe of Nigeria, Africa

[93] Ega bird is a very small black and yellow bird found in Western Nigeria from Senegal to Cameroon countries

[94] To read this account read the story “Bali Ko Swarg Bhejanaa”, previous to this tale, published in this book “Nigeria Ki Lok Kathayen-1”

सुन्दर अंडे पहले कभी नहीं देखे थे सो वह उन अंडों को देख कर इतना खुश हुआ कि उसने सभी चिड़े और चिड़ियों को बुला कर उनको अपने अंडे दिखाये।

चिड़ियों ने उनका घर भी देखा जो ताड़ की पत्तियों और घास का बना हुआ था और उसमें रखे देखे ये दो अंडे। सब कुछ बहुत सुन्दर दिखायी दे रहा था। चारों तरफ उनके घर के बारे में बातचीत होने लगी।

ईगा चिड़ा बहुत ही चंचल और बातूनी था और इस घटना के बाद तो वह कुछ और ज़्यादा ही चंचल और बातूनी हो गया था। दूसरे पक्षी यह देख कर चिढ़ गये और वे उसको, उसकी पत्नी को, उसके घर को और उसके अंडों को सबको गालियॉ देने लगे।

अब ऐसा कुछ हुआ कि उनकी गालियॉ सच होने लगीं और ईगा परिवार की किस्मत बदलने लगी। जब उन दोनों अंडों में से बच्चे निकले तो वे भी बड़े जिद्दी और मॉ बाप का कहना न मानने वाले निकले।

जैसे जैसे वे बड़े होते गये वे और सुस्त होते गये। घर का सारा काम उनके माता पिता को ही करना पड़ता। वे सफाई के लिये भी अपने घोंसले से बाहर नहीं निकलते थे सो उनका घोंसला भी गन्दा रहने लगा।

माता पिता दोनों ने उनको सुधारने की बहुत कोशिश की पर नाकामयाब रहे। सो उन्होंने बच्चों से कहा कि वे उनके पुराने घर में

रह सकते हैं और वे अपने लिये दूसरा नया घर बना लेंगे। ऐसा कह कर वे अपना नया घर बनाने दूर चल दिये।

काफी कठिनाई और मेहनत से ईगा पति पत्नी ने अपना नया घर बनाया पर जैसे ही उनका नया घर बन कर तैयार हुआ उनके बच्चे अपने पुराने घर से उड़ कर उनके नये घर में रहने आ गये।

यह सब देख कर पिता ईगा बहुत दुखी हुआ और उसने एक एक तिनका और एक एक पत्ता खींच कर अपना नया घर तोड़ दिया।

अब बच्चों को उस घर से भी बाहर निकलना पड़ा तो उन्होंने यह सब मामला पक्षियों के राजा गरुड़[95] को जा कर सुनाया। उन्होंने उसे बताया कि उनके माता पिता ने उनको घर से बाहर निकाल दिया है।

गरुड़ ने ईगा माता पिता और उनके बच्चों को बुलाया और उनसे यह सारा मामला निपटने के लिये कहा तो ईगा माता पिता ने साफ इनकार कर दिया कि वह इन बच्चों को अपने साथ रखने के लिये तैयार नहीं है।

पर गरुड़ ने कहा कि इन बच्चों के माता पिता होने के नाते यह तुम्हारा फर्ज बनता है कि तुम अपने बच्चों का पालन पोषण करो इसलिये अगर तुम अपने बच्चों को घर से निकालते हो तो तुम

[95] Translated for the word “Eagle”. See its picture above.

अपराधी हो और इस अपराध की सजा तुम इस तरह भुगतो कि तुम हमेशा ही अपना घर बनाते रहो।

इसलिये वे हर समय वे अपना घर ही बनाते रहते हैं और जब कोई बड़ी चिड़िया उनके बच्चे ले जाती है तो वे बिल्कुल भी परेशान नहीं होते।

List of Tales of "Folktales of Nigeria-1"

1. A Sad King and His Sad Kingdom
2. The Lost Heir
3. The Latchkey Prince
4. The Flute
5. Magical Pumpkin
6. A Girl, Frog and the Son of the Chief
7. Juyin Gatan Fara
8. Dog and Lion
9. Master Man
10. Chinye
11. The Farmer's Son Becomes a Hunter
12. Three Brothers and the Pot of Porridge
13. How the Chipmunk Got Stripes
14. Keegbo Keegba and Spirits
15. A Bird Steals Iyawo's Baby
16. Two Sisters and an Old Man
17. How Olomuroro Made Children Thin
18. The Stolen Soup Aroma
19. One Man and His Precious Cow
20. Grasshopper and the Toad
21. The Story of a Tadpole
22. The Wise Dog
23. Why the Hawk Never Steals
24. The Bull and the Fly
25. The Leopard and the Hedgehog
26. The Hen and the Hawk
27. The Elephant and the Cock
28. The Story of the Stranger and the Traveler
29. Taking a Sacrifice to Heaven
30. Concerning the Eagas and Their Young

List of Tales of “Folktales of Nigeria-2”

1. Kin Kin and the Cat
2. The Funeral of the Forest King
3. The Funeral of Hyena's Mother
4. Olobun's Sacrifice
5. The Hunter and His Magic Flute
6. Tintinyin and the Unknown King of the Spirit World
7. The Boy and the Magical Yam
8. An Orphan Boy and His Magical Twigs
9. Motinu and the Monkey
10. The Beautiful Girl and the Fish
11. A Hunter and a Hind
12. Oni and the Big Bird
13. Olusegbe
14. The Twins

Books on African Folk Tales Available in Hindi
By Sushma Gupta

Desh Videsh Ki Lok Kathayen Series

1. Africa Ki Lok Kathayen. 19 tales. 170 p
2. Dakshin Africa Ki Lok Kathayen. 28 tales. 172 p
3. Africa Se Kachhua Aayaa-1. 17 tales. 132 p.
4. Africa Se Kachhua Aayaa-2. 21 tales. 158 p.
5. Anansi Makada Africa Mein-2. 24 tales. 228 p
6. Anansi Makada Duniyan Mein. 33 tales. 210 p
7. Chalak Khargosh Africa Mein. 23 tales. 226 p.
8. Ethiopia Ki Lok Kathayen-1. 26 tales. 126p – Published
9. Ethiopia Ki Lok kathayen-2. 19 tales. 92p - Published
10. Ethiopia Ki Lok Kathayen-3. (47 tales/204p)
11. Mishra Ki Lok Kathayen. (13 tales/180p)
12. Nigeria Ki Lok Kathayen-1. (30 tales/184p)
13. Nigeria Ki Lok Kathayen-2. (15 tales/164p)

Lok Kathaon Ki African Classsic Pustaken Series

No 1. Zanzibar Ki Lok Kathayen. By George W Bateman. 1901. 10 tales. 170 p.

No 7. Nelson Mandela Ki Priya Africa Ki Lok Kathayen. 2002. 32 tales.

No 8. Chaudah Sau Kaudiyan…. By Fuja Abayomi. 1962. 31 tales.

No 12. Africa Ki Lok Kathayen. By Alessandro Ceni. 1998. 18 tales

No 13. Lavaris Ladki Aur Doosari Kahaniyan. By Buchi Offodile. 2001. 41 tales.

No 14. Gaaya Ki Poonchh Ka Chanwar…. By Harold Courlander and George Herzog. 1947. 17 tales.

No 15. Dakshinee Nigeria Ki Lok Kathayen. 1910. 40 tales.

No 20. Pashchimee Nigeria Ki Lok Kathayen. By William J Barker and Cecilia Sinclair. 1917. 35 tales.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। उसके बाद **1976** में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस कर के एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात **1995** में यू ऐस ए से फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स कर के **4** साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। सन **2022** तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है।

आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से ये लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचायी जा सकेंगी।

विंडसर, कैनेडा
2022